फणि मजुमदार

बोर्नियो के नरमुंड शिकारी

अल्प मूल्य पुस्तक योजना

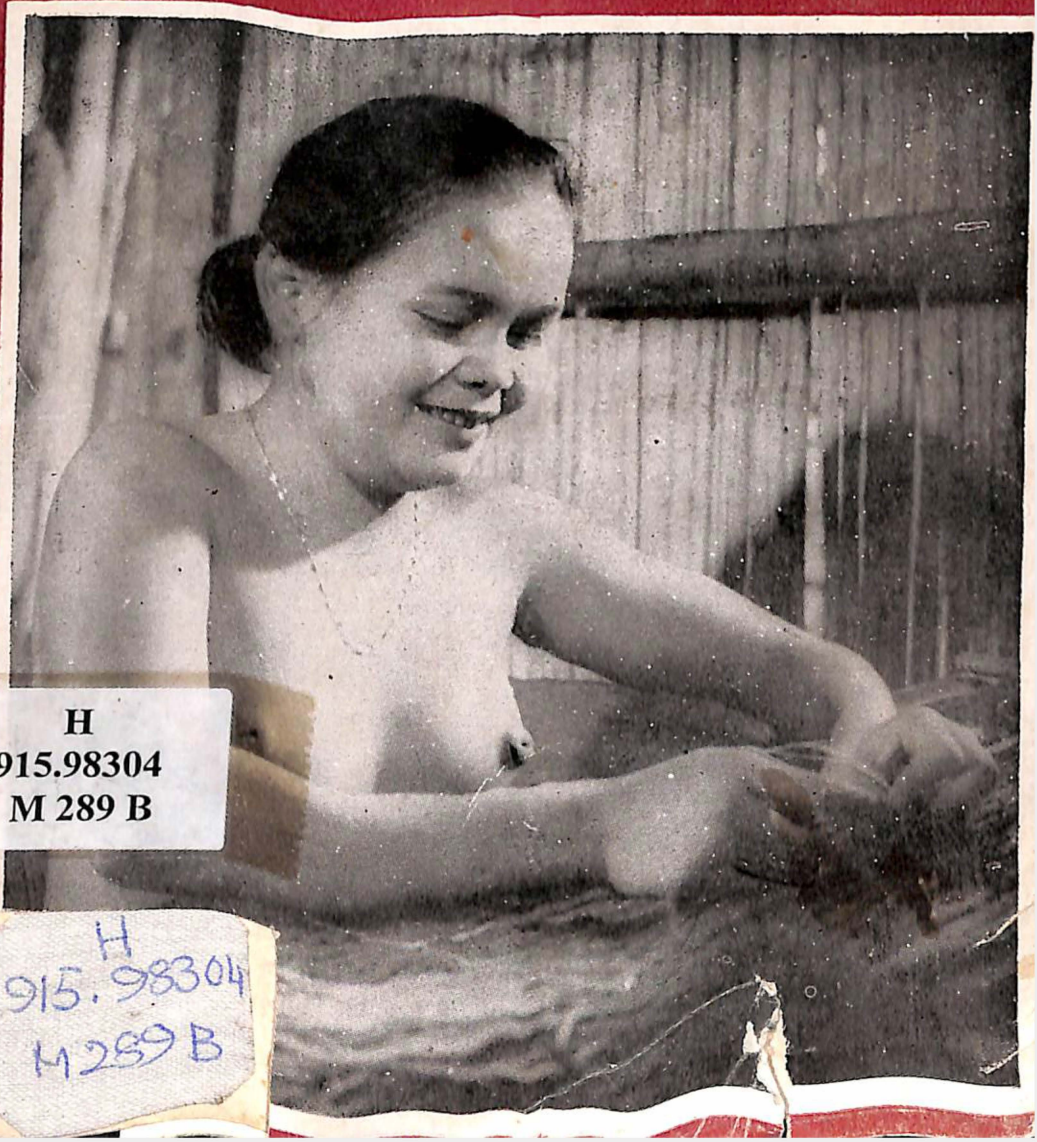

H
915.98304
M 289 B

H
915.98304
M289B

बोर्नियो के नरमुंड शिकारी

फणि मजूमदार

Sambhavna Prakashan
Hapur

संभावना प्रकाशन रेवती कुंज हापुड़-245101

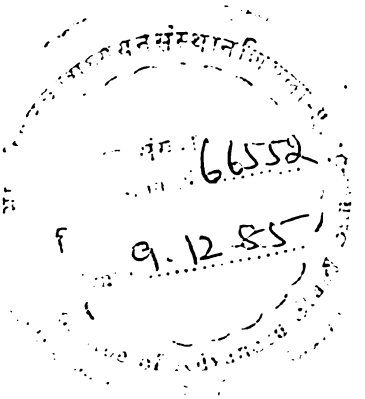

66552
9.12.85
915.98304
M289B
Library IIAS, Shimla
H 915.98304 M 289 B
00066552

हिन्दी अनुवाद : नूतन प्रेमाणी
बोर्निओ के नरमुंड शिकारी (यात्रा संस्मरण) / © फणि मजूमदार एवं नूतन प्रेमाणी/आवरण : करुणा निधान/प्रकाशक : संभावना प्रकाशन, रेवती कुंज, हापुड़-245101
मूल्य : 25.00
प्रथम संस्करण : 1983
मुद्रक : सोहन प्रिंटर्स, शाहदरा, दिल्ली-32

BORNIO KE NARMUND SHIKARI (Travelogue)
By Phani Majumdar
First Edition : 1983
Price : 25.00

फिल्म निर्देशक फणि मजूमदार ने बोर्नियो के नरमुंड शिकारी कबीलों के बीच रहकर अंग्रेजी और मलय भाषाओं में एक फिल्म बनायी थी—'लांग हाउस'।

उस समय के रोमांचकारी अनुभवों को फणि मजूमदार ने अंग्रेजी में लिपिवद्ध किया है।

प्रस्तुत पुस्तक उनकी अंग्रेजी में अप्रकाशित पाण्डुलिपि का हिन्दी अनुवाद है।

बोर्नियो के नरमुंड शिकारी

फणि मजूमदार : एक समर्पित व्यक्तित्व

फणि मजूमदार का जन्म 28 दिसम्बर 1912 को फरीदपुर ग्राम में हुआ था। यह स्थान अब बंगिय बाँग्लादेश में है। पालन-पोषण रंगपुर में हुआ जहाँ पिता स्वर्गीय शीतलचन्द्र मजूमदार इंग्लिश हाई स्कूल में हेड मास्टर थे। फणिदा ने रंगपुर कारमाइकल कॉलेज में शिक्षा प्राप्त की। यह कॉलेज उन दिनों क्रांतिकारी गतिविधियों का केन्द्र था। फणि दा ने 1930 में इण्टरमीडिएट आर्ट्स की परीक्षा पास की। 1931 में वे प्रसिद्ध निर्माता निर्देशक प्रथमेशचन्द्र बरुआ के सहायक हो गए। 1932 में न्यू थियेटर्स में शामिल हो गए। बरुआ ने न्यू थियेटर्स में कई बहुत ही महत्वपूर्ण बंगला और हिन्दी फिल्मों का निर्माण किया, जैसे 'अशोक', 'देवदास', 'गृहदाह', 'माया', 'मुक्ति' आदि। फणि दा इन सभी फिल्मों के लेखन और निर्देशन में बरुआ के प्रथम सहायक रहे।

इस बीच निर्देशक प्रफुल्लराय ने दो फिल्में बनायीं, 'अभागिन' और 'अभिज्ञान'। दोनों की स्क्रिप्ट फणिदा ने लिखी थी। इसके बाद वह समय आया जब फणि दा ने खुद निर्देशन किया। उन्होंने 1937 में न्यू थियेटर्स के लिए दो फिल्में लिखीं और निर्देशित की—'स्ट्रीट सिंगर' और 'साथी'। दोनों ही फिल्में बहुत सफल रहीं। इसी कम्पनी के लिए उन्होंने 'कपालकुण्डला' और 'डॉक्टर' नाम की दो और फिल्में लिखीं और निर्देशित कीं।

1941 में फणि दा बम्बई आ गए। यहाँ उन्होंने करीब बीस फिल्मों का निर्माण और निर्देशन किया। उनकी उन दिनों की फिल्म 'दासी' बहुत ही महत्वपूर्ण थी। न केवल फिल्म को पुरस्कार प्राप्त हुआ, बल्कि फिल्म के नायक स्वर्गीय पृथ्वीराज कपूर को भी पुरस्कृत किया गया। इस दौरान फणि दा ने एक नये किस्म की फिल्म 'आन्दोलन' का निर्माण और निर्देशन किया। 'आंदोलन' में भारत की आज़ादी की लड़ाई का इतिहास दिखाया गया था। इसकी शुरूआत वैदिक काल से की गई थी। फणि दा की चार महत्वपूर्ण फिल्में राष्ट्रीय फिल्म संग्रहालय में सुरक्षित रखी गई हैं। ये फिल्में हैं—'स्ट्रीट सिंगर','साथी', 'डॉक्टर' और 'आंदोलन'।

1955 में शॉ ब्रदर्स के निमन्त्रण पर सिंगापुर चले गए। वहाँ चार साल रह कर मलय, चीनी और अँग्रेज़ी भाषाओं में ग्यारह कथा-चित्रों का लेखन और

निर्देशन किया। इनमें से 'हांग तुआह' और 'अनकू सज़ाली' नाम की दो फिल्मों को दक्षिण पूर्व एशिया के फिल्म उत्सव में कई पुरस्कारों से पुरस्कृत किया गया। 'लाँग हाउस' अंग्रेज़ी और मलय दोनों भाषाओं में बनाई गयी दुनिया की वह पहली फिल्म है जो बोर्निओ के सबसे खतरनाक नरमुण्ड शिकारियों के जीवन का चित्रण करती है। प्रस्तुत पुस्तक इसी फिल्म के निर्माण से सम्बन्धित फणि दा के अनुभवों की कहानी है।

1951 में फणि दा भारत लौट आए। यहाँ उन्होंने 'आरती' का निर्देशन किया। 'आरती' ने रजत जयंती मनाई। एडिनबरो फिल्म उत्सव में भी उसे शामिल किया गया। इसके बाद उन्होंने 'ऊँचे लोग' का निर्देशन किया। 'ऊँचे लोग' को भी राष्ट्रीय पुरस्कार से सम्मानित किया गया। फणि दा ने इस समय अपनी खुद की निर्माण संस्था का आरम्भ किया और 'आकाशदीप' फिल्म बनाई। एक और फिल्म 'सावित्री' का लेखन निर्देशन भी किया। महर्षि अरविंद के जीवन पर तीन वृत्त-चित्रों का भी निर्माण किया।

फणि दा ने चिल्ड्रेंस फिल्म सोसाइटी के लिए कई बाल चित्र लिखे और निर्देशित किए जिन्हें राष्ट्रीय पुरस्कारों से सम्मानित किया गया।

—जगदम्बाप्रसाद दीक्षित

"तावेह तुआन !" ये पेंघुलु या मुखिया के स्वागत के शब्द थे। इस समय हमारी नाव सुंघाई अमांग के लट्ठों के बने हुए घर के सामने रुक गई थी।

"तावेह !" इबान योद्धाओं की ज़ोरदार आवाज़ें गूँज उठीं। इस समय हम रपटीले फिसलन भरे तट पर कदम रख रहे थे। पेड़ के तने की सीढ़ी बनाई गई थी। यह भी फिसलन से भरी हुई थी। इसे चढ़ते समय हमें डर लग रहा था। हमें डरता देखकर आसपास खड़ी हुई युवतियाँ दबी हुई-सी खिलखिल कर रही थीं। इस तरह हमने लट्ठों के उस घर में कदम रखा, कुछ इस तरह जैसे हमने पाँच सौ साल पहले के काल में कदम रखा हो।

लेकिन मैं शुरू से ही शुरू करता हूँ।

कमरे में अँधेरा था। मूवीओला* के शीशपट पर खूबसूरत युवा ज़ैतून अपनी लोचदार भावुक आवाज़ में गा रही थी—"मेनानतिकान मासाहदान हरियान" (दिनों-महीनों तक इंतज़ार)। मेमनों-भेड़ों का उसका रेवड़ नारियल के बागान में चरता हुआ दिखाई दे रहा था। अपने सबसे प्यारे मेमने को गोद में लिए एक पेड़ के सहारे खड़ी वह अपने प्रेमी का इंतज़ार कर रही थी। उसकी आँखें गुज़रती हुई नावों और नदी की हर चीज़ देख लेना चाहती थीं, शायद उसे अपने प्रेमी की एक झलक मिल जाए।

गीत खत्म हुआ। उसकी आँखों में आँसू थे। तब तक हमारी आँखें भी गीली हो चुकी थीं। रोशनी हुई। एडीटर ने हमारी तरफ देखा। मैं मुस्कराया। उसने दृश्य का संकलन खूबसूरती से किया था। मैंने उससे ऐसा ही कह दिया। रील को मूवीओला पर देखकर ही मैं भावुक हो उठा था।

जैसे ही हम उस छोटे मूवीओला कक्ष से बाहर निकले, शॉज़ स्टुडियो, सिंगापुर, के प्रबन्धक श्री क्वेक वहाँ आए। उन्होंने कहा कि मालिक श्री सुन सुन शॉ मुझसे फोन पर बात करना चाहते हैं।

"मजूमदार साहब ! बहुत व्यस्त हैं ?" शॉ ने पूछा।

मैंने उन्हें बताया कि 1957 के दक्षिण पूर्व एशिया फिल्म महोत्सव में दिखाई

---

* मूवीओला—फिल्म देखने की मशीन।

जाने वाली अपनी फिल्म 'अनक्कू सज़ाली' के संकलन और सब-टाइटिल कार्य का उस समय मैं निरीक्षण कर रहा था।

शॉ साहब ने मुझसे प्रार्थना की कि फिलहाल यह काम मैं अपने सहायक को सौंप दूँ क्योंकि वे इस समय मुझसे कोई बहुत ज़रूरी बात करना चाहते हैं।

मैं फौरन उनके मुख्य कार्यालय में पहुँचा। जैसे ही मैं उनकी सेक्रेटरी के वातानुकूलित कमरे में दाखिल हुआ, उसने मुस्कराकर मुझे सूचित किया कि शॉ साहब मेरा इंतजार कर रहे हैं। मैं अन्दर गया। शॉ साहब ने मुस्कराकर मेरा स्वागत किया और मुझसे बैठने के लिए कहा।

"आपको मेरी यह नई मेज़ कैसी लग रही है?" मेज़ खूबसूरत थी। मैंने उसकी तारीफ की, लेकिन मन ही मन मैं अंदाज़ लगा रहा था कि आखिर इनके मन में है क्या! मेज़ की तारीफ कराने के लिए तो निश्चय ही उन्होंने मुझे स्टुडियो में बुलाया नहीं था।

इस समय शॉ साहब मेज़ पर आगे की तरफ झुक गए और अपने अनोखे दोस्ती भरे अंदाज़ में उन्होंने कहा, "बहुत दिनों से आप सिंगापुर से बाहर नहीं गए, हैं न?"

मैंने स्वीकार किया तो उन्होंने कहा, "एक चक्कर लगाते क्यों नहीं?"

मैं अभी तक अटकलें लगा रहा था कि शॉ ने कहा, "याद है आपने एक बार मुझे बताया था कि ब्रिटिश क्राउन कॉलोनी बोर्नियो के जंगलों में रहने वाले नरमुण्ड शिकारी 'इबंस' लोगों के जीवन पर बहुत अच्छी फिल्म बन सकती है? ऐसी फिल्म की संभावनाओं के बारे में आप एक जाँच-यात्रा क्यों नहीं कर आते?"

हम लोगों ने इस योजना पर चर्चा की। इसके अनुसार पूरी रंगीन फिल्म हमें वहीं 'लोकेशन' पर जाकर बनानी थी। इन नरमुण्ड शिकारियों को फिल्म का पात्र बनना था। फिल्म में इबान कबीले के लोगों के रीति-रिवाज़ों और आदतों के चित्रण पर ज़ोर दिया जाना था। यह कहना ज़रूरी है कि यह कबीला दुनिया के भयानकतम नरमुण्ड शिकारियों में से है। यह प्रस्ताव सुनकर मैं एकदम उत्साहित हो उठा। शॉ साहब ने मुस्कराकर कहा, "मुझे मालूम था कि यह कार्य आप पसंद करेंगे!"

इसके बाद उन्होंने मुझे बताया कि मेरा वीसा तैयार हो गया है और टिकिट खरीद लिया गया है। बोर्नियो में उनके प्रबन्धक श्री चिन को इस बात की हिदायत दी जा चुकी है कि वे मुझे कुचिंग में मिलें और उसी हवाई जहाज़ से मेरे साथ सीबू जाएँ। यह सब समझने के बाद अन्त में शॉ ने मुझे अखबार की कतरनों की एक फाइल दी। इनमें मालक मैकडोनाल्ड के बोर्नियो पर लिखे गए लेखों का संकलन था। श्री मैकडोनल्ड मलय और ब्रिटिश बोर्नियो के गवर्नर जनरल

थे। बोर्नियो के सम्बन्ध में मेरे पास यह एकमात्र उपलब्ध सामग्री थी और इसका अध्ययन करने के लिए मेरे पास सिर्फ दो दिन का समय था। शॉ साहब को धन्यवाद देकर मैं उनके दफ्तर से रवाना हो गया।

पहले लेख के पहले ही पैराग्राफ ने मेरा ध्यान आकर्षित कर लिया। श्री मालकम मैकडोनल्ड ने लिखा था, "बोर्नियो भूमध्य रेखा पर स्थित है। यह वह देश है जहाँ पुरुष सादे पुरुष हैं, स्त्रियां बिना बनाव-सिंगार की स्वाभाविक स्त्रियाँ हैं, बंदर मुक्त विचरण करने वाले बंदर हैं, आर्किड फूल खिलते हुए फूल हैं। सभी प्राणी अपने सहज स्वाभाविक अविकृत रूप में रहते हैं।"

मेरा टिकट 12 अक्टूबर के लिए आरक्षित था, लेकिन छात्र आंदोलन के कारण 11 अक्टूबर को सिंगापुर में कर्फ्यू लगा दिया गया था। हवाई जहाज़ को सुबह सात बजे रवाना होना था, लेकिन कर्फ्यू के कारण हवाई अड्डे से उड़ान की कोई निश्चित सूचना प्राप्त नहीं हो सकी।

सुबह रेडियो पर खबर आई कि कर्फ्यू आठ से दस के बीच हटा लिया गया है। तुरन्त हवाई अड्डे से फोन आया कि हवाई जहाज़ नौ बजे उड़ेगा।

जल्दी-जल्दी मैंने अपना सामान बाँधा। मुझे खुद ही सामान बाँधना पड़ा। क्योंकि मेरी पत्नी ने पूर्ण असहयोग की घोषणा कर दी थी। उसे बोर्नियो यात्रा की मुश्किलों के बारे में पता चल गया था। नरमुण्ड शिकारियों के साथ लट्ठे के बने उनके घरों में बितायी जानेवाली जोखिम भरी ज़िन्दगी के बारे में भी उसने सुन रखा था। स्वाभाविक ही था कि मेरा वहाँ जाना उसे पसंद नहीं था।

हवाई जहाज़ दस बजे उड़ा और दोपहर के एक बजे कुचिंग पहुँच गया। कुचिंग सारावाक की राजधानी है। कुचिंग का मूल नाम सारावाक ही था। वर्तमान नाम कस्बे के बीच से बहने वाले एक छोटे-से झरने से लिया गया है।

सारवाक बोर्नियो का एक छोटा राज्य है। इसके तट दक्षिण चीन सागर के तट हैं। पुराने समय में यह सागर समुद्री डाकुओं के लिए बदनाम था। इन डाकुओं की नावें हलकी-फुलकी होती थीं और एक पूरा बेड़ा बनाकर काम करती थीं। इंसानी शैतान इन नावों को खेते थे और इनकी वजह से सारावाक का समुद्र-तट एक खतरनाक तट के रूप में जाना जाता था।

यह सौ साल पहले की बात थी। लेकिन जो आँखें भौतिक आकृतियों के परे भी कुछ देख सकती हैं उन्हें एक अजीब-सा अहसास होता है। जब हवाएँ फुस-फुसाकर और ज्वार के थपेड़े हलका गर्जन करते हुए गर्म शामों का अहसास देते हैं तो लगता है कि धूप और छाया में उन दिनों की प्रेतात्माएँ अब भी भटक रही हैं।

अब सारावाक एक शांतिपूर्ण स्थान है। इसकी तट रेखा पर लम्बी सफेद चौपाटियों की किनारियाँ फैली हुई हैं। जब मानसून की तेज़ हवाएँ चलती हैं तो

उन खूबसूरत किनारों पर दैत्याकार लहरों का गर्जन गूंजने लगता है। लेकिन जब मौसम अच्छा होता है तो साफ और नर्म रेत इस तरह फैली होती है मानो मोटर गाड़ियों की दौड़ के लिए कोई पट्टी तैयार की गई है।

अन्दरूनी हिस्सों में सारा देश जंगलों से भरा हुआ है। सिर्फ कुछ छोटे-छोटे टुकड़ों के जंगलों को साफ कर उन्हें खेती के योग्य बना लिया गया है। देखकर ऐसा लगता है जैसे किसी गर्म घर का यह एक खूबसूरत विस्तार है। इसका कारण यह है कि जलवायु की दृष्टि से सारावाक में स्थायी तौर पर ग्रीष्म ऋतु होती है। यहाँ का दृश्य हमेशा हरा-भरा होता है। यह देश फूलों का नहीं, पत्तों का स्वर्ग है। लेकिन जहाँ-जहाँ छायादार स्थान होते हैं, वहाँ फूलों के खज़ाने भी होते हैं। पेड़ों के तनों से लटके हुए ये खूबसूरत आकर्षक फूल हवा में झूमते रहते हैं। कहीं-कहीं तो ये आर्किड बहुत ही बड़ी तादाद में फूलते हुए दिखाई देते हैं। इनकी सैकड़ों किस्में हैं जो सिर्फ बोर्नियो में पाई जाती हैं। इनमें से कुछ के आकार बहुत ही सुडौल और रंग बहुत ही चटकीले होते हैं।

इस समृद्ध वन-सम्पदा का कारण है भारी वर्षा और तेज़ धूप। वर्ष भर रुक-रुककर होनेवाली मूसलाधार वर्षा के कारण अनेक नदियाँ हैं और उनमें हमेशा पानी होता है। जंगल में अगर कोई दाखिल होता है तो ये नदियाँ ही। सारवाक में सड़कें नहीं हैं। इस प्रदेश में यात्रा करने के लिए ये नदियाँ ही महान् राजपथ हैंऔर छोटी-छोटी गलियाँ भी हैं।

प्राणियों की बहुतायत है। जंगल के कुछ हिस्से रेगिस्तान की तरह खाली हैं, लेकिन बाकी हिस्से किसी रोचक प्राणी-उद्यान की तरह अनेकानेक प्राणियों से भरे हुए हैं। दिन के समय अधिक खुले स्थानों में रंग-बिरंगी खूबसूरत तितलियों का नज़ारा देखकर आँखों में खुशी की चमक आ जाती है। रात में हर जगह कीड़े-मकोड़ों के वाद्य-यंत्र कानों का मनोरंजन करते हैं। कई किस्म के छोटे रोयेंदार प्राणी हैं जिन्होंने इंसान से पहले ही उड़ना शुरू कर दिया था। सारावाक में उड़न गिलहरियाँ हैं, उड़ने वाली लोमड़ियाँ, उड़ने वाली छिपकलियाँ हैं और उड़ने वाले मेंढक भी। दूसरे प्राणी हैं जो पेड़ों के ऊपर अपनी कलाबाज़ियाँ दिखाया करते हैं। बंदर हर जगह दिखाई देते हैं···एक डाली से दूसरी डाली पर कूदते और झूलते हुए···जैसे जिमनेस्टों की कोई टोली अपने करतब दिखा रही हो।

वानरों की नस्ल में एक पिशाच वानर है जो सिर्फ बोर्नियो और सुमात्रा में पाया जाता है—'ओरांग उटान' या 'जंगल का आदमी' इसके पैर छोटे होते हैं, बाँहें लम्बी होती हैं और इसके मज़बूत जिस्म पर पकी हुई ईंट के रंग के लाल रोएं होते हैं। जब आप इन 'जंगल के आदमियों' से मिलते हैं तो वे आपकी तरफ उदास आँखों से देखते हैं। लगता है जैसे इन्होंने अभी-अभी डारविन की पुस्तक 'ओरिजिन ऑफ स्पिसीज़' ('नस्लों का मूल') पढ़ी है और

इन्हें मालूम हो गया है कि अपनी ही नस्ल के कुछ लोगों की तुलना में ये कितने पिछड़ गए हैं।

जंगल में कई मज़ेदार जानवर रहते हैं, जैसे जंगली सूअर, चूहा-हरिण, चीता-बिल्ली, भालू, अजगर, गेंडे वगैरा। पास के उत्तर बोर्निओ के एक छोटे से इलाके में हाथी भी घूमते रहते हैं। ये यहाँ के मूल निवासी नहीं हैं, पीढ़ियों पहले यहाँ लाये गए थे। सुलू के सुलतान ने अपने साथी ब्रुनेई के सुलतान को ये हाथी एक शानदार भट के रूप में दिये थे। पहले तो ये हाथी अपने नये घरों में रहते थे, लेकिन बहुत जल्द दरबारी जीवन की नकली चमक-दमक से ये ऊब गए और जंगल की ओर भाग निकले। अब वे यहीं सहज स्वाभाविक और सुखी जीवन बिता रहे हैं।

नदी के ऊपरी हिस्से में मगरमच्छ घूमते रहते हैं। तट के पास के द्वीपों में कछुए अपने बच्चे पैदा करते हैं। मादा कछुआ बीसियों अंडे एक साथ देती है। ऐसा लगता है जैसे पिंगपांग की इस्तेमाल की गयी गेंदें पड़ी हुई हैं।

पक्षियों की भी बहुतायत है। बड़ी नस्ल के पक्षियों में विशाल हॉर्नबिल होता है और कुछ छोटी किस्म की नस्लों में मकड़-खौना या स्पाइडर हंटर। मकड़-खौना एक खूबसूरत पक्षी है। इसकी छोटी-सी देह हरे रंग की होती है और इसकी लम्बी चोंच नीचे की तरफ मुड़ी रहती है। स्थानीय लोगों के जीवन में मकड़-खौना एक महत्वपूर्ण भूमिका अदा करता है। इसकी गतिविधियों के आधार पर शकुन-अपशकुन का विचार किया जाता है जिसके आधार पर पैगन या कबीला समाज के लोग अपना आचरण निर्धारित करते हैं।

सारावाक में कई नस्लों के लोग रहते हैं। इनमें आदिम कबीलों के लोग हैं जो अधिकांश पैगन हैं। मलय लोग हैं जो सिर्फ मुस्लिम हैं। चीनी हैं जो बौद्ध हैं। योरपीय लोग ईसाई हैं। भारतीय हैं जो अधिकांश हिन्दू हैं। मेलानू जाति के लोग भी हैं जो पैगन, ईसाई और मुस्लिम धर्मों का सम्मिश्रण हैं। सारावाक की कुल आबादी 6 लाख है। आधे से ज्यादा लोग पैगन कबीलों के हैं। 20 प्रतिशत से कम मलय हैं। 25 प्रतिशत चीनी और मेलानू। शेष में अन्य जातियाँ आ जाती हैं।

कोई नहीं जानता कि इंसान ने बोर्निओ में रहना कब शुरू किया। यह भी नहीं मालूम कि यहाँ के आदिम मनुष्य किस प्रकार के लोग थे। इस समय जो निवासी हैं उनके पूर्वज पिछली कई शताब्दियों में रह-रहकर होने वाले निष्क्रमणों के माध्यम से यहाँ आए। नवागंतुकों का आक्रमण समुद्र की ओर से हुआ। पहले ये लोग तट पर बस गए, इसके बाद अंदरूनी इलाकों में घुस गए। आमतौर पर ऐसा हुआ है कि पहले के आये हुए अधिक असभ्य निवासी नवागंतुकों के आने पर नदियों के ऊपरी इलाकों की ओर चले गए। यही वजह है कि सबसे

ज्यादा पिछड़े हुए लोग दूर दराज़ के अंदरूनी क्षेत्रों में मिलते हैं।

गहरे जंगलों के ये निवासी 'असभ्य' पैगन हैं। इन्होंने अपने आपको विभिन्न आदिम जातीय समुदायों के साथ जोड़ दिया है और ये कई नस्ली गुटों में विभाजित हो गए हैं। इनके कई नाम हैं जैसे पुनन, केन्याह, इबान, भूमि दायक, मुरुत आदि। ये बोर्नियो के असली वनवासी हैं।

किसी भी कबीले कोई लिखित इतिहास नहीं हैं। निष्क्रमण के अलग-अलग दौरों में वे बोर्नियो आए और अपने साथ लाए अपने-अपने सामाजिक संघटन, रीति-रिवाज और अपनी भाषाएँ। इसके बावजूद कि वे उन्हीं नदियों के किनारों पर सदियों से रहते आए हैं, उन्होंने किसी विशेष भाषा को अपनी सामान्य भाषा नहीं बनाया है। वे बहुत सी भाषाएं बोलते हैं। इनमें परस्पर कोई संबंध नहीं है। नदी के ऊपरी या निचले भागों में रहने वाले पड़ोसी कबीले एक-दूसरे की भाषा नहीं समझते।

सारावाक के मानव-समाज के बारे में सबसे दिलचस्प बात यह है कि इसका अधिकांश सदियों से वैसा का वैसा है। पहले के आए हुए लोग उन्हीं स्थितियों में रह रहे हैं जिनमें बहुत बाद के आए हुए लोग। सचाई तो यह है कि इनमें के सरलतम लोग इतिहास के प्रारंभिक काल के लोगों की तरह नहीं है, वे इतिहास के प्रारंभिक काल के लोग ही हैं यानी आदिम मनुष्य के एकदम सही उदाहरण। सारावाक किसी भी नृतत्वशास्त्री का स्वप्न-स्थल है।

पुराने दिनों में नरमुंडों का आखेट इनका प्रिय खेल था। नरमुंडों को इकट्ठा करने के प्रति इनका उत्साह विकसित देशों के उन व्यक्तियों के उत्साह की तरह है जो पशुओं के मुंडों को या पशुओं के मसाले से भरे हुए शरीरों को इकट्ठा करते हैं। इस खेल में इन लोगों को अपनी पत्नियों और प्रियतमाओं से हार्दिक प्रोत्साहन मिलता है। कहा जाता है कि इबान कबीले में नरमुंड प्राप्त करने को पौरुष की अनिवार्य निशानी माना जाता है। इस कबीले की कोई कुमारिका किसी युवक के प्रस्ताव को तब तक स्वीकार नहीं करती जब तक कि उस युवक ने इस तरह अपना पौरुष सिद्ध न कर दिया हो।

बोर्नियो के मूल निवासियों ने नरमुंड आखेट की यह आदत कैसे प्राप्त की, इस संबंध में अलग-अलग रायें हैं। एक मत के अनुसार इसका कुछ संबंध मुखिया की मृत्यु के बाद मातम की अवधि के समाप्त हो जाने से है। मृतात्मा को दूसरी दुनिया में तब तक शांति नहीं मिल सकती जब तक कि उसकी सेवा के लिए कोई सेवक भी मार न दिया जाए। इसीलिए किसी की कुरबानी दी जाती थी और उसका सिर मृत मुखिया की कब्र के पास रख दिया जाता था जिससे यह साबित होता था कि अंतिम क्रिया पूरी कर दी गयी है।

सारावाक में नरमुंड-शिकार की प्रथाएँ इस तरह शुरू हुईं हों या नहीं, यह

तय है कि मनुष्य की कुछ बहुत ही पाशविक वृत्तियाँ बोर्नियो के बहुत से कबीलों का प्रधान चरित्र बन गयी हैं। उन पर रक्त-पिपासा का नशा सा छाया हुआ था और हत्याकांडों के प्रति हिचकिचाहट उनके मन में या तो बिल्कुल नहीं होती थी या फिर बहुत कम होती थी। मानव इतिहास का यह एक दुःखद अध्याय था।

इन तमाम कबीलों में इबान कबीला अभी कुछ दिनों तक बोर्नियो का (शायद सारे संसार का) भयानकतम नरमुंड शिकारी कबीला था। नरमुंड शिकार के अभियानों का वीरतापूर्ण या सम्माननीय होना ज़रूरी नहीं था। चालाकी या मक्कारी से शिकार करना उतना ही प्रशंसनीय माना जाता था जितना बहादुरी से। विरोधी पर पीछे से हमला करना बेहतर माना जाता था क्योंकि सामने से किए गए हमले की तुलना में इसमें सफलता की संभावना अधिक थी। किसी असमर्थ बूढ़े आदमी का सिर उतना ही विजय सूचक माना जाता था। जितना किसी शक्तिशाली बहादुर युवा का।

2

बोर्नियो पर ब्रुनेई के सुलतान का शासन था। हर ज़िले का एक गवर्नर होता था जिसे सुलतान खुद चुनता था। अठारहवीं शताब्दी की शुरूआत में सल्तनत की हालत खराब हो गयी थी। गवर्नर लोग लापरवाह हो गए थे और फिलीपीन के समुद्री डाकू तटवर्ती गाँवों पर हमला कर स्त्री-पुरुषों को उठा ले जाते थे फिर गुलाम बनाकर बेच देते थे। हालात और भी खराब इसलिए हो गए कि गवर्नर लोग समुद्री डाकुओं से मिल गए थे जिसकी वजह से लोगों में असंतोष की भावनाएँ घर करने लगीं और उन्होंने सरकार के खिलाफ विद्रोह कर दिया। यह विद्रोह चलता रहा, फलस्वरूप अधिकांश राज्य पर सारावाक गवर्नर की कोई सत्ता नहीं रही।

इस स्थिति में एक परिवर्तन तब हुआ जब 1839 की गरमियों में जेम्स ब्रूक नाम का एक अंग्रेज़ नौजवान यों ही अपना जहाज़ लेकर वहाँ आ पहुँचा। भाग्य के एक विचित्र खेल के कारण 27 वर्ष उम्र में वह भटकने लगा था जेम्स का पिता ईस्ट इंडिया कंपनी में सरकारी अफसर था। अपनी किशोरावस्था में ही जेम्स ने कंपनी की फौज़ में कमिशन प्राप्त कर लिया था। इसके कुछ ही वर्षों बाद बर्मा युद्ध की एक लड़ाई में वह बुरी तरह घायल हो गया। जब वह इंग्लैंड लौटा तो खबरों में उसका उल्लेख था और उसके जिस्म में बंदूक की गोली का घाव। अब वह सिपाही नहीं बन सकता था। आरामतलब साहब बनना उसे पसंद नहीं था। उसने एक नौका खरीदी, कुछ प्रशिक्षित कर्मचारियों का चुनाव किया और अपने स्वप्नों के द्वीप की तरफ रवाना हो गया। उसके स्वप्नों का द्वीप था मसालों का द्वीप यानी मलय आर्कीपेलागो। उसके मन में कहीं यह इच्छा थी कि वह किसी तरह मानवता की कोई सेवा कर सके।

कई महीने बाद वह सिंगापुर से जा लगा। सिंगापुर उस समय नयी-नयी ब्रिटिश वस्ती बना था। सिंगापुर के मिस्टर रैफल्स ने जेम्स को एक काम सौंपा। यह काम था कुचिंग के राजा मुदा हाशिम को धन्यवाद देने का। अंग्रेज़ों का एक जहाज़ डूब गया था और राजा ने इस जहाज़ के अंग्रेज़ों के प्रति विशेष दयालुता दिखाई थी।

15 अगस्त 1839 को जेम्स ब्रूक की नाव 'रायलिस्ट' ने पत्तों की कुछ

झोपड़ियों के सामने समुद्र में लंगर डाल दिया। इन झोपड़ियों का नाम था कुचिंग। जेम्स राजा के पास हाजिर हुआ। हाशिम ने जेम्स के साथ कई बातों पर चर्चा की। उनमें एक महत्वपूर्ण मुद्दा था सारावाक के विद्रोहियों द्वारा पैदा की जाने वाली दिक्कतें। जेम्स ने राजा से अनुमति माँगी कि वह विद्रोहग्रस्त क्षेत्रों में यात्रा कर सके। इस यात्रा ने इस देश और इस देश के लोगों के प्रति अधिक जानने की उसकी इच्छा को तीव्र कर दिया। कुचिंग लौटकर उसने हाशिम से दोस्ती कर ली। वहाँ से रवाना होने से पहले उसने वादा किया कि वह लौटकर फिर आएगा।

अगले साल वह वापस आया। विद्रोह अब भी जारी था। राजा मुदा बहुत परेशान हो गया था। उसे लगा कि जब तक विद्रोह खत्म नहीं होता, उसे सारावाक में ही रहना होगा। विद्रोह खत्म होने की कोई संभावना दिखाई नहीं दे रही थी। एक प्रशासक के रूप में उसकी ख्याति को जबरदस्त धक्का लग रहा था। दो सौ मील दूर सुलतान के दरबार में उसके दुश्मन इस बात की परवाह नहीं कर रहे थे कि वह सुलतान का स्पष्ट उत्तराधिकारी है। उसने जेम्स से प्रार्थना की कि विद्रोह का दमन करने में वह उसकी सहायता करे।

ब्रक मान गया। नाविकों का एक छोटा सा दल लेकर वह नदी के ऊपरी हिस्से की ओर गया। वह विद्रोहियों के खिलाफ अभियान में शामिल होना चाहता था। मोरचे पर पहुँचते ही वहाँ की हालत देखकर वह हैरान रह गया। सरकारी सेनाओं के कमांडर लोग जंगल में बने अपने झोपड़ों में आराम से बैठे हुए थे। उन्होंने निश्चय कर लिया था कि दुश्मन के खिलाफ लड़ाई शुरू करने की जोखिम वे नहीं उठाएँगे। ब्रूक ने बहुतेरी कोशिशें कीं कि वे दुश्मन पर हमला करें, लेकिन उसे कोई सफलता नहीं मिली। ब्रूक ने धमकियां दीं, दलीलें दीं, लेकिन कमांडर लोग टस से मस नहीं हुए।

हताश होकर ब्रूक कुचिंग लौट आया। उसने हाशिम से मोरचे की असंभव स्थिति के बारे में सब कुछ बता दिया। उसने यह भी कहा कि अब उसका सारावाक में रहना बेकार है, अगली सुबह ही वह 'रायलिस्ट' पर बैठकर रवाना हो जाना चाहता है।

राजा मुदा हाशिम इस बात का सपना देख रहा था कि वह सुलतान के दरबार में लौटकर अपनी खोयी हुई प्रतिष्ठा फिर प्राप्त कर लेगा। उसे पक्का विश्वास था कि ब्रूक विद्रोहियों को ज़रूर पराजित कर देगा। जब ब्रूक ने सारावाक से चले जाने की बात कही तो वह स्तब्ध रह गया। उसने ब्रूक के सामने एक असाधारण प्रस्ताव रखा। उसने ब्रूक से कहा कि अगर ब्रूक नदी के ऊपरी इलाके पर जाकर स्थानीय फौजों की कमान सम्हाल ले और विद्रोह

समाप्त कर दे तो वह उसे सारावाक का गवर्नर बना देगा और इस प्रांत पर शासन करने के लिए उसे पूरी सत्ता दे देगा।

ब्रूक ने प्रस्ताव अस्वीकार कर दिया क्योंकि उसे लगा कि यह मजबूरी की हालत में किया गया है। प्रस्ताव तो उसने ठुकरा दिया, लेकिन सारावाक समस्याओं में उसकी दिलचस्पी अब ज्यादा गहरी हो गयी। उसे वहाँ के लोग पसंद थे। उसने महसूस किया कि अयोग्य और भ्रष्ट शासन के कारण वहाँ जो अप्रिय स्थिति पैदा हुई है, उसे सुधारा जा सकता है। उसने यह भी महसूस किया कि वह वहाँ के लोगों को न्यायपूर्ण शासन प्रदान कर सकता है और उस देश की स्थितियों में एक नए युग का आरंभ कर सकता है।

ब्रूक ने राजा की बात मान ली। विद्रोहियों के खिलाफ एक नए अभियान का नेतृत्व करने के लिए वह रवाना हो गया। विजयी होकर लौटने पर राजा गवर्नर का पद उसे देने का प्रस्ताव पूरा कर सकता है। ब्रूक के इस फैसले में स्वार्थ नहीं था। उसे शायद इस बात का पूरा भरोसा था कि शांति स्थापित होने पर हाशिम अपना प्रस्ताव पूरा कर देगा। सारावाक का राजा बनने के ख्याल ने उसकी रूमानी कल्पनाओं को ज़रूर शह दी। लेकिन उसके लिए उसकी बुनियादी प्रेरणा थी सारावाक की जनता की सेवा। सारावाक की जनता के सीधे-सादे चरित्र और उनकी भयंकर दुर्दशा ने ब्रूक की भावनाओं को छू लिया था। उसे इस बात का भी ख्याल था कि इंडोनेशिया के डच शासक बोर्नियो में अपने शासन का विस्तार करना चाहते हैं। उसे लगा कि हाशिम का निमंत्रण स्वीकार करना एक देशभक्तिपूर्ण कर्तव्य भी है।

इस उद्देश्य को स्वीकार कर लेने के बाद उसने अपना काम शुरू कर दिया। स्थानीय सिपाहियों की एक मामूली-सी टोली लकर वह नदी के ऊपरी हिस्से के लिए रवाना हो गया। कुछ शक्ति के बल पर और कुछ कूटनीति का सहारा लेकर उसने विद्रोहियों से समर्पण करवा लिया। इसके बाद उसकी खास दिक्कत थी राजा मुदा को इस बात के लिए राज़ी करना कि वह विद्रोही नेताओं को माफ कर दे, क्योंकि बोर्नियो में ऐसे मामलों में परंपरागत दण्ड होता था मुखिया को मार देना और उनकी औरतों व बच्चों को गुलाम बना लेना। माफी का ब्रूक का प्रस्ताव उसके मलय दोस्तों को पागलपन से भरा हुआ लगा, लेकिन जब ब्रूक ने धमकी दी कि वह कुचिंग छोड़कर चला जाएगा, तो उसकी बात मान ली गयी।अब उसने जनता और शासकों के बीच समझौता कराने का काम शुरू कर दिया।

लेकिन अब हाशिम ब्रूक को सारावाक का गवर्नर बनाने में आनाकानी करने लगा। ब्रुनेई के तमाम बुरे शासकों की परम्परा में राजा मुदा सबसे अच्छा था, लेकिन वह कमज़ोर था। अपने अंग्रेज़ मददगार को दिये गये वचन का वह पूरी

तरह पालन करना चाहता था लेकिन उसे डर था कि सुलतान के दरबार में उसके दुश्मन उसके इस कदम की आलोचना करेंगे।

इस समय सारावाक में ब्रूक की ख्याति बहुत ज्यादा फैल चुकी थी और स्थानीय लोग उसे गवर्नर बनाना चाहते थे, लेकिन पुराने कमांडर लोग इसका विरोध कर रहे थे। अंत में बहुत से कुचक्रों और प्रति-कुचक्रों के बाद राजा को यह परिवर्तन करना ही पड़ा। हाशिम ने एक दस्तावेज़ पर हस्ताक्षर किये जिसके अनुसार जेम्स ब्रूक को राजा घोषित कर दिया गया। 24 सितम्बर 1841 को 'स्थान' (महल) में एक रंगीन उत्सव किया और जेम्स ब्रूक को राजा बनाने की रस्म पूरी कर दी गयी।

इस समय ब्रूक सिर्फ एक सामंतीय राजा था और ब्रुनेई के सुलतान के प्रति वफादार था। उसके इलाके का विस्तार सीमित था। वर्तमान सारावाक के सिर्फ उस एक हिस्से पर उसका अधिकार था जो कुचिंग नदी के आस पास था। यह लगभग 3000 वर्गमील का इलाका था जिसमें पानी और जंगल था। लगभग 8000 लोगों की आबादी थी जिसमें मलयों, चीनियों और भूमि-दायकों के छोटे छोटे समूह शामिल थे।

नये राजा के लिए यह एक छोटी शुरूआत थी और उसे इसी से संतुष्ट होना था। उसका उद्देश्य था अपनी जनता को एक न्यायपूर्ण शासन प्रदान करना··· ऐसा शासन जो बोर्नियो भर में सर्वोत्तम हो। उसे कई बाधाओं का सामना करना पड़ा। आंतरिक रूप से उसके इलाके के कई मलय गुट उसके लिए मुश्किलें पैदा कर रहे थे। बाहर से नरमुंड शिकारी और गुलाम जमा करने वाले समुद्री डाकुओं का आतंक था। इन कठिनाइयों के बावजूद ब्रूक ने जुल्म और शोषण को रोकने में सफलता प्राप्त की। स्थानीय निवासियों ने एक ऐसी सुरक्षा और बेहतरी का अनुभव किया जो उनके लिये अपूर्व थी।

इसके बावजूद स्थिति खतरनाक थी। अगर ब्रूक ने अपनी गतिविधियों का क्षेत्र अपने इलाके के सीमांत तक सीमित रखा होता तो सब कुछ कब का खत्म हो गया होता। सीमा-रेखा के उस पार ब्रुनेई के पड़ोस के प्रांतों में सेकारंग नदी के बदनाम इबान लोग रहते थे। एशिया के इस सबसे गर्म इलाके के ये सबसे ज्यादा रक्त-पिपासु समुद्री डाकू थे। ब्रुनेई के स्थानीय गवर्नर इन्हें शह दिया करते थे और हर लूट के बाद लूट का सबसे बड़ा हिस्सा ले लिया करते थे। ये समुद्री डाकू इस बात के आदी हो गये थे कि हमले करें और सिर काटने की मुहिम शुरू कर दें। इन डाकू सरदारों ने महसूस किया कि सारावाक में एक व्यवस्थित शासन की स्थापना से उनके मनमाने जुल्मों के लिए चुनौती पैदा हो गयी है। इस शासन को अव्यवस्थित कर डालने का उन्होंने बीड़ा उठा लिया। जानबूझकर उन्होंने नये-नये हमले किये ताकि नये राजा की प्रजा के हौसले पस्त हो जाएँ और

उसकी सत्ता की प्रतिष्ठा खत्म हो जाए।

अपने दोस्त हाशिम की अनुमति लेकर ब्रूक ने जवाबी हमला किया। अपने शुरू-शुरू के अभियानों में उसे रॉयल नेवी से मदद मिली। एच.एम.एस. डिडो चीन सागर से यहाँ आ नौसैनिकों का एक दल सेकारंग नदी में अंदर तक घुस गया। सबसे आगे वाली नाव में राजा ब्रूक खुद सवार था। इन लोगों ने इबानों के शक्तिशाली अड्डों पर कब्ज़ा कर लिया।

लेकिन कहानी खत्म नहीं हुई। वर्षों तक यह सिलसिला चलता रहा। एक प्रसिद्ध दायक सरदार रनताप ने सदोक नाम के पर्वत पर एक मज़बूत किला बनाया। इस किले पर हमला करना किसी के लिए भी मुश्किल था। नदी के रास्ते इस पर पहुँचना आसान नहीं था, क्योंकि उधर की सारी जगह रपटीली थी। ज़मीन के रास्ते से भी पहुँचना आसान नहीं था क्योंकि चारों तरफ पर्वत और जंगल थे। सदोक की चोटी के पास सीधी चट्टानें हैं जिन पर चढ़ना मुश्किल है। राजा ने रनताप पर चढ़ाई करने के लिए दो दल भेजे, दोनों असफल हो गये। तीसरा दल अपने साथ एक बहुत बड़ी बंदूक ले गया। इसे पहाड़ के ऊपर ले जाया गया। बंदूक को सत्तरह बार दागा गया जिसके कारण किले की बाज़ू की दीवारों में छेद हो गये। रनताप को अपने साथियों के साथ भागना पड़ा। बाद में उसे ज़हर देकर मार दिया गया।

दूसरे देसी सरदारों के खिलाफ भी अभियान चलाये गये। बहुत जल्द स्थानीय लोगों ने राजा को दुशमन मानना बंद कर दिया। वे राजा के दोस्त हो गये। देश में शांति स्थापित करने के काम में वे राजा की मदद करने लगे।

राजा ब्रूक के प्रशासन की प्रगति-शिथिल और कष्टदायक थी, लेकिन ज़रूरी थी। प्रशासन के अंतर्गत रहने वाले स्थानीय लोगों ने उसका मूल्य समझ लिया। ब्रुनेई के अन्य प्रांतों की तुलना में ब्रूक का प्रांत सुख और सुरक्षा का स्वर्ग था। दूसरे प्रांतों में कुशासन और अराजकता का राज था। इन अन्य प्रांतों के निवासियों ने शीघ्र यह मांग की कि उनके इलाकों को वर्तमान गवर्नरों के हाथों से लेकर गोरे राजा के इलाके में शामिल कर दिया जाए। इस तरह ब्रुनेई साम्राज्य के ह्रास और पतन की शुरूआत हुई और इसके साथ ही शुरू हुआ सारावाक राज्य का स्थिर गति से उत्थान।

प्रगति की यह कहानी पचास वर्ष तक चलती रही और प्रगति के कार्यों को कई चरणों में पूरा किया गया। पहले दस वर्ष तक सारावाक के प्रदेश में अन्य इलाकों को शामिल करने का कोई सवाल ही नहीं उठा। इस दौरान ब्रूक अपनी सरकार को मज़बूत करने, सुधार-कार्यों को लागू करने तथा अंदरूनी और बाहरी खतरों से प्रांत को सुरक्षित करने के कार्यों में व्यस्त रहा। इस अवधि में उसने राजा के रूप में अपनी स्थिति को इतना मज़बूत कर लिया कि कोई भी उसे

चुनौती न दे सके। कई साल तक वह सुलतान के जागीरदार के रूप में काम करता रहा। ब्रुनेई के सर्वोच्च शासक के रूप में सुलतान के प्रति वफादार रहा और अपने गवर्नर-पद के लिये सुलतान को 2500 पौंड प्रति वर्ष की रकम देता रहा। 1846 में उसने सुलतान के साथ एक समझौता किया जिसके अनुसार सारावाक की सारी प्रभुसत्ता उसे और उसके उत्तराधिकारियों को सौंप दी गयी।

ब्रूक अब अपने राज्य का संपूर्ण स्वामी हो गया। उसका शासन इतना सफल था कि सारावाक के पड़ोस के इलाकों के निवासियों के समुदाय अपने घरों को छोड़कर सारावाक में बस गये, क्योंकि उनके अपने इलाकों का शासन इतना अच्छा नहीं था। जो आबादी 1840 में सिर्फ 8000 थी, वही दस वर्षों में बढ़कर 50,000 हो गयी।

1852 में पुराने सुलतान की मृत्यु हो गयी। दुर्भाग्यवश सुलतान के भूतपूर्व उत्तराधिकारी राजा मुदा हाशिम इस समय धरती पर नहीं थे। कुछ साल पहले दरबारियों के एक गुट ने इस संभावना को नापसंद करते हुए कि राजा मुदा जैसा सही व्यक्ति सिंहासनासीन हो, एक षडयंत्र रचा था जिसके अनुसार उनकी सत्ता को उखाड़ फेंका गया था। इसके बाद हत्याओं का सिलसिला शुरू हुआ था जिसमें उन्हें, उनके सारे परिवार को तथा उनके बहुत से समर्थकों को समाप्त कर दिया गया था।

नये सुलतान मोमिन बूढ़े व्यक्ति थे। इन्हें जनता सता रही थी। इनके स्थानीय गवर्नर अपने अराजक आचरण से इन्हें परेशान कर रहे थे। इन्हें धन प्राप्त करने की जबरदस्त इच्छा थी। इसीलिये वे इस बात के लिए तैयार हो गये कि धन के एवज में थोड़ा-थोड़ा करके अपने देश का इलाका राजा ब्रूक को दे दें। 1853 में एक बड़ा क्षेत्र इन्होंने राजा को बेच दिया। 1861 में एक और क्षेत्र बेच दिया। 1883 और 1885 में सुलतान मोमिन ने जेम्स ब्रूक के उत्तराधिकारी को और भी बड़े-बड़े इलाके बेच दिये।

जेम्स ब्रूक की मृत्यु 1868 में हो गयी। बिस्तर में सोते समय शांतिपूर्वक ब्रूक का निधन हुआ था। अपने जीवन में ब्रूक ने कई बार मौत की जोखिम उठायी थी। समुद्री डाकू की तलवार, नरमुंड शिकारियों के जहरीले तीर और एक बार चीनी विद्रोहियों के एक भयानकतम हत्यारे से उसका मुकाबला हुआ था। लेकिन उसकी मृत्यु इंगलैंड के उसके सॉमरसेट स्थित देहात के घर में हुई। मृत्यु के समय वह लट्ठे के घरों में रहने वाले पैगन लोगों की आवाज़ों से दूर था, चीनी चाकरों के चापलूसी भरे सलामों से दूर था, मलय की मस्जिदों में पढ़ी जाने वाली नमाज की बुदबुदाहट से दूर था, अपने प्रिय सारावाक की दूसरी तमाम जानी पहचानी ध्वनियों और दृश्यावलियों से दूर था। कठोर परिश्रम से वह थक चुका था। अपने कठोर, वीरतापूर्ण और रचनात्मक जीवन में उसे कई बार निराशाओं

का सामना करना पड़ा था। इनके बावजूद उसने आश्चर्यजनक सफलताएँ प्राप्त की थीं। दक्षिण-पूर्व एशिया के मामलों में दो अंग्रेज़ों ने महत्वपूर्ण भूमिका निभायी थी। स्टेमफर्ड रैफल्स सिंगापुर राज्य का संस्थापक था, जेम्स ब्रूक सारावाक का रचियता। उनके चरित्र, अनुभव और प्राप्य बहुत कुछ समान थे। दोनों मानव-कल्याण और देश-भक्ति की मिलीजुली भावनाओं से प्रेरित थे और दोनों को अपने उद्देश्यों की प्राप्ति में उल्लेखनीय सफलता प्राप्त हुई। लेकिन दोनों में से किसी को भी ब्रिटिश संसद से उचित मान्यता प्राप्त नहीं हुई। खास तौर पर ब्रूक को इतिहास की एक विभूति की जगह एक विलक्षण रूमानी व्यक्ति के रूप में देखा जाता था क्योंकि वह नरमुंड शिकारियों द्वारा आबाद बस्ती का गोरा राजा था।

सौभाग्यवश अपनी मृत्यु से कुछ पहले ब्रूक को यह संतोष प्राप्त हुआ कि उसने ब्रिटिश सरकार का कुछ समर्थन पा लिया है। संसदीय क्षेत्रों में उसका जो विरोध किया जा रहा था, वह कम हो गया। उसके रचनात्मक कार्य को समझा जाने लगा। कुछ समय पहले 'नाइट' बनाकर उसे सम्मानित किया गया था। 1883 में सरकार ने सारावाक को अपने शासन के अंतर्गत एक अलग राज्य के रूप में मान्यता दे दी।

वृद्ध राजा को इस बात का गहरा संतोष था कि उसकी मृत्यु के बाद उसका उत्तराधिकार एक ऐसे नौजवान को दिया जाएगा जिसकी शासन-योग्यता पर्याप्त रूप से सिद्ध हो चुकी है। जेम्स ब्रूक खुद तो आजीवन अविवाहित रहा, लेकिन सारावाक की सरकार चलाने में उसे अपने दो भतीजों से वर्षों तक सहायता मिलती रही। इनमें से दूसरे भतीजे चार्ल्स जॉनसन ने अपना सारा जीवन देश के लोगों की सेवा के लिये अर्पित कर दिया।

कुचिंग में जैसे ही जेम्स ब्रूक की मृत्यु की खबर पहुँची, चार्ल्स को दूसरा राजा घोषित कर दिया गया। एक परोपकारी एकतंत्रीय शासक के रूप में चार्ल्स ने अपना शासन जारी रखा। उसकी सरकार को उसकी प्रजा का पूरा समर्थन प्राप्त था। बोर्नियो के दूसरे प्रांतों के लोग उसकी प्रजा से ईर्ष्या करते थे। उसके चाचा के शासन में भी यही स्थिति थी पास के प्रांतों के निवासी अपने पड़ोस के शासन को ललचायी दृष्टि से देखते थे। उनकी यह मांग थी कि उनके प्रांत को भी उसी शासन के अंतर्गत शामिल कर लिया जाए। 1883 और 1885 में सुलतान ने उनकी इच्छा पूरी कर दी। उसने और भी कई भूभाग राजा को बेच दिये।

अगले वर्ष सुलतान मोमिन का निधन हो गया। उसकी उम्र सौ साल से ज्यादा हो चुकी थी। इतिहास में इतनी लंबी उम्र का कंजूस शायद दूसरा कोई नहीं हुआ। सुलतान आये और चले गये, लेकिन उनकी सल्तनतों का ह्रास रुका

नहीं। जिन प्राक्रयाओं के तहत सारावाक ने धीरे धीरे ब्रुनेई को हड़प लिया, वे प्रक्रियाएँ मोमिन के उत्तराधिकारी सुल्तान सालेह के शासन में भी चलती रहीं। सालेह पूर्व के भ्रष्ट शासकों का एक और नमूना था। 1890 में और एक बार फिर 1905 में अधिकाधिक क्षेत्र और जनसंख्या ने उसके राज्य से टूट कर राजा के राज्य से अपने को जोड़ लिया।

यह प्रक्रिया आगे भी अपनी चरम तार्किक परिणति तक चलती रहती यानी तब तक चलती रहती जब तक कि ब्रुनेई का प्राचीन ऐतिहासिक राज्य पूरी तरह खत्म नहीं हो जाता। बीसवीं शताब्दी के आरंभ में ब्रुनेई का बहुत थोड़ा भाग बाकी रह गया क्योंकि ब्रुनेई के लम्बे चौड़े इलाके एक तरफ सारावाक के पास चले गये और दूसरी तरफ उत्तर बोर्नियो के पास। जो हिस्सा बाकी रह गया वह गरीब, दुखी और कुशासित था। आबादी 40, 000 से कम रह गयी। और राज्य सुलतान के लिये बदनामी का कारण बन गया। जब हालत दिवालिये पन की हद तक पहुंच गयी तो वह पूरा का पूरा राज्य चार्ल्स ब्रूक को बेचने के लिये तैयार हो गया।

राजा को यह प्रस्ताव बुरा नहीं लगा, लेकिन इसी समय ब्रिटिश सरकार ने हस्तक्षेप कर समस्या का एक और समाधान पेश किया। लंदन में ब्रिटिश मंत्रि-मंडल ने पहले तो कई साल तक ब्रुनेई के क्रमशः टूटते जाने की प्रक्रिया को स्वीकार किया, इसके बाद 1888 में अपनी इस नीति को उलट कर उस देश को ब्रिटिश रक्षित राज्य घोषित कर दिया। अचानक सुलतान की रक्षा करने की नीति पर अमल किया जाने लगा। 1906 में उन्होंने ब्रुनेई में एक ब्रिटिश रेज़ीडेंट की नियुक्ति की। इस रेज़ीडेंट को यह सामान्य अधिकार दिया गया कि वह सुलतान को परामर्श दे लेकिन उसका वास्तविक अधिकार यह था कि वह सुलतान को आदेश दे। इस तरह वित्तीय और प्रशासनिक सुधारों के काल की शुरूआत हुई और ब्रुनेई एक बार फिर अपने पैरों पर खड़े होने की कोशिश करने लगा। इस तरह आखिरी मौके पर इस राज्य को सर्वनाश से बचा लिया गया। ब्रिटिश मार्ग दर्शन के अंतर्गत उसने अपने आपको आज तक कायम रखा है। पिछले कुछ वर्षों में यहाँ एक तेल-कूप भी खोदा गया है जिससे देश की समृद्धि में वृद्धि हुई है। वर्तमान सुलतान हिज़ हाइनेस सर उमर अली सैफुद्दीन के पद भार सम्हाल लेने से इस देश की खोयी हुई आशाएँ और अभिमान फिर लौट आये हैं।

1906 के बाद सारावाक, उत्तर बोर्नियों और ब्रुनेई के बीच सीमा संबंधी कुछ मामूली परिवर्तन हुए हैं जिससे उनके भौगोलिक संबंधों के बीच परिवर्तन आया है। 1906 तक सारावाक बढ़कर अपने वर्तमान आकार का हो गया था यानी इसका क्षेत्रफल 50000 वर्गमील हो गया और आबादी 550000 हो गयी। इस लंबी अवधि के दौरान जो काम किये हैं वे अधिकांशतः दूसरे राज्य के नेतृत्व

और मार्गदर्शन में किये गये हैं। उनका निर्भीक चरित्र, उनकी फौलादी इच्छा शक्ति और उनके न्यायपूर्ण विचार इस पूर्वी राज्य के कल्याण के लिये आवश्यक थे। इन्हीं गुणों के कारण सारावाक कई तरह की मुश्किलों का सामना सफलतापूर्वक करता रहा। ये मुश्किलें योरोपीय शक्तियों के प्रतिद्वंद्वी साम्राज्यवादियों ने पैदा की थी जिनके कारण एशिया में बड़े उथल-पुथल हो गये।

1917 तक वे जीवित रहे और सक्रिय रूप से शासन करते रहे। उनका उत्तराधिकार उनके सबसे बड़े पुत्र चार्ल्स वाइनर ब्रूक को मिला। नये राजा ने अपने पूर्वजों की सुस्थापित परम्पराओं के अनुसार शासन किया। अपने लम्बे शासनकाल-में वे बहुत लोकप्रिय रहे। 1941 में ब्रूक शासन के सौ वर्ष पूरे हो गए। इस समय तृतीय राजा सिंहासनासीन थे। ऐसा लगता था कि यह राजवंश उसी तरह दृढ़ता से सत्तासीन रहेगा, जिस तरह संसार के कई राजवंश सत्तासीन हैं। इसमें कोई शक नहीं कि सारावाक के गोरे राजाओं का शासन आज के क्रांतिकारी समय के संदर्भ में दूसरे कई राजाओं के शासन से कहीं ज़्यादा सुरक्षित था। (हमने इस काल में कई राजाओं के राज-मुकुटों और सिरों को धरती पर लौटते देखा है।)

जेम्स ब्रूक के सारावाक का राजा बनने के बाद लगभग सौ साल बीत गए। तृतीय राजा चार्ल्स वाइनर ब्रूक के शासन में सितम्बर 1941 में कुचिंग में शतवार्षिक उत्सव मनाया गया।

कुछ ही महीनों बाद जापानियों ने देश पर कब्ज़ा कर लिया। राजा और उनके मुख्य सलाहकार आस्ट्रेलिया चले गए। अगले चार साल सारावाक जापानी विजेताओं के शासन में रहा।

जिन देशों पर जापानियों ने कब्ज़ा किया था, उनका शासन इतना खराब, अक्षम, लापरवाही से भरा हुआ और क्रूर था कि विश्वास करना मुश्किल है। इंसाफ की बात यह है कि जापानियों का शासन उनके क्रूर सैनिक वर्ग द्वारा संचालित था जो प्रतिभा सम्पन्न जापानी राष्ट्र के निकृष्टतम प्रतिनिधि थे। कुछ अपवादों को छोड़कर सारावाक की जनता उन्हें नापसंद करती थी। उनके शासन में खास तौर पर पैगनों कबीलों की हालत बहुत खराब थी।

जापानियों का सबसे ज़्यादा ध्यान इस तरफ था कि वे देश की सबसे बढ़िया चीज़ों को किस तरह प्राप्त करें। अपने आदेशों द्वारा उन्होंने देशी चावल की फसलें खुद ले लीं, सरदारों से अपने लिए शिकार खिलवाए और बगावत के डर से उनकी बंदूकें ज़ब्त कर लीं। पैगन रीति-रिवाज़ों का उन्होंने सम्मान नहीं किया। उन मधुर सम्बन्धों को उन्होंने तोड़ दिया जो राजा के ज़माने में शासकों और नदी के ऊपरी इलाके में बसे हुए निवासियों के बीच स्थापित हुए थे। देशवासी उनसे नफरत करते थे। उन्हें उस दिन का इंतज़ार था जब वे अपनी इस

नफरत को व्यावहारिक रूप से अभिव्यक्त कर सकेंगे ।

जंगलों में अनजाने भटक जानेवाले कई जापानी सिपाही कभी वापस नहीं लौटे । ऊष्ण कटिबंधीय पशुओं या खूबसूरत फूलवागों की उनकी कहानियाँ उनके साथियों तक नहीं पहुँची, उनके साथ ही चली गयीं । ये भटके हुए सिपाही किसी अनजाने स्थान पर लड़खड़ाकर अचानक गिर जाते थे । धूप और छाया में ततैये की तरह उड़ने वाली एक छोटी चीज़ आकर उनसे टकरा जाती थी । वह कहाँ से आई ? वह क्या चीज़ थी ? अपने शरीर को देखने पर उसे लगता था कि एक छोटी-सी नोकदार चीज़ उसके माँस में घुस गई है । बेसहारा होकर वह ज़मीन पर लेट जाता था और उसे नींद आने लगती थी । वह नोकदार चीज़ इपोह वृक्ष के ज़हरीले रस में डुबाई गई थी । यह रस जानलेवा होता है । वह अपना काम कर रहा था ।

अचानक झाड़ियों में हलचल-सी हुई और कोई नरमुण्ड शिकारी बाहर निकल आया । चुपचाप वह ज़मीन पर पड़े हुए जिस्म के पास गया । म्यान से उसने अपना 'परांग' निकाल लिया । उसके एक ही झटके से उसने अपना पुरस्कार प्राप्त कर लिया । पैंगनों द्वारा ज़मा किए गए जापानी सिरों में एक की वृद्धि हो गई ।

1945 में मचान घरों में अचानक अफवाह फैल गई कि गोरे लोग सारावाक की ज़मीन पर उतरे हैं । ये कहानियाँ सच थीं । मित्र-राष्ट्रों के सोलह छाता सैनिक बोर्नियो के भीतरी इलाके में उतरे थे । जंगल में गुप्त संदेशवाहकों के ज़रिये बहुत जल्द यह खबर फैल गई । केन्याह, कयान और इबान सरदारों ने अपने अपने आदमियों को इकट्ठा किया । बहुत जल्द मित्र राष्ट्रों के सैनिकों ने स्थानीय निवासियों के समूहों को संघटित किया और सारावाक की नदी के निचले इलाकों की तरफ बढ़ना शुरू कर दिया । ये लोग दुश्मन को समुद्र की ओर खदेड़ने लगे । रेजाँग नदी पर इबान लोगों के अभियान का कप्तान विल सोचोन था । बहुत से स्थानों पर सारावाक निवासियों ने संघटित सैनिक टुकड़ियों के आगमन की प्रतीक्षा नहीं की । उन्होंने दुश्मन पर खुद ही हमला कर दिया । अपने हथियारों और परांगों का उन्होंने खुलकर उपयोग किया और जी भरकर नरमुण्डों का शिकार खेला ।

सितम्बर 1945 में सारावाक के जापानियों ने आत्म-समर्पण कर दिया । लोगों ने खुशियाँ मनाईं । उनका देश आज़ाद हो गया था और उन्होंने मान लिया लिया था कि उनका राजा वापस लौट आएगा ।

उनकी आशाओं के विपरीत 1 जुलाई 1941 को तृतीय राजा चार्ल्स वाइनर ब्रूक ने सारावाक का शासन इंग्लैण्ड के बादशाह को सौंप दिया । जनता को दिए गए अपने संदेश में उसने बताया कि अगर उसकी मृत्यु के बाद भी ब्रूक शासन

चलता रहा तो सारावाक के भविष्य के सम्बन्ध में अनिश्चितता और भ्रम पैदा होंगे। अगर सारावाक का प्रदेश सिर्फ अपने साधन-स्रोतों पर निर्भर रहा तो जापानी कब्जे के बाद के वर्षों का पुनर्वास-कार्य नहीं हो पाएगा। लोगों के साथ न्याय करने का कार्य ब्रिटिश शासन से बेहतर कोई नहीं कर पाएगा। ब्रिटिश सहायता से ही सारवाक की शिक्षा, स्वास्थ्य और दूसरी सामाजिक सेवाओं का विस्तारकिया जा सकेगा। ब्रिटिश सहायता से ही सारावाक के प्राकृतिक संसाधनों का शोषण और लोगों के रहन-सहन की स्थिति में सुधार हो सकेगा।

ब्रिटिश सरकार को शासन सौंपने के निर्णय पर काफी विवाद हुआ जो आंशिकांशतः कटु था। यह अपरिहार्य था क्योंकि इस स्थिति से कई व्यक्तिगत और राजनीतिक भावनाओं को गहरी चोट पहुँची थी। सारावाक के मलय जनमत के एक हिस्से ने इस परिवर्तन का विरोध किया। राजा का भतीजा एंथनी ब्रूक उत्तराधिकार की पंक्ति में दूसरा था। उसने कोशिश की कि वह सारावाक जाकर असंतोष की व्यापकता का अंदाज़ लगाए। ब्रिटिश अधिकारियों ने सारावाक में उसके प्रवेश पर पावन्दी लगा दी। कुछ वर्षों तक बड़ी गरमागरम बहस जारी रही।

जनता की भावनाएँ स्पष्ट थीं। उस समय देश में यात्रा करनेवाले किसी भी व्यक्ति को उनका अंदाज़ हो सकता था। ब्रूक परिवार ने सौ साल तक उन पर शासन किया था। राजा को छोड़कर अगर कोई और सरकार में परिवर्तन की बात करता तो लोग इसे फौरन ठुकरा देते। लेकिन यह सुझाव खुद राजा की ओर से आया था, इसलिए मामला अलग था। प्रजा ने बड़े आदर के साथ इस पर विचार किया। मलय लोगों का एक वर्ग यद्यपि इसके विरुद्ध था, लेकिन उतने ही बड़े दूसरे वर्ग ने इस योजना का समर्थन भी किया। चीनी लोगों ने लगभग निर्विरोध रूप से राजा के शासन को स्थगित करने की योजना का समर्थन किया। पैंगन सरदार इस आश्वासन की ओर आकर्षित हुए कि ब्रिटिश शासन लागू होने से उनके अशिक्षित बच्चों को शिक्षा मिल सकेगी। स्वाभाविक था कि आदिम निवासियों का एक बहुत बड़ा बहुमत इस तरह के बुद्धिमत्तापूर्ण विचार से प्रभावित नहीं था। वे राजा के प्रति समर्पित थे और राजा के निर्णय के प्रति उनमें अडिग विश्वास था। उसका शब्द उनके लिए कानून था और अगर उसने खुद अपने शासन की समाप्ति की वकालत की थी तो वे उसकी बात मानने के लिए तैयार थे।

उनके दिमाग में सिर्फ एक शंका थी, एक भय था। वे सदियों पुराने रीति-रिवाज़ के अनुसार एक खास तरह की जीवन-प्रणाली अपनाए हुए थे। उनकी अलिखित नीति-संहिता थी जिसे 'आदत लामा' के नाम से जाना जाता था। उन्हें भय था कि नया शासक उनकी परम्पराओं को खत्म कर देगा और नई तरह की

धारणाओं के अनुसार शासन करेगा जो उनकी समझ से बाहर थी। यह अजीब बात थी कि सारावाक में सौ साल में बहुत थोड़ा परिवर्तन आया था। सौ साल पहले जान जेम्स ब्रूक राजा बनना चाहता था। इबान सरदारों का एक मात्र भय था कि नया राजा उनके 'आदत लामा' में कहीं हस्तक्षेप न करे। राजा मुदा हाशिम ने जो एक शर्त रखी थी वह यह थी कि लोगों के प्राचीन रीति-रिवाजों की सुरक्षा की गारंटी दी जाए। जेम्स ब्रूक के इसे स्वीकार कर लेने पर ही सरदारों ने उसे राजा स्वीकार किया।

1946 की पीढ़ियों के दिमाग में भी यही सवाल था। उपनिवेशों के राज्य सचिव ने सार्वजनिक रूप से इस बात का आश्वासन दिया कि ब्रिटिश सरकार 'आदत लामा' को कायम रखेगी। इस आश्वासन से मामले का निबटारा हो गया। स्थानीय निवासियों की शंका का निवारण हो गया और उन्होंने शासन में परिवर्तन को स्वीकार कर लिया।

इसके बावजूद शासन-परिवर्तन के दिन लोगों में एक गहरी उदासी छा गई। ब्रूक शासन को वे बहुत अच्छा समझते थे। जब आखिरी राजा ने विदा ली तो जंगल के सीधे-सादे निवासियों को ऐसा लगा जैसे महज़ दोस्त या नेता से ज़्यादा उनका कोई अपना नज़दीकी उन्हें छोड़कर चला गया है। जैसे बच्चे अच्छे पिता को प्यार करते हैं, उसी तरह उन्होंने गोरे राजा को प्यार किया था।

किसी अज्ञात तारीख को मलय लोगों ने बोर्नियो की ओर प्रस्थान करना शुरू कर दिया था। यथा समय उन्होंने उसके तट के आसपास कई सल्तनतें कायम की थीं। सारावाक में उनका बहुत प्रभाव था। उन लोगों ने काफी दौलत इकट्ठा करली थी। वे चीनियों और स्थानीय पैगन लोगों का ज़बरदस्त शोषण करते थे।

जेम्स ब्रूक ने राजा बनते ही मलय सरदारों की सत्ता तो समाप्त कर दी थी लेकिन मलय अफसरों के दल को कायम रखा था। ब्रूक शासन में ये मलय अफसर फलते-फूलते रहे। जब ब्रिटिश शासन स्थापित हुआ तो कुछ मलय असंतुष्ट हो गए। कुछ ब्रूक शासन के प्रति वफादारी के कारण असंतुष्ट हुए तो कुछ के मन में यह भय पैदा हो गया कि उनके समुदाय की जो सुविधा-संपन्न स्थिति अब तक थी, अब वह समाप्त हो जाएगी। यहीं से नये ब्रिटिश शासन के प्रति मलय असंतोष की आग का भड़कना शुरू हुआ।

सिबू में मलय असंतुष्टों के एक गुट ने एक व्यक्ति विशेष के नेतृत्व में पागलपन से भरा हुआ रास्ता अख्तियार किया। अवांग राम्बली बिन अतित में एक छोटा-मोटा नेपोलियन होने की भावना थी। उसमें लोगों को प्रभावित कर देने की क्षमता भी थी। उसकी उम्र उस समय सैंतीस साल की थी और उसके अधिकांश अनुयायी बीस से तीस के अन्दर थे। वे अपने को 'सोसाइटी ऑफ थर्टीन' या 'तेरह की समिति' कहते थे। अनजान जगहों में गुप्त रूप से उनकी

बैठकें होती थीं। उन्होंने कुछ हत्याएँ करने की शपथ ली। ये हत्याएँ कोई मामूली हत्याएँ नहीं थीं।

एक साल से अधिक समय तक उनके षड्यन्त्रों की खिचड़ी पकती रही। इस बीच सारावाक में कई परिवर्तन हुए। गवर्नर बदल गया। चार्ल्स आर्डेन क्लार्क ने अपने अच्छे प्रशासन के कारण काफी ख्याति अर्जित की थी। 1949 में क्लार्क को गोल्ड कोस्ट का गवर्नर बना दिया गया और उसकी जगह कुचिंग में लाया गया गवर्नर डंकन स्टीवर्ट को।

कुचिंग में एक पखवारा बिताने के बाद राजधानी के प्रमुख लोगों से मिलने के लिए स्टीवर्ट ने एक दौरा शुरू किया। लोगों ने बड़ी संख्या में उसका स्वागत किया। चीनी, मलय, योरोपीय, इबान, सभी लोगों से स्टीवर्ट ने खुलकर भेंट की। उनके रीति-रिवाजों, उनकी वेशभूषा वगैरा को देखने का प्रयास किया। इसके बाद स्कूली बच्चों को देखने का क्रम आया। बच्चों ने अपने नन्हे-नन्हे हाथों को उठाकर सैल्यूट किया और अपनी मीठी आवाज़ में गीत गाए। स्टीवर्ट उनकी कतारों के बीच से गुज़रता गया।

जब वह कतार के आखिरी सिरे पर आया, एक नौजवान शिक्षक आगे की ओर झुका। ऐसा लगा जैसे वह गवर्नर के कदमों पर गिर रहा हो। आगे झुकते ही उसने गवर्नर की बगल में एक छुरा भोंक दिया। गवर्नर को मारने के लिए एक लड़का आगे बढ़ा, लेकिन देखनेवालों ने उसे दबोच लिया।

पल भर में यह हमला समाप्त हो गया। पुलिस ने हमला करनेवालों को पकड़ लिया। स्टीवर्ट धीरे-धीरे मंच पर गया। उसने लोगों से कहा कि वे कार्यक्रम को जारी रखें। अपने हाथ से उसने बगल को दबा रखा रखा था, जैसे बहुत दर्द हो रहा हो। अचानक लोगों ने देखा कि उसका दस्ताना खून से लाल हो गया है। पल भर में स्टीवर्ट का लम्बा-तगड़ा जिस्म लड़खड़ाकर वहीं गिर गया।

वह 3 दिसम्बर 1949 का दिन था। गवर्नर को सिबू के अस्पताल ले जाया गया। सिंगापुर को फौरन डॉक्टरी सहायता भेजने के लिए तार किया गया। सिंगापुर से एक अनुभवी शल्य-चिकित्सक आया जिसने मरीज़ को फौरन सिंगापुर ले जाने की सलाह दी, क्योंकि सिबू के अस्पताल में चिकित्सा-साधन सीमित थे।

लगभग एक सप्ताह तक डंकन स्टीवर्ट ज़िंदा रहा। 10 दिसम्बर यानी ठीक एक सप्ताह बाद उसकी मृत्यु हो गई।

यह हत्या एक निर्दोष व्यक्ति की हत्या थी। सारावाक में जिन नीतियों पर अमल किया जा रहा था, उस के लिए कई अधिकारी ज़िम्मेदार थे। डंकन स्टीवर्ट तो वहाँ नया-नया ही आया था। उसकी कोई जिम्मेदारी नहीं थी। वह सारावाक के लिए नया था, पूरे एशिया के लिए नया था।

यह हत्या 'तेरह की समिति' के किसी सदस्य द्वारा नहीं की गई थी। अवांग राम्वली ने दो अलग नौजवानों को इस काम के लिए तैयार किया था। मुकदमे के दौरान जो गवाहियाँ सामने आईं उनसे पता चला कि राम्बली ने इन नौजवानों को एक तरफ तो लालच दिया था, दूसरी तरफ धमकी दी थी। लालच यह था कि हत्या के कारण ये नौजनान राष्ट्रीय वीर पुरुष बन जाएँगे और धमकी यह थी कि अगर उन्होंने हत्या करने की हिम्मत नहीं की तो उनकी ही हत्या कर दी जाएगी।

रोसली, मोर्शिदी, राम्वली तथा समिति के एक अन्य सदस्य को फाँसी पर लटका दिया गया। बाकी लोगों को आजीवन कारावास की सज़ा दे दी गई। गवर्नर की हत्या करनेवाले चाकू ने इस संघटन की ही हमेशा के लिए हत्या कर दी।

3

जब कुचिंग में हमारा हवाई जहाज़ उतरा तो मैं बोर्नियो में शॉ के प्रतिष्ठान के महा प्रबंधक श्री चिन से उनकी बैठक में मिला। वह यात्रा के लिए तैयार थे। चाय के साथ हमने आगे के कार्यक्रम की रूपरेखा बनाई। इतनी देर में हमारे नाम पुकारे गए और हम हवाई जहाज़ की तरफ बढ़े। हमारा दूसरा मुकाम सीबु था।

तीन बजे हमारा जहाज़ सीबु पहुँचा। हवाई जहाज़ के ज़मीन पर उतरने से पहले मैंने इमारतों का जमघट देखा और समुद्री घाटों पर यात्रा के लिए तैयार जहाज़ों को खड़ा देखा।

शॉ के स्थानीय मैनेजर श्री चांग हमारे लिए टैक्सी ले आए थ। हवाई अड्डे से कोई तीन मील दूर हमें जाना पड़ा, जो सीबु का सबसे लंबा रास्ता है। सीबु तीसरे डिविजन की राजधानी है और कुचिंग के बाद सारावाक का सबसे बड़ा शहर है। नदी किनारे पर छायी हरियाली, सुन्दर-सुन्दर वृक्ष, खूबसूरत घरों के आसपास सफाई से काट छांट कर बनाई गयी बाड़ से यह जगह बहुत ही आकर्षक लगती थी।

हम होटल पहुँचे, हमारे लिए कमरा पहले से ही सुरक्षित रखा गया था। हमने जल्दी से हाथ मुँह धोये, कपड़े बदले और कुछ खाने के लिए एक चीनी रेस्तराँ में गए। चांग साहब ने हमें जल्दी करने को कहा क्योंकि उन्होंने बताया अंधेरे में नाव पर सफर करना असंभव था। हमारे लिए एक नाव तैयार थी।

एक छोटे से बैग में हमने कुछ कपड़े डाले और जल्दी-जल्दी घाट पर पहुँचे। मैंने सोचा नाव आरामदेह होगी जहां हम हाथ पांव पसार कर आराम से बैठ सकेंगे। परन्तु यह तो छोटी और तेज़ रफ्तार वाली स्थानीय नाव थी। इस नाव पर तीस हार्सपॉवर की एक मोटर लगी हुई थी। हम तीनों नाव पर सवार हुए। हमारे अलावा ड्राईवर और नाव का मालिक भी साथ थे।

नाव के दौड़ने के साथ ही मुझे चक्कर आने लगे। पानी की धारा बहुत तेज़ थी और उसमें बड़े-बड़े लट्ठे तेज़ी से बह रहे थे। पानी का बहाव बहुत भयानक था। तेज़ी, उठती हुई लहरें और घुमावदार भंवरें एक-दूसरे में मिलकर एक डरावना नृत्य पेश कर रही थीं। नाव बहाव की प्रतिकूल दिशा में लगभग बीस

मील प्रतिघंटा की रफ्तार से दौड़ी जा रही थी। अपने आपको संभालने और संतुलित करने में मुझे लगभग आधा घण्टा लगा। मेरे पास बैठे चिन साहब ने जानना चाहा कि मैं तैरना तो जानता हूँ या नहीं। मैंने जवाब दिया कि मैं तैरना तो जानता हूँ पर एक अच्छे तैराक होने का दावा नहीं कर सकता। चिन साहब ने मुस्कराते हुए कहा, 'इससे कोई फर्क नहीं पड़ता। नदी मगरों से भरी हुई है।' यह सोचकर मुझे राहत मिली कि नॉव के उलटने पर मेरा वही हाल होगा जो एक कुशल तैराक का हो सकता है।

हमारी यात्रा के प्रारंभिक चरण में हमने जो चीजें हमारे आसपास देखीं उनमें रबर के चीनी बागान ही मुख्य थे। बीच-बीच में कहीं-कहीं भयानक जंगल भी थे। बहुत सालों पहले फूचाऊ से सैकड़ों परिवार चावल की खेती का ठेका लेकर रेजांग नदी के किनारे पर आ बसे थे। धान की खेती के लिए यह जमीन आदर्श थी। उस वक्त दुनिया में रबर की मांग बहुत बढ़ गयी थी और सत्ता-धारियों को इस बात का ठीक से पता चले, इससे पहले ही फूचाऊ लोगों ने सब जगह रबर की खेती आरंभ कर दी थी। अख्तियार-नामे की शर्तें भले कुछ भी क्यों न रही हों ये धूर्त व्यापारी ज्यादा से ज्यादा मुनाफा कमाने के प्रलोभन को न रोक सके। जब सरकार ने विरोध किया तब तक बहुत देर हो चुकी थी और रबड़ के पेड़ मजबूती से जड़ें पकड़ चुके थे। अब वे वहाँ उसी तरह हैं।

हमारी नाव जैसे-जैसे नदी के ऊपरी हिस्से की तरफ बढ़ती गयी स्थानीय निवासियों को कई नावें खामोश सायों की तरह नदी में हमारे पास से गुज़र गयीं। वे हल्की-फुल्की नावें थी जिन्हें पेड़ के एक तने में खोल बना कर तैयार किया गया था। आमतौर पर ये नावें सामान या यात्रियों से इतनी भरी रहती थीं कि उनका हिस्सा सिर्फ एक इंच पानी के बाहर दिखायी देता था।

जैसे ही हम लोग नदी तट पर बने हुए मचानघरों के पास से गुज़रे हमने इबान लोगों को अपने घरों के आसपास देखा। उस दिन जो आकर्षक दृश्य मैंने देखे वे आज भी मेरी स्मृति में समाए हैं। उदाहरण के लिए मुझे याद आता है करीब दस वर्ष का एक लड़का बड़े उत्साह से घने पेड़ों के बीच कीचड़ के रास्ते से भाग रहा था। वह बीच धारा की तरफ बढ़ती हुई एक नाव में कूदना चाहता था। ये नाव हमारी तेज़ नौका से उठी लहरों के कारण पूरी तरह डोल रही थी। बच्चा पूरी तरह नंगा था। नाम के लिए उसकी कमर पर एक कपड़ा लिपटा हुआ था। उसके लंबे काले बाल पीछे की तरफ इस तरह उड़ रहे थे जैसे किसी दौड़ते हुए घोड़े की लंबी पूंछ। जिस रास्ते पर वह दौड़ रहा था वह पूरी तरह ढालू था। फिसलन से भरा हुआ और घुमावदार। फिर भी वह यहाँ वहाँ पैर जमाता फिसलता हुआ तेज़ गति से भागा चला जा रहा था। ज्यों ही वह डोंगी पर कूदता डोंगी उलट जातो क्योंकि वह किनारे से थोड़ी ही दूर

पानी में बिना अटकाव के तैर रही थी। वह एक लंबी छलांग भरकर इस तरह नाव पर जा बैठा जैसे जंगली बिल्ली कूदकर पेड़ की डाली पर चढ़ जाती है। उस लड़के की नग्नता, उसके लंबे उड़ते हुए बाल, उसकी फुर्ति जंगल के किसी भी प्राणी की तरह स्वाभाविक लगते थे।

सूर्यास्त से पहले हम कॉनोवित पहुँचे। यह जगह किसी बड़े गाँव की तरह थी। द्वितीय राजा ने अपने राज्य में नरमुण्ड शिकार को खत्म करने के लिए युद्ध नीति के आधार पर इस जगह का चुनाव किया था। यहाँ पर कॉनोवित नदी रेजाँग नदी से मिलती है। दोनों नदियों के ऊपर पहाड़ी पर राजा का किला था। यह किला लकड़ी की बनी एक विशाल इमारत थी जिस पर चूने की सफेदी की गयी थी। इसकी दीवारों में जगह-जगह गुप्त द्वारों की कतारें बनी हुई थीं जिनमें पुराने कठिन दिनों में तोपों को लगाया जाता था। इस क़िले को 'फोर्ट-एम्मा' कहा जाता था।

एक छोटी चीनी दुकान पर हमने कॉफी पी और इसके बाद हम बाज़ार से गुजरने लगे। चांग साहब रात में हमारे ठहरने की व्यवस्था करने के लिए चले गये। मैं आसपास निगाहें दौड़ा रहा था। मैंने देखा कि पास ही मचानघर से निकल कर इबान लड़कियों का एक दल रास्ते से गुजर रहा है। इबान युवतियों की यह पहली झांकी मैंने देखी और मैं यह मानता हूँ कि उनकी अद्‌भुत सुंदरता को देखकर मेरी तो साँस रुक गयी। क्या ये अद्‌भुत युवतियाँ वास्तविक हैं या मैं कोईस्वप्न देख रहा हूँ। उनके श्याम मंगोल चेहरों पर किसी मूर्ति की रहस्यात्मक गंभीरता छायी हुई थी। उनकी भौंएं कमान की तरह थीं, आँखें तिरछी थीं और उनके औंठ भरे पूरे थे। कमर से घुटनों तक ही उनका शरीर ढका हुआ था। बाकी नग्न था। यह नग्न भाग बहुत ही सुगठित था। उनके वक्ष नितांत सुडौल थे।

चांग साहब रात में खाने से पहले हमसे मिले और बताया कि हमारे ठहरने की व्यवस्था हो गयी है। हमने जल्दी से खाना खाया और व्यस्त दिन के बाद आराम करने की उम्मीद में हम चांग साहब के साथ चल पड़े। परंतु नसीब हमारा साथ नहीं दे रहा था। हम दुकान और मकान के मिले-जुले स्थान पर पहुँचे, जिसकी छतें बहुत नीची थीं और चारों तरफ मच्छरों की भरमार थी। चार ड्रमों पर दो तख्ते रखकर बिस्तर बनाया गया था। जिस पर चटाई बिछी हुई थी। थकान इतनी थी कि कोई भी बिछौना अच्छा लग सकता था। मैं फौरन सो गया। रात को ज्यों ही मैंने नींद में करवट ली तो मेरी चमड़ी दो तख्तों के बीच फँस गयी। मुझे तेज दर्द हुआ, मैं उठकर बैठ गया। मैंने चटाई लकड़ी की फर्श पर बिछा दी। इस फर्श पर तिलचट्टे और चूहे दौड़ रहे थे। मैंने यथा-संभव सोने की कोशिश की।

दूसरे दिन सवेरे ही हमने कॉनोवित छोड़ दिया। हमारा अगला पडाव सोंग जैसे आकर्षक नाम वाले छोटे से स्थान पर हुआ। यह स्थान एक ऐसी पहाड़ी पर था जिसकी सीधी ढलान नदी पर जाकर खत्म होती थी। रेजांग नदी के पास कुछ खास किस्म के खतरनाक इबान लोग रहा करते थे। रेजांग नदी से एक सहायक नदी मिलती थी। इस किले की बंदूकें इस सहायक नदी के मुहाने की रक्षा कर सकती थीं। इन इबान लोगों को बहुत पहले ही वश में किया जा चुका था। लेकिन पहाड़ी के शिखर के आसपास फैली हुई खूबसूरत उच्च भूमि और जंगलों पर काबू नहीं पाया जा सका था। युद्ध की समाप्ति तक सोंग पूरी तरह से ध्वंस हो चुका था। जापानियों ने यहाँ पर अपनी सैन्यशक्ति को पुनर्जीवित करने की कोशिश की और एक सैनिक टुकड़ी तैनात कर दी थी। बिलसोचऑन और उसके साथ के स्थानीय योद्धा जैसे ही रेजांग के निचले हिस्से की तरफ आगे बढ़े जापानियों ने अपने पैर मजबूत करने की कोशिश की लेकिन उन्हें वहाँ से जबरदस्ती निकाल दिया गया। युद्ध में कई किस्म के हथियार इस्तेमाल किये गये इनमें बहुत ही आदिम हथियार थे और बहुत ही आधुनिक हथियार थे। एक जबरदस्त मुकाबला करने के बाद जापानी पीछे हट गये। वे अपने पीछे अपने चट्टानी दड़बों में जापानी सिपाहियों की खून से तर-बतर कटी-फटी लाशें छोड़ गये।

युद्ध के दौरान किला और आसपास सभी मकान जलकर खाक हो गये। रात में यह जगह वीहड़ जंगल की तरह भयानक लगती थी। परंतु हमने जब सोंग को देखा तो वह एक नया सा सुंदर शहर था। जिसमें एक दर्जन चीनी दुकानें और एक बिल्कुल नयी सरकारी इमारत थी।

हमने सोंग में एक घंटा बिताया और कापित की ओर रवाना हो गये। कोई दोपहर के डेढ़ बजे होंगे जब हम कापित पहुँचे। हमने तट पर कदम रखा और रास्ता चढ़ कर बाजार पहुँचे। चांग साहब ने मुझे चिंग साहब के साथ छोड़ दिया। हम लोग मचान घरों को देखना चाहते थे, वे इसकी व्यवस्था में लग गये।

होटल के कमरे में एक खाट थी जिस पर एक गद्दी पड़ी थी। गद्दी पर कोई चादर या तकिया नहीं था। कमरे के एक कोने में कोई अलमारी जैसी चीज थी। मैं हैरान हो रहा था कि यह कैसा होटल है और अपनी सहायता के लिए एक बैरे की तलाश कर रहा था। इतने में मैंने दरवाजे के पास की दीवार पर कुछ लिखा हुआ देखा। लिखा हुआ था 'चूंकि हमारे यहाँ बहुत यात्री नहीं आते इसलिए यात्रियों से अपेक्षा की जाती है कि वे अपनी देख भाल स्वयं करें।'

यह सूचना बड़ी अजीब थी। मैंने अलमारी खोली। उसको ताला नहीं लगा था। एक चादर, एक तकिया और उसका गिलाफ निकाला। सभी साफ धुले हुए

थे पर इन पर इस्त्री नहीं की गयी थी। मैंने गद्दे पर चादर बिछायी, क्योंकि यही एक ऐसी जगह थी, जहां पर कोई बैठ सके। जितना आराम से मैं बैठ सकता था, बैठा। गर्म कॉफी का एक प्याला पीकर आसपास का चक्कर लगाने लगा।

रेजांग नदी के मुहाने से एक सौ अस्सी मील की दूरी पर कॉपित एक छोटा कस्बा है। एक सौ अस्सी मील दूर होने पर भी नदी यहाँ काफी चौड़ी और गहरी है। इसके किनारे भी काफी ऊँचाई पर हैं। नदी का मुहाना आगे भी बहुत फैला हुआ है। यह जगह रम्य स्थान के रूप में जानी जाती है। प्राकृतिक सौंदर्य के जानकार और बागवानी के शौकीन जिलाधिकारियों ने इसे आकर्षक स्थान बना दिया था। हरी-हरी घास, चमकते हुए फूल, कृत्रिम सरोवर और जंगल से आच्छादित आसपास की छोटी-छोटी पहाड़ियाँ, जिनमें से जाने वाले घुमावदार अश्वमार्गों के कारण कॉपित अद्‌भुत नजर आता है। ज़िला अफसर का बंगला सादी वास्तुकला का नमूना है। परंतु नदी की उपेक्षा करते हुए शान से खड़ा स्थानीय किला 'फोर्ट स्लीविया' भव्य लगता है। इसमें स्थानीय अदालत, हवालात, जिलाधिकारी का दफ्तर, डाकघर, पुलिस थाना तथा विशिष्ट मेहमानों के लिए विश्राम गृह हैं।

शहर के एक किनारे पहाड़ी की चोटी पर मेथोडिस्ट मिशन का एक स्कूल है। यहाँ का शिक्षक एक अमेरिकी था जिसकी पत्नी चीनी थी। इस शिक्षक का व्यवहार बड़ा मैत्रीपूर्ण था। स्कूल में लगभग बीस इबान छात्र-छात्राएँ थे जिनकी उम्र आठ से अठारह के बीच थी। ये बच्चे रेजांग और बालेह नदियों के किनारे बसे मचान घरों से जमा किये गये थे। उनमें सरदारों के बच्चे भी थे। इबान के मुख्य सरदार जुगा की दो सुंदर बेटियाँ भी थीं।

यह जानकर मुझे आश्चर्य तो नहीं पर दुख जरूर हुआ कि मिशनरी बच्चों को स्थानीय पोशाक पहनने से मना करते थे। लगता था कि विदेशी पोशाक पहनना अनिवार्य कर दिया गया। बच्चों के बाल वैसे ही काट दिया करते थे जैसे सेंपसन की लटें डिलायला काट दिया करती थीं। उनकी लंगोटियाँ छुड़वा दी गयी थीं। इबान बच्चे दुनिया के किसी हिस्से के स्कूली बच्चों की तरह अपने निक्करों की जेबों में हाथ डाले घूम रहे थे। उनमें से कुछ तो इतने आधुनिक थे कि कमीज़ें पहने हुए थे। इसी तरह लड़कियों को भी इबान लड़कियों के रूप में तुरंत पहचानने में दिक्कत होती थी। उनकी तीन चौथाई प्राकृतिक नग्नता को मलाय बाजूओं और सारोंग के द्वारा गर्दन से टखनों तक ढक दिया गया था। दो तीन लड़कियाँ तो यूरोपीयन स्कर्ट-ब्लाऊज भी पहने हुए थीं। उनके बोर्नियन नाक-नक्श के अलावा वे सिंगापुर के आधुनिक बच्चे लगते थे।

इस तरह पश्चिमी सभ्यता सारावाक के बहुत भीतर तक आहिस्ता-आहिस्ता पैठ रही थी। लेकिन ऐसा पिछले समय के उन देशी राजाओं की तरह नहीं हो

रहा था जिनमें बंदूक और व्यापार के बल पर सभ्यता का प्रवेश हुआ था। यहाँ पर इस सभ्यता का प्रवेश सलीब और ईसाई नैतिकता के आधार पर हो रहा था। इससे इबान लोगों की कितनी सहायता हुई यह तो मैं नहीं जानता, हाँ कुछ लोगों ने इसका फायदा जरूर उठाया। कॉपित का जिलाधिकारी जिसने ऐसी ही एक संस्था में शिक्षा प्राप्त की थी। उसकी तरह और भी लोग हो सकते हैं। इन स्कूलों में वर्ष बिताने के बाद मचान घरों से आने वाले सैकड़ों लड़के-लड़कियाँ अपने ही वातावरण में बेमेल हो जाते हैं। और वे एक बेहत्तर रहन-सहन की आशा में छोटे कस्बों की ओर जाने लगते हैं। बेकारी के कारण इनमें से कुछ लड़कियाँ वेश्यावृति आरंभ कर देती हैं, कुछ लड़के लड़कियों की दलाली करते हैं और इसी प्रकार के और बुरे धंधों में फंस जाते थे।

इन मिशनरी स्कूलों के बारे में सर माल्कम मेक्डोनाल्ड ने लिखा, 'प्रत्यक्ष रूप से भद्र लगने वाले ये साधन परंपरागत देशी जीवन प्रणाली को नष्ट कर देते हैं। ये साधन विनाश ज्यादा करते या सृजन, इसका आधार इन्हें लागू करने की व्यवहारिकता और समझ पर निर्भर करता है।

मचान घरों में जाने से पहले पेंघुलू (सरदार) के लिए भेंट ले जाने का रिवाज है। साधारणतः इस भेंट में सरदार के लिए शीतलपेय, बिस्कुट, सिगरेट व शराब आदि दिये जाते हैं। इनकी मात्रा के बारे में मुझे कोई अंदाज़ नहीं था। जब मैंने चाँग साहब को एक टेमॉइस में ये सामान लादते हुए देखा तो मेरे आश्चर्य का ठिकाना नहीं रहा। टेमाइस एक देशी नाव होती है जिसे उन्होंने कॉपित से किराये पर लिया था। बाद में मुझे पता चला कि यह भेंट दी तो मुखिया को जाती है लेकिन होती है मचानघर में रहने वाले तमाम लोगों के लिए। मुखिया ये चीज़ें मचानघरों के लोगों में बाँटता है और अगर शराब कम पड़ जाय तो उस कमी को वह अपने भण्डार की ताक नामक चावल से तैयार की जाने वाली इबान शराब से पूरा करता है।

टेमॉइस करीब चालीस फुट लम्बी थी। उसका पेंदा और ढाँचा एक ही वृक्ष के तने से बना हुआ था। मुझे जानकारी मिली कि सीबु से कॉपित तक रेजाँग नदी का प्रवाह शाँत रहता है परंतु कॉपित से आगे नदी तल चट्टानों से भरा हुआ और खतरनाक है। जिसमें बड़ी नाव से सफर करना असंभव है। पानी में होने वाली भंवरियों के कारण नदी का शांत प्रवाह अस्तव्यस्त हो जाता है। ये एक ही पेड़ के तने की बनी नावें ऐसे प्रवाह को काफी सुरक्षा से पार कर जाती हैं।

संतुलन बनाए रखने की पूरी कोशिश करते हुए हम नाव पर चढ़े। सारी सावधानी के बावजूद नाव खतरनाक ढंग से कभी इधर और कभी उधर डोलने लगी। नाव के चालक ने इंजिन चालू कर दिया। नाव के मंदान पर झुके एक सारावाक को मैंने देखा। अस्तव्यस्त बालों की लटें उसकी पीठ पर झूल रही थीं।

उसके सिर पर घनेश के पंखों की एक टोकरीनुमा टोपी थी। पालथी लगाकर वह आदमी तीक्ष्ण नज़रों से आगे पानी के प्रवाह को देख रहा था। मुझे बताया गया कि यह आदमी तीव्र प्रवाह और भंवरों से भरपूर नदी के एक-एक गज़ को जानता है। हाथों से कई अर्थपूर्ण इशारों से वह ड्राईवर से बातचीत कर रहा था। ड्राईवर उसकी सूचनाओं पर ठीक-ठीक अमल कर रहा था।

कॉपित से पाँच मील दूर रेजांग नदी में हमने नॉव को मोड़ा और सुंगाई अमांग नामक एक छोटी सहायक नदी में दाखिल हुए। जैसे ही हम इस छोटी नदी में दाखिल हुए उसकी सुंदरता से मैं हतप्रभ रह गया। इस नदी के दोनों तरफ कमान की तरह पेड़ छाये हुए हैं। नदी के हर मोड़ से यह दृश्य इतना सुंदर लगता था जैसे कि हम स्वप्नलोक में विचर रहे हों।

आखिरकार हमारी नाव पेंघुलू कूलेह के मचानघर के सामने आकर रुकी। यहाँ पर मैं पाठकों को इबान लोगों के बोर्नियो के प्रसिद्ध लाँगहाउस (मचानघर) के बारे में बता दूँ। आमतौर पर ये मचानघर नदी के किनारे बनाए जाते हैं। सारावाक में जलमार्ग ही एक मात्र रास्ते हैं। जिससे स्थानीय लोगों को नौकाओं से सफर और व्यापार आदि करना पड़ता है। किनारों पर बसना उनके लिए सुविधाजनक होता है। किनारे की साफ की गयी ज़मीन पर लकड़ी और बाँस से मचानघर बनाया जाता है। इनकी ऊँचाई बहुत होती है। इसलिए घर में दाखिल होने से पहले जमीन से घर के दरवाज़े तक लगायी गयी तनों की सीढ़ियाँ पार करनी पड़ती हैं। एक लम्बे पेड़ के तने पर बराबर की दूरी से खाँचे बने होते हैं जिनको भीने की तरह इस्तेमाल किया जाता है। कभी-कभी हाथ से पकड़ने की कुछ सुविधाएं भी होती हैं। परंतु मेहमानों को अपने ही संतुलन पर भरोसा करना पड़ता है। सीढ़ियाँ काफी बड़ी होने के बावजूद बारिश के दिनों में ऐसा लगता है जैसे कि सीढ़ी चढ़ने के बजाय आप एक चिकने खंभे पर चढ़ रहे हों।

ऊँचाई पर घर वनाने के मूल उद्देश्य को स्पष्ट देखा जा सकता है। सुरक्षा के लिए घर ऊँचाई पर वनाया जाता है। सारावाक में पुराने समय के वुरे दिनों में मचानघर जमीन से कोई एक दर्जन फुट से ज्यादा ऊँचाई पर वनाया जाना समझदारी मानी जाती थी। अगर दुश्मन घर के वाहर आ भी जाय तो घर में घुसना आसान नहीं था। घुसपैठिये और उसके इच्छित शिकार के बीच कई गजों का फासला रहता था। समझदार लोगों ने आरंभ से अपने घर इतनी ऊँचाई पर वनाए कि दुश्मन को घर के नीचे भी खड़े होकर भाले से वार करना मुश्किल था।

घर की ऊँचाई का मुख्य कारण ही सुरक्षा है, क्योंकि कोई एक सदी पहले सारावाक में शांति और व्यवस्था का अस्तित्व ही नहीं था। 'जिसकी लाठी उसकी भैंस' वाली हालत थी और अच्छी चीज़ें शक्तिशाली लोगों की ही हुआ करती थीं।

हर परिवार और हर समुदाय की सवसे वड़ी चिंता थी अपनी सुरक्षा, और इसके लिए उन्हें हर वक्त लड़ने के लिए तैयार रहना पड़ता था। इवान लोगों का घर सचमुच एक किला होता था। किला एक परिवार का घर न होकर कई परिवारों का एक ही घर होता, जिसे जीतना ज्यादा मुश्किल होता था। क्योंकि उसकी दीवारें ज्यादा मजवूत और इसमें रहने वालों की संख्या ज्यादा होती थी। वे हमलावारों से अपनी रक्षा ज्यादा अच्छी तरह से कर सकते थे। इबान लोगों के घर वड़े होने का यही मुख्य कारण था। इसमें वहुत से परिवार साथ-रहते थे। सुरक्षा के अलावा भी इस व्यवस्था के कई कारण रहे हैं। जैसे आदि-मानव की समूह में रहने की प्रवृति, सामूहिक जीवन के आर्थिक लाभ और इसी तरह की तमाम जरूरतों से यह निर्णय लिया गया कि हमारी मुख्य जरूरत एक मजवूत किला वनाने की है।

सारावाक में शरीर और जीवन की असुरक्षा जेम्स व्रूक के आने के साथ ही समाप्त नहीं हुई थी। अगली दो पीढ़ियों तक जेम्स और उसके उत्तराधिकारियों ने शांतिपूर्ण शासन के क्षेत्र का निरंतर विस्तार जरूर किया लेकिन तीसरे राजा के शासन काल में भी कभी-कभी खून के प्यासे सरदारों द्वारा नरमुण्ड आखेट के

अभियान चलाए जाते थे क्योंकि वे अपने पूर्वजों के प्रिय खेल को छोड़ना नहीं चाहते थे। इसलिए मचानघर बनाने का मूल कारण आज भी समझ में आता है। इन मचानघरों का आकार अब काफी बदल गया है। छोटे घरों में दस परिवार यानी लगभग साठ लोग रहते हैं। दूसरी ओर कुछ घरों में तो अब भी सौ से ज्यादा परिवार अर्थात सौ से ज्यादा लोग रहते हैं। बहुत से घरों में पचास से ज्यादा परिवार रहते हैं। हकीकत में मचानघर हमारी मान्यता के अनुसार घर नहीं बल्कि एक पूरा गाँव है। समुदाय का प्रत्येक व्यक्ति एक ही छत के नीचे रहता है। हर मचानघर अपने आप में अलग-अलग है। यहाँ निकटतम पड़ोसी भी थोड़े कुछ मील के फासले पर होता है। अपने क्षेत्र में एक मचानघर आस-पास के सभी लोगों का घर होता है।

घर के भीतर का हिस्सा सादा होता है। जैसे ही पेड़ के तने की बनी सीढ़ी को पार कर जब हम रेजांग स्थित इबान मचानघर पर पहुँचते हैं तो सबसे पहले हम एक खुले चबूतरे पर पहुँचते हैं जो पूरे घर में फैला होता है। उस पार करने के बाद हम मुख्य निवास स्थान पर पहुँचते हैं। जिस दीवार को पारकर हम अंदर पहुँचते हैं वह फर्श से दो तीन फुट ऊपर होती है। इस दीवार और छत के बीच की खुली जगह हवा और प्रकाश के लिए होती है। फिर एक सतत दीवार है जो पूरे घर में फैली हुई है जो घर को दो लंबे और लगभग हिस्सों में बाँट देती है। एक सिरे से दूसरे सिरे तक एक गैलरी होती है जो यहाँ से वहाँ तक एक लंबे रास्ते का काम देती है। घर को दो हिस्सों में बाँटने वाली बीच की इस दीवार में एक के बाद एक कई दरवाजे बने हुए होते हैं। ये दरवाजे निवास स्थान के दूसरे हिस्से में खुलते हैं। इन दरवाज़ों को पार करते हुए हम एक ऐसे कमरे में पहुँचते हैं जिसमें एक छोटी खिड़की से प्रकाश आता रहता है। और बाजू की दोनों दीवारों में दो दरवाजे होते हैं। जिनमें से एक दरवाज़ा दूसरे छोटे कमरे में खुलता है जो पहले कमरे के पीछे होता है और रसोईघर का काम देता है। बीच की दीवार का हर दरवाज़ा ऐसे ही एक खण्ड में खुलता है। हर खण्ड पर एक परिवार का अधिकार होता है।

पहला कमरा परिवार का खास कमरा होता है। सोने, खाने और बातचीत करने के लिए इसका उपयोग किया जाता है। परिवार वाले बाकी का सारा समय गैलरी में गुजारते हैं। एक तरह से कहना चाहिए कि गैलरी सार्वजनिक कमरा है क्योंकि इसके कई उपयोग हैं। ये गांव की एक गली के समान है जिसमें कई घरों के दरवाजे खुलते हैं। यह एक ऐसी जगह है जहाँ पर व्यक्ति अपने दोस्तों के साथ एकत्रित होता है। यहां गांव की सभा जैसी लगती हैं जहाँ गाँव के बड़े बूढ़े जवान एक दूसरे को समाचार देने-लेने, कहानियाँ कहने, उल्टी घटनाओं का जिक्र करने तथा शराब पीने पिलाने एकत्रित होते हैं। यह गाँव का

एक ऐसा क्लब है जहाँ संगीत समारोह और नाच गाने होते हैं। यहाँ जाति की सार्वजनिक सभा होती है, विशिष्ट मेहमानों का स्वागत भी इसी जगह किया जाता है। सचमुच यह गैलरी इस सामूहिक समाज में सामाजिक सेवा का प्रमुख केन्द्र है।

इबानघरों में अविवाहित युवक सार्वजनिक गैलरी में सोते हैं। कुछ प्रदेशों में तो कुंवारी लड़कियाँ भी गैलरी में सोती है। एक लकड़ी की छोटी सी सीढ़ी सार्वजनिक शयनकक्ष तक जाती है। जो युवक उन युवतियों में से किसी को चाहता है, अंधेरा होने के बाद ऊपर चला जाता है। युवती अपनी मच्छरदानी में उसका इन्तजार करती रहती है। वह युवक उसकी ओर झुकता है, देखता है, जो युवती उसे बहुत अच्छी लगती है उसके साथ बैठकर प्यार से बातें करता है या मौसम की चर्चा करता है। इसके बाद अगर युवती उस युवक को अपने लिए सुपारी लाने या सिगरेट लपेटने को कहती है तो वह समझ जाता है कि उसे युवती ने रात-भर साथ रहने की मंजूरी दे दी है। इसके विपरीत अगर वह युवती बिछौने के पास रखे हुए दीपक को जला देती है तो इसका अर्थ कि हुआ वह उस युवक को नहीं चाहती। युवक कभी भी उसके निर्णय के बारे में सवाल नहीं करता और न ही कभी उसकी इच्छा को बदलने की कोशिश करता है। इस प्रकार की किसी हरकत को असभ्यता माना जाता है। अत: युवक अगली बार सफलता की आशा लिए फिर से कुंवारों के कमरे में चला जाता है।

इबान लोगों की सामाजिक संहिता में प्रायोगिक विवाह की प्रथा को मान्यता दी गयी है। इस मान्यता के आधार पर अगर एक युवक किसी युवती के साथ कई बार सोता है इसको खास महत्त्व नहीं दिया जाता। सार्वजनिक रूप से इसे युगल के बीच प्रयोग माना जाता है परंतु यदि एक युवक कई बार एक युवती के साथ सो चुका है और वह शादी की बात नहीं चलाता तो लड़की के माँ-बाप उसके इरादे के बारे में उससे बातचीत करते हैं। अगर वह राजी हो जाता है तो ठीक और नहीं तो उसे फिर युवती की मच्छरदानी में दाखिल होने से मना कर दिया जाता है।

संक्षिप्त प्रयोग काल के बाद भी युवक और युवती शादी के लिए मना कर सकते हैं। इस प्रकार का व्यवहार उनकी शारीरिक अनुकूलता की जानबूझकर की गयी जाँच है। क्योंकि यह मान लिया जाता है कि अन्य बातों में युगल ने अपने को एक दूसरे के अनुकूल पा लिया है। आखिरी निर्णय लेने से पहले प्रत्येक युवक व युवती बहुतों के साथ सो सकते हैं।

इबान लाग जल्दी शादी कर लेते हैं। लड़कियाँ चौदह-पंद्रह साल में और लड़के उनसे कोई दो वर्ष बड़ी उम्र में। निर-अपवाद रूप से वे एक से ही शादी करते हैं और विवाह के बाद अपने साथी के प्रति वफादार रहते हैं। तलाक लेना

मुश्किल नहीं पर ऐसा बहुत कम होता है। साधारणतः इबान अच्छे पति और अच्छे पिता होते हैं।

पेंघुलू कूलेह का मचानघर सुंगाई अमाँग नदी के किनारे से कोई तीन सौ गज दूर बना हुआ था। नदी का दूसरा किनारा घने जंगलों से आच्छादित था परंतु जिस किनारे पर मचानघर स्थित था वहाँ कुछ रबर के पेड़ों और छोटी-छोटी हरी-हरी झाड़ियों के अलावा जगह साफ थी।

नदीतट और मचानघर के बीच एक बड़े पेड़ का तना रखा गया था। बारिस के दिनों में मचानघर के निवासी चिकनी ज़मीन पर चलने के बजाय उस तने वाले मार्ग से चलते हैं। भारी सामान और तुम्बा लेकर आसानी से इस विश्वास से चलते हैं, जैसे किसी सीमेंट के रोड पर चल रहे हों। जब मैं अपने साथियों के साथ उस रास्ते पर चला तो मुझे कठिनाई महसूस हुई। गाँववासियों के लगातार कीचड़ से भरे पाँवों से आते जाते रहने से तना बहुत चिकना हो चुका था। इसके गोल आकार पर चलने में और भी दिक्कत हो रही थी। मैंने अपनी सारी संतुलन शक्ति को एकत्रित किया और इस तरह चलना शुरू किया मानो सरकस की रस्सी पर चल रहा हूँ। बहुत ही मुश्किल से मैंने उसे पार किया। हमारी घबराहट देखकर बच्चे और स्त्रियाँ हँसने लगीं, परन्तु मैं क्या कर सकता था।

पेड़ के तने वाले मार्ग के आखिरी छोर पर पहुँचा तो साँस में साँस आयी। परंतु मुझे यह पता नहीं था कि और भी रुकावटें अभी पार करना बाकी हैं। मचानघर ज़मीन से अठारह फुट ऊँचा था। उस तक पहुँचने के लिए जो पेड़ का तना लगा रखा था उसको पकड़ने के लिए कोई सहारा नहीं था। मुझे मालूम था मैं इस पर नहीं चल सकता। मैं घबरा गया।

पेंघुलू कूलेह गाँव का सरदार हमें खुली गैलरी से देख रहा था। उसने हमारी मुश्किल को समझा और हम कुछ तय करें इससे पहले ही दो जवानों को बाँस लेकर खड़ा कर दिया जिसके सहारे से हम ऊपर तक पहुँच सके। ऊपर पहुँचने पर हमें देखकर पेंघुलू प्यार से मुस्कराया।

कूलेह बूढ़ा था। वह बारह मचानघरों का सरदार था। उनके आपसी झगड़ों को निपटाता तथा सरकार में उनका प्रतिनिधित्व करता था। वह सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त था तथा उसे अपनी सेवाओं के लिए सरकार की ओर से मानदेय प्राप्त होता था। वह औपचारिक पोषाक में था। क्योंकि उसे हमारे आने की खबर नहीं थी। हमेशा की तरह लंगोटी लगाए हुए था। उसके लंबे बाल गाँठ मार कर पीछे बंधे हुए थे। चेहरे पर अधिकार भावना और स्नेहशीलता देखी जा सकती थी।

जैसे ही हमने सीढ़ी पार की और खुली गैलरी के लकड़ी के फर्श पर कदम

रखा, कूलेह ने हमारा स्वागत किया। एक पंद्रह वर्षीय बाला ने आगे बढ़कर मुझे एक गिलास दिया जिसमें तरल पदार्थ था जिसमें से निश्चित रूप से शराब की बू आ रही थी।

'बुआई' उस लड़की ने कहा, पर मेरी समझ में कुछ नहीं आया। चाँग साहब ने बताया कि इस तरल पदार्थ को मेरे कंधों के ऊपर से आत्मा पर गिराना है जो मेरे साथ मेरे भीतर में थी। इबान मान्यता है कि प्रत्येक व्यक्ति जहाँ कहीं जाता है अपने साथ अदृश्य साथी, एक रक्षक देवदूत या एक शैतान ले जाता है। घर आने वाले मेहमान की मेहमाननवाज़ी की पहली क्रिया यह है कि साथ आने वाली प्रेतात्मा को संतुष्ट किया जाय। ताकि उसे महसूस हो कि उसका स्वागत किया गया। और वह प्रसन्न होकर घर के लोगों की शुभचिंतक रहे।

इसके बाद पेंघुलू कूलेह हमें अपने कमरे के पास की बंद गैलरी में ले गया। गैलरी पर बेंत की बनी हुई एक सुंदर चटाई बिछी हुई थी। हम सब पालथी लगाकर उस पर बैठ गये। चाँग साहब सरदार से लगातार बातें करते रहे थे। और वह बूढ़ा बार बार मेरी ओर देख कर सिर हिलाता रहा। इतने में हमारी नाव वाला आदमी सरदार के लिए लायी गयी भेंट ले आया। कूलेह ने इसे शान के साथ स्वीकार किया। उसे गैलरी में रखा गया, जाहिर था शाम को गाँव वाले एकत्रित होंगे तो उनमें बाँटा जायेगा।

बातचीत के दौरान अचानक मेरा ध्यान गया कि बूढ़े सरदार के हाथ का पिछला हिस्सा कलाई से अंगुलियों तक नीले रंग के गोदने से गोदा हुआ है। यह गोदना इस बात की निशानी था कि सरदार नरमुण्डों का एक बहुत बड़ा शिकारी है। पुराने जमाने में जब कोई नरमुण्ड शिकारी एक नरमुण्ड का शिकार करता था तो उसे यह अधिकार मिल जाता था कि उसकी एक उँगली के एक जोड़ पर एक गोदना गोदा जाय। हर नये नरमुण्ड के साथ उँगलियों के नये नये जोड़ों को नीले काले रंगों में रंगा जाय। जब मारे गये व्यक्तियों की संख्या इतनी ज्यादा हो जाती कि दोनों हाथों के दोनों अंगूठों, सारी उँगलियों के सारे जोड़ खत्म हो जाते तो हाथ के पिछले हिस्से की कलाई की ओर गोदना बनाया जाता। कूलेह ने उँगलियाँ अंगूठे और हाथ को पूरी तरह से इन गर्व के प्रतीकों से सजाया हुआ था।

बूढ़े सरदार ने थोड़ी देर तक मेरी तरफ देखा और टूटी-फूटी मलय में बोला, जिसका अर्थ था आप थक गये होंगे। वह उठा और मुझे अपने पीछे आने के लिए कहा। मैं उसके पीछे हो लिया। वह मुझे अपने खण्ड में ले गया। उसमें बेंत की चटाई बिछाई हुई थी। कोठरी में दो तीन चीनी ज़ार रखे हुए थे। अलग-अलग उम्र की चार पाँच स्त्रियाँ हमेशा की तरह अधनंगी, फर्श पर बैठी थीं। पेंघुलू ने कुछ कहा और बच्चे को दूध पिला रही एक युवती ने उठकर एक चटाई बिछाई। पेंघुलू ने मुझे उस पर लेटने और सो जाने को कहा।

लेकिन मैं इन चार-पाँच अधनंगी स्त्रियों के बीच कैसे आराम कर सकता था। ये स्त्रियाँ मुझे मनुष्य के विचित्र नमूने की तरह देख रही थीं। कमरे के दूसरी तरफ का दरवाज़ा भी खुला छोड़ दिया गया था। जिससे होकर छोटे-छोटे लड़कों की एक टोली अंदर घुस आयी। वे मेरे बिछौने के बहुत करीब आ गये। वे मुझे देखते-फिर आपस में एक दूसरे को देखते—हीं-हीं करते और फिर सभी एक-दम बाहर भाग जाते।

उसके बाद कमरे में एक बूढ़ी औरत आयी जिससे मातृत्व झलक रहा था। उसने मेरी ओर देखा। पानी का एक गिलास भर कर मुझे दिया। मैं कुछ हिच-किचाया फिर पानी पी गया। उस औरत ने दीवार पर टंगी पारंग (इबान तलवार) उतारी, उसे म्यान से बाहर निकाला और मेरे सिर के पास, एक कोने में बैठ गयी। मैं आश्चर्य से उसकी तरफ देखता रहा। मेरे आश्चर्य में भय भी मिश्रित था। उसने सुपारियाँ निकाली और एक सुपारी के टुकड़े कर दिये। फिर बाँस के डिब्बे से पान निकाले उन पर चूना लगाया और पत्ते पर सुपारी के कुछ टुकड़े रखे। वह उसे खुद खाने जा रही थी कि उसने मेरी ओर देखा। मुझे इसकी उम्मीद नहीं थी इसलिए मुझे उसकी ओर से क्षण-भर नजर हटाने का मौका भी तो नहीं था। वह मुस्कराई और पूछा; 'अनाक, का दे मकाई सिरैया ?'

मैं एक शब्द भी नहीं समझ सका पर उसके इशारों से पता चला कि वह मुझे पान दे रही है। मैं जानता था कि अगर आदत न हो तो इस ताज़ा सुपारी से चक्कर आने लगते हैं। मैं यह भी जानता था कि असम में मेहमानों के सम्मान में 'गुआ तामूल' दिया जाता है (गुआ का अर्थ सुपारी और तामूल ताम्बुल का संक्षिप्त रूप होता है) मुझे नहीं पता कि क्या करना चाहिए इसलिए मैंने सिर हिला दिया। बूढ़ी औरत के चेहरे पर प्यार भरी मुस्कान फैल गयी। उसने सुपारी के साथ लगा पान मुझे दिया। पान ज्यों ही मुँह में डाला मैं उन्हीं में से एक हो गया। कमरे में बैठी अन्य औरतों ने भी सुख का अनुभव किया। क्योंकि कम से कम यह एक आदत तो मुझमें उनकी तरह ही थी। अपनी खुशी को छुपाने के लिए वे आपस में बातें करने लग गयीं।

बाद में मुझे मालूम हुआ कि वह बूढ़ी औरत सरदार की पत्नी थी। और मचानघर के ज्यादातर लोग उसे 'एनॉय' के नाम से पुकारते हैं जिसका अर्थ होता है—'माँ'। शुरू से ही उसने मुझे अनाक अर्थात् बेटा कहा इसलिए मैं भी उसे एनॉय अर्थात् माँ कहने लगा। वह मेरे लिए माँ से बढ़कर साबित हुई पर यह बात मैं बाद में बताऊँगा।

दोपहर के बाद मैं पेंघुलू के साथ बैठा बातें कर रहा था। उसने बताया कि जब मचानघर के लोग शाम को घर लौटेंगे तो हमारा विधिवत स्वागत किया जायेगा। मैंने चाँग साहब से विनती की कि मैं मद्यपान नहीं करता इसलिए

शराब की महफिल में शरीक होने की वे मुझसे उम्मीद न करें। चाँग साहब ने बूढे सरदार को समझाया। सरदार ने शरारती नज़रों से मेरी तरफ देखा और सिर हिला दिया। उसने कहा इस सम्बन्ध में मैं कुछ नहीं कर सकता। लड़कियाँ समारोह के दौरान ज़बरदस्ती पिलाएंगी। मैं घबरा गया। मैंने कहा, अगर ऐसा है तो मैं समारोह में हिस्सा नहीं लूँगा। सिर्फ एक दर्शक की हैसियत से देखता रहूँगा।

बहुत समझाने के बाद सरदार ने हँस कर कहा कि जब भी कोई लड़की पीने को कहे तो मैं स्वीकृति दर्शाने के लिए उँगली से छू लूँ और 'निरूप' कहूँ। इसका अर्थ है 'तुम पियो' और जैसे ही वह पीना शुरू करे प्याले को उसके मुँह से लगाये रखूँ। जब तक शराब की एक एक बूँद उसके गले न उतरे, मैं उसके सिर को ऊपर न होने दूँ। यह काम मुश्किल था परंतु मानसिक रूप से मैंने अपने आप-को इसके लिए तैयार किया, क्योंकि अपने आप में शराब से बचने का और कोई उपाय था ही नहीं।

उस दिन धूप फैली हुई थी। मैंने देखा कि पेड़ के तने की सीढ़ी उस दिन की तरह रपटीली नहीं थी, जिस दिन हम यहाँ आये। पेड़ के तने की सीढ़ी के पास हाथ के सहारे के लिए एक डण्डा भी ठोंक दिया गया था। हम नहाने के लिए नीचे नदी पर आये। खाना हम अपने साथ ही ले आये थे, जिसे हमने नाव पर ही खा लिया।

वहाँ से लौट आने पर सरदार हमें गैलरी में ले गया, जहाँ सभी प्रकार के इवान व्यजनों की प्लेटें सजाई हुई थीं। इन प्लेटों के पास पाँच छः लड़कियाँ, बच्चे तथा कुछ स्त्रियाँ खड़े थे। मुझे डर लगा कि सौजन्यवश इन सभी व्यंजनों में से अगर थोड़ा बहुत चखना पड़ा तो इससे मेरी तबीयत जरूर खराब हो जायेगी।

बाद में मुझे पता चला कि चटाई पर सजाये सभी व्यंजन, मनुष्यों के भोजन के लिए नहीं थे। वे तो अच्छी और बुरी आत्माओं के लिए रखे गये थे। बोर्नियो के बहुत से जंगली आदमियों ने अभी भी अपने पूर्वजों की अनगिनत पीढ़ियों से चले आ रहे विश्वासों को कायम रखा था। ये लोग कुछ श्रेष्ठ देवताओं में भरोसा रखते थे, इनमें से तीन देवता मुख्य थे। पहला मनुष्य का सृजक, दूसरा खेती-बाड़ी का रक्षक और तीसरा युद्ध का निर्णायक। इन अलौकिक शक्तियों के श्रेष्ठक्रम में आत्माएँ सबसे नीचे हैं। उनका विश्वास था कि जंगलों और नदियों, पर्वतों और धान के खेतों पर छोटे देवताओं का शासन था। ये देवता प्राणियों के व्यवहार के माध्यम से अपनी इच्छाएँ प्रकट करते थे। इनके खास माध्यम थे—हरे रंग के मकड़खौना पक्षी, चमकीले, बैंगनी, काले सौमित ट्रोगोन और मंडराते हुए बड़े-बड़े बाज। घर बनाने, खेती के लिए ज़मीन तैयार करने, शादी

तय करने या सफर करने जैसे किसी भी जरूरी काम के लिए, पहले इबान लोग इन प्राणियों की चेष्टाओं का अध्ययन करते थे। अगर पक्षी कोई खास प्रकार का व्यवहार करता तो सगुन अच्छे होते हैं अन्यथा नहीं। इस आधार पर ये लोग अपनी ज़िंदगी का व्यवहार तय करते।

एक और प्राणी, जिसके माध्यम से आत्माएँ बोलती हैं--काकड़ (बार्किंग डियर) कहा जाता है। काकड़ उन अदृश्य शक्तियों का प्रतीक है जो मनुष्यों का भाग्य निश्चत करती हैं। कभी कभी ये आत्माएँ ओझा को सपने में आकर सूचनाएँ देती हैं। इन ओझाओं का दावा है कि दूसरी दुनिया के साथ उनका सीधा सम्पर्क है। हर मचानघर में एक ओझा जरूर होता है।

पेगन्स लोगों की सारी उम्र बुरी आत्माओं को खुश रखने में और अच्छी आत्माओं से मैत्री रखने में बीत जाती है। इसके लिए वे पुराने समय से चले आये सामाजिक आचरण के अनुसार धार्मिक निषेधों और प्रायश्चितों का पालन करते रहते हैं। इनमें से एक काम था—देवताओं और राक्षसों को समय समय पर भोजन और शराब देना। एक अजीब रस्म यह भी थी कि उनके घर आये विशिष्ट मेहमान के हाथों आत्माओं को भोजन खिलाया जाये। कहा जाता है कि अच्छी और बुरी आत्माओं की अदृश्य भीड़ इस सत्कार से खुश हो जाती है। ऐसे अवसरों पर दिये गये भोजन में कई स्वादिष्ट पदार्थ होते हैं। भोजन की तैयारी के साथ-साथ एक विधिवत् समारोह भी होता है। जिसे 'बेदारा' कहा जाता है।

सबसे पहले पेंघुलू कुलेह ने मुझे अपना हाथ आगे बढ़ाने को कहा। मैंने हाथ आगे बढ़ाया। उसने मेरी कलाई पर तांबे का एक कंगन बांधा। यह कंगन मित्रता का प्रारंभिक संकेत था। रेजांग नदी के इबान लोगों के भाईचारे की यह पहल थी।

चटाई पर मेरे सामने बीसेक तश्तरियाँ चार कतारों में रखी हुई थीं। प्रत्येक तश्तरी में स्थानीय निवासियों का खाद्य पदार्थ रखा हुआ था। एक लड़की ने मेरे सामने एक बड़ी प्लेट रखी। इस बड़ी प्लेट में मुझे प्रत्येक तश्तरी में से लेकर थोड़ा-थोड़ा व्यंजनों का नमूना रखना था। प्लेट काफी बड़ी थी परंतु जल्दी ही उसमें रखी जा रही थोड़ी-थोड़ी चीजों के कारण छोटी पड़ गयी। मैंने सभी तश्तरियों में से थोड़ा थोड़ा लिया और बड़ी प्लेट में इकट्ठा किया। पेंघुलू कुलेह और स्त्रियाँ मेरे काम को बड़े शौक से देख रहे थे। इन पदार्थों के रखने में बीच बीच में ये लोग भी मेरी मदद करते ताकि सारा समान गिर कर बिखर न जाय।

जब प्रत्येक तश्तरी में से थोड़ा-थोड़ा ले लिया गया, तो एक लड़की ने अण्ड़ों से भरी एक तश्तरी मेरे सामने रखी। उसने मुझे खाद्य पदार्थ की बड़ी प्लेट वाली सजावट पर चार अण्डे सीधे खड़े रखने के लिए कहा। इस तरह

वह महल किसी पागल की उटपटाँग अनोखी रचना की तरह लग रहा था। आखिर में एक लड़की ने घर की बनी टुआँक शराब का एक भरा हुआ प्याला मुझे दिया, जिसको मैंने उन चार अण्डों के बीच खाद्य पदार्थ की चौकोन चोटी पर सजा दिया।

इतने में एक मुर्गे को उल्टा पकड़े हुए एक ओझा आया। कुलेह के आदेशानुसार मैंने मुर्गे को खाने की सज़ी प्लेट पर उल्टा घुमाया। ऐसा करते हुए मैं मचानघर के निवासियों के प्रति आशीर्वचन बुदबुदाने लगा। उस वक्त मुर्गा जिस तरह शाँत था उसकी प्रशंसा करनी चाहिए। परंतु उसका भविष्य अंधकारमय था, क्योंकि उसकी बलि दी जाने वाली थी। मैंने उस मुर्गे को वापिस ओझा को दे दिया। उसने उसे दूर ले जाकर काट डाला और कुछ क्षणों बाद उसकी पूंछ के कुछ पंखों के साथ वापिस लौट आया। चूँकि उन पंखों को मुर्गे के खून में डूबोया गया था इसलिए उन्हें विशिष्ट पवित्रता प्राप्त हो गयी थी।

इसके बाद मुझे अदृश्य मेहमानों यानी आत्माओं को वह भोजन अर्पित करने को कहा गया। हमारे पीछे की खुली गैलरी में ज़मीन पर एक बाँस का खंबा लगाया गया था। उसके ऊपरी हिस्से को छः खपच्चियों में बाँटा गया जो लकड़ी के किसी हाथ की फैली हुई अंगुलियों की तरह लग रहा था। फिर, जैसा मुझे बताया गया मैंने आत्माओं के भोग के लिए वह प्लेट बाँस की एक खपच्ची पर रख दी ताकि वे आत्माएँ उसका आनंद ले सकें।

शाम होते होते सभी निवासी अपने दैनिक कार्यों से घर लौटने लगे। गैलरी में धीरे धीरे भीड़ होने लगी। आदमी या तो इधर उधर टहल रहे थे या बैठकर बातें कर रहे थे। गैलरी में आदमियों के अलावा और भी प्राणी भीड़ बढ़ा रहे थे, मसलन-कुत्ते जो एक दूसरे को सूँघते हुए सूं सूं करते हुए, अशिष्ट ढंग से इधर उधर भाग दौड़ मचा रहे थे। इबान लोग हिरण तथा जंगली सूअरों का शिकार करने के लिए संकर जातीय कुत्ते पालते हैं। ये कुत्ते भी वहीं बैठे हुए थे और इनके शरीर से पिस्सू चिपके हुए थे। चूज़े तेजी से इधर उधर भागते, बड़ी सावधानी से अपने मालिकों के पावों के बीच से निकल जाते परंतु जब कभी वे ठीक से भाग नहीं पाते और उनकी पूँछ किसी के पाँव तले दब जाती तो कूँ कूँ करने लगते। पेंघुलू कुलेह के कमरे के दरवाज़े के दोनों तरफ दो सुँदर ताजे मुर्गे खूंटी से बांधे हुए थे। मुर्गे लड़ाने का खेल यद्यपि गैर कानूनी है फिर भी नदी के ऊपरी हिस्से के लोगों में बहुत ही लोकप्रिय है। मुर्गे खूबसूरत और रंगीन थे, ऐसे अभिमान से सिर उठाए खड़े थे मानो उन्हें इस बात का अहसास हो कि वे पालतू प्राणियों में सबसे श्रेष्ठ हैं।

इस भीड़ में लोग आपस में बातचीत कर रहे थे, जिससे काफी शोर था। इनसानों की बातों के बीच कुत्तों का भोंकना मुर्गों की कूकड़कू, मुर्गियों की कू कू और

सूअरों की घुरघुराहट भी शामिल थी। सूअर गैलरी में नहीं रखे जाते। वे नीचे तल में रखे जाते हैं। इबानघरों की सारी गंदगी नीचे के तल में होती है। ये सूअर बार बार इस गंदगी को सूंघने की आवाज़ कर रहे थे।

रात हुई और गैलरी में बत्ती जला दी गयी। धीरे धीरे गैलरी में सारा गाँव इकट्ठा हो गया। इसके बाद लिंगा और नागि नामक दो युवा लड़कियाँ समारोह की पोशाक पहने वहाँ आयीं। लिंगा मेरे सामने विनम्र मुद्रा में घुटने टेक कर बैठ गयी। टूआँक शराब से भरा एक मग्गा उसने मेरी तरफ बढ़ाया और फिर एक लम्बा आख्यान गीत गाने लगी जिसमें अनगिनत पद थे। मचान-घर की युवतियों को, विशिष्ट मेहमानों के पेन्टुंस नामक संगीतमय स्वागत के लिए ऐसे आख्यान तैयार करने की शिक्षा दी जाती है। हर लड़की गाते वक्त एक पद इसमें और जोड़ देती है। प्राचीन लोकगीतों की तरह यह भी एक गीत ही था। इसकी कथा माननीय मेहमान के व्यक्तित्व के आधार पर थी। इस गीत में इस बात की कोई सीमा नहीं कि गायक अपने मेहमान की कितनी भी तारीफ करे।

लिंगा जब हाथ में शराब का प्याला लिए गा रही थी, तो पेंघुलू कुलेह मेरी ओर देखते हुए मुस्करा रहा था। गीत खत्म होने पर लिंगा ने प्याला मेरी तरफ बढ़ाया। मैंने चुपचाप पेंघुलू की ओर देखा और अंगुलियों से प्याला छू कर कहा, 'निरूप'।' लिंगा ने प्याला अपने ओठों से लगाया। और जैसा कि मुझे बताया गया, मैंने एक हाथ उसके सिर के पीछे रखा और दूसरे हाथ से प्याले को उसके ओंठों से लगाए रखा जब तक कि उसने वह शराब का प्याला खाली न कर दिया। लिंगा ने मेरी तरफ आश्चर्य से देखा क्योंकि मेरा तनाव खत्म हो गया था और उधर पेंघुलू जोर से ठहाका लगाकर हँस रहा था।

फिर नागि ने चिन साहब के लिए गीत गाया और लिंगा मेरे और नज़दीक आ गयी। समारोह के अंत तक लिंगा को मेरी देखभाल का काम सौंपा गया था। न तो वह मेरी भाषा जानती थी और न मैं उसकी भाषा।

चिन साहब को कोई परेशानी नहीं हुई। गीत के बाद नागि द्वारा दिया गया प्याला वे पी गये और बिल्कुल अलग ही लगने लगे थे। इबान लोगों द्वारा बनायी गयी यह शराब बहुत ही तेज़ होती है। जिसको इसकी आदत न हो, वह एक प्याला भी सहन नहीं कर सकता।

इसके बाद सरदार ने मचानघर के निवासियों से मेरा परिचय एक ऐसे आदमी के रूप में करवाया जो उनकी जिंदगी को करीब से देखने आया था। उसने हमारी दी हुई भेंट भी उन्हें बताई। सरदार ने उन्हें यह हिदायत दी कि मचानघर के मेहमान के नाते वे मुझे पूरा स्नेह और आदर प्रदान करें।

फिर सरदार ने कुछ नौजवानों को भेंट बांटने के लिए कहा। बूढ़े लोगों को

शराब दी गयी। बच्चों को मीठे पेय पदार्थ, और मिठाई तथा बिस्कुट दिये गये। यह सारी प्रक्रिया इतनी सहजता से हो रही थी कि मानो इसका उन्होंने कई दिनों तक अभ्यास किया हो। मैं बच्चों का बरताव देख कर हैरान था। बच्चे अपना हिस्सा पाने को बिल्कुल शोर नहीं मचाते बल्कि इसके बदले जब पास वाले बच्चों को चीज़ें दी जातीं तो चुपचाप खड़े रहते और जब अपना हिस्सा मिल जाता तो खुश होकर मुस्करा देते। पेघुंलू कुलेह के मचानघर के बच्चों तथा इसके बाद जिस किसी भी मचानघर में गया हूँ, उन सब बच्चों जैसा व्यवहार करने वाले बच्चे मैंने अब तक नहीं देखे।

इसके बाद दो चारणों ने घण्टे बजाने शुरू किये, एक स्थानीय निवासी ने ढोल पर कुछ थापें दीं। सब लोग नृत्य के लिए तैयारी करने लगे। लिंगा विनम्र मुद्रा से उठकर मेरे बगल में आकर खड़ी हो गयी।

बाहर के अंधेरे को पार करते हुए एक युवक उजाले में आया। उसने धनेश पक्षी के पंखों से बना एक वारकोट पहन रखा था। उसके सिर पर फैजेण्ट पक्षी के पंखों की कलंगी वाली टोपी थी। उसने कमर पर पारंग बाँधी हुई थी। उसने म्यान को ज़मीन पर रख दिया फिर नृत्य की शुरूआती मुद्रा में ताल देने से पहले थोड़ा हिचकिचाया और उसके बाद वह पुतले की तरह खड़ा हो गया। फिर कुछ देर तक वह हिचकिचाता रहा और फिर इबान नृत्य की शुरूआत में अचानक चीखकर और उछलकर नृत्य की शुरूआत की। हमेशा की तरह ही इस नृत्य की कथावस्तु थी—नरमुण्ड शिकार। युवक ने अपने शिकार का पता लगा लिया था। भयंकर लड़ाई होती है और फिर वह दुश्मन का गला काट देता है। सिर को लेकर खुशी से नाचता रहता है। इसके बाद जो नृत्य हुआ वह नरमुण्ड को मचानघर तक लाने की रस्म के रूप में था। वह नरमुण्ड हर घर के दरवाज़े के सामने बेंत की टोकरी में टंगे बहुत से विजय चिन्हों में से ही एक था। परंतु नृत्य करने वालों ने ऐसा दर्शाया कि यह नरमुण्ड घर में लटकाने के लिए तैयार नहीं किया गया है। तीन स्त्रियाँ एक पंक्ति में होकर धीमे ताल पर नाचने लगीं। उनके चेहरे पर अंत्येष्टि के भाव थे। एक छोटा घेरा बनाकर वे मायाविनियों की तरह आगा पीछा करने लगीं। उनमें से एक ने नरमुण्ड को केले के पत्ते से बांध कर पकड़ा था। फिर चार व्यक्ति आये, वे सभी ओझा थे। वे मंत्र पढ़ते हुए उन स्त्रियों के घेरे के आस-पास घूमने लगे। उसके बाद मुझे ऐसा प्रतीत हुआ कि नरमुण्ड लटकाने लायक हो चुका है, क्योंकि नाच धीरे धीरे मातम के साथ शोक-पूर्ण रूप से धीमा होता गया और नाचने वाले बिखर गये।

समारोह के बाद हम पेंघुलू के कमरे में सोने चले गये। अचानक बादल ग़रजने लगे। एक क्षण में छत पर बारिश होने की आवाज़ होने लगी। थोड़ी देर में भयंकर तूफान आया। घर के ऊपर जोरदार बादल गरज़ रहे थे। पवन की

ज़ोरदार चीखें आ रही थीं। मूसलाधार बारिश छत पर इस तरह गिर रही थी जैसे समुद्र में भयंकर ज्वार आया हो। शायद शाम की हमारी भेंट में कुछ कमी रह जाने के कारण दुष्ट आत्माएं बुरा मान गयी होंगी। यह तूफान उष्णकटिबंधिय प्रचण्ड और अल्पकालीन था, जो तुरंत ही शांत हो गया। तूफान के शाँत होते ही हम सो गये।

दूसरे दिन सवेरे चांग साहब ने हमारे लिए चाय बनाई। हमने छोटी नदी में स्नान किया, हल्का नाश्ता किया। फिर चिन साहब और चांग साहब कॉपित चले गये ताकि लौटते समय वे मुझे एक दो और मचानघर दिखा सकें। मैंने पेंघुलू कुलेह से कहा कि वे मुझे अपना धान का खेत दिखाएँ। कुलेह ने मुझसे कहा कि पिछली रात हुई भारी बरसात के कारण वहां जाना मुश्किल है। जब मैंने ज्यादा आग्रह किया तो उसने मुझे अपने दामाद के साथ नज़दीक के धान के खेत में भेज दिया।

इवान लोगों की अर्थव्यवस्था सरल है। पुन्नास और अन्य खानावदोश टोलियों के अलावा वाकी सभी कवीले मुख्य-रूप से खेती और मछलीमारी से गुज़ारा करते हैं। यह लोग मछली पकड़ना, शिकार करना तथा व्यापार का काम भी करते हैं। कुछ लोग सपाट और सिंचाई की जमीन पर थोड़ी मात्रा में गीला धान उगाते हैं। उनका मुख्य भोजन चावल है इसलिए उनका मुख्य काम है चावल पैदा करना। ज्यादातर लोग सूखा धान उगाते हैं। यह धान पहाड़ के बाजूओं की जमीन को अनाड़ी ढंग से काटकर उस पर उगाया जाता है। कृषि का यह आदिम तरीका आज भी प्रचलित है।

योग्य मौसम में जब शकुन अच्छे हों तो मचानघर के चतुर लोग वर्ष की फसल वोने के लिए योग्य क्षेत्र का चुनाव करते हैं। इसके वाद इस क्षेत्र का जंगल साफ कर दिया जाता है ताकि उसका खाद तैयार किया जा सके। पुरुष और स्त्रियाँ एक साथ मिलकर बीज वोते हैं। मकई और दूसरे अनाज भी वोते हैं। ज़मीन के अधिकांश हिस्से पर चावल वोया जाता हैं। पुरुष जमीन में आगे-आगे चलकर छेदों की कतार वनाते जाते हैं और स्त्रियाँ पीछे पीछे उन छेदों में वीज डालती जाती हैं। इसके वाद खेत के चारों तरफ वाड़ वना दी जाती है, जिससे जंगली सूअरों और हिरणों से फसल को बचाया जा सके।

धान वोने के वाद उसकी देख-रेख का काम स्त्रियों के जिम्मे होता है। वे क्यारियों की निराई का काम करती हैं। नन्हें नन्हें पौधों की देखभाल का काम करती हैं। जब वे फसल के तैयार होने की खबर देती हैं, तो मचानघर के सभी लोग वहाँ इकट्ठे हो जाते हैं। फसल को सुखाने और जमाकर के घर लाते समय ये लोग शराब पीते हैं और दूसरे कई उत्सव मनाते हैं। इसके बाद फसल तैयार होने के बाद मनाए जाने वाले उत्सव कई दिनों तक चलते रहते हैं।

ज़मीन के एक ही टुकड़े पर लगातार दो फसलें नहीं होतीं इसलिए समझदार लोग दूसरे वर्ष पहाड़ की बाजू पर ऐसी दूसरी अछूती ज़मीन का चुनाव करते हैं जो मचानघर से ज्यादा दूर नहीं होती। किसी खास उपजाऊ ज़मीन पर अगले बसंत में खेती की जा सकती है। पर कभी न कभी तो मचानघर के आस-पास की सारी ज़मीन का उपयोग हो चुका होता है। फिर लोगों को अपना

काफ़िला दूसरी जगह ले जाना होता है।

नयी ज़मीन कौन-सी हो सकती है, इस बात को ओझा सपने में देखता है। फिर वह और अन्य गाँववासी उस ज़मीन की खोज में निकलते हैं। तेज उड़ान वाले मकड़खौना पक्षी ट्रोगन की उड़ान का अध्ययन किया जाता है। फिर इसके बाद नये घरों के स्थान की आख़री ज़मीन का फैसला कर लिया जाता है। फिर लोग नावों में सामान लाद कर नदी के ऊपर वाले या नीचे वाले हिस्से में चले जाते हैं।

खेती के लिए ज़मीन बदलने के कारण नदी किनारे पर फैले घने जँगलों का नाश होता है। इसी कारण से बड़े पैमाने पर ज़मीन की उर्वरा शक्ति भी नष्ट होती है तथा कीमती काष्ठ सम्पत्ति का भी नाश होता है। इस स्थानीय कृषि को कायम रखते हुए,इसे कैसे रोका जाय, यह यहाँ की सरकार की मुख्य समस्या है।

चावल की खेती के अलावा हर गाँव में लोग सूअर और मुर्गी पालने का काम करते हैं। स्थानीय लोगों के भोजन में विविधता लाने का आधार है सूअर, बंदर, हिरण और दूसरे जंगली जानवरों का शिकार, नदी से पकड़ी गयी मछलियाँ और जँगल से प्राप्त किये गये फल।

बाहरी दुनिया में व्यापार के लिए जंगल से कई चीज़ें एकत्रित की जाती हैं जैसे : गेटापारचा, साबूदाना, कपूर, डाँवर बेंत, मधु, मोम और खाद्य पक्षियों के घोंसले। इन चीज़ों को एकत्रित कर कबीले की नौका में लादा जाता है, फिर नदी के किनारे नीचे की तरफ किसी निकटतम व्यापार केन्द्र पर ले जाया जाता है।

रेजाँग नदी के किनारे पर काँनोवित, साँग और काँपित जैसे कई व्यापार केन्द्र हैं। साहसी चीनी व्यापारी मुनाफा कमाने की अपनी शाश्वत इच्छा को पूरा करने के लिए ऐसे कई स्थानों पर बसे हुए हैं। उनकी कतारबद्ध दुकानें, जंगल में रहने वाले स्त्री-पुरुषों के लिए चुंबक का कार्य करती हैं। क्योंकि इन दुकानों में स्थानीय लोगों को आकर्षित करने के लिए रंगबिरंगी, भड़किले रँग की पोशाकें सस्ते गहने और दूसरी कई आकर्षित करने वाली चीज़ें रखी जाती हैं।

समय-समय पर मचानघर के सरदार अपनी पत्नियों और पुत्रियों के साथ ऐसे केन्द्रों पर एक दो दिन के लिए आते हैं। वे जंगल से प्राप्त चीज़ों के बदले सिंगापुर, हाँगकाँग, और दूसरे प्रदेशों की बनी सिल्क की साफ सुथरी चीज़ें खरीदकर ले जाते हैं। यह व्यापार वस्तु अदला-बदली के आधार पर होता है। नदी के ऊपरी हिस्से के गोदना गोदे हुए जँगली लोगों से चालाक चीनी लोग मुस्कराते हुए सौदे बाजी करते हैं, यह दृश्य बड़ा मज़ेदार होता है। अपनी जातीय पोषाक में लड़कियाँ यहाँ के रास्तों की दुकानों पर खरीददारी करने निकलती हैं। गले के लिए सुंदर हार खरीदना चाहती हैं, कानों के लिए बुंदे

खरीदना चाहती हैं, ताकि वे ज्यादा खूबसूरत दिखायी दें। यह दृश्य भी बहुत दिलचस्प होता है।

उस दिन सुबह जब मैं सालेह के साथ धान का खेत देखने गया तो मैंने देखा कि संगाई अराँग नदी में पिछली रात हुई मूसलाधार बारिश के कारण नदी भरी हुई है। मैं और सालेह एक डोंगी में बैठे थे। यह डोंगी एक पेड़ के तने को काटकर बनायी गयी थी। सालेह डोंगी को नदी के प्रवाह के विरुद्ध चला रहा था। नदी के दोनों किनारों पर पेड़ों से पानी टपक रहा था। आकाश साफ था और सूरज चमक रहा था। मुझे लगा जैसे मैं किसी अलौकिक दुनिया में हूँ।

जैसी ही सालेह डोंगी से किनारे पर उतरा, डोंगी इतनी जोर से हिली कि मैं संतुलन खो बैठा। और यथार्थ की दुनिया में वापिस लौट आया। सालेह हँसा उसने किनारे पर उतरने में मेरी मदद की। उसने डोंगी को पेड़ की जड़ से बाँध दिया और बताया कि हमें ऊपर जाना है। चढ़ाव मुश्किल से पंद्रह फुट था। इतना कठिन और चिकना था कि देखकर मुझे घबराहट होने लगी। वहाँ पकड़ने को कुछ नहीं था। जड़ों और छोटे-छोटे पौधों को पकड़कर ऊपर चढ़ते हुए मैंने सालेह को देखा। बिना किसी खास प्रयत्न के वह ऊपर पहुँच गया और मेरी राह देखने लगा। मैंने धन को देखने का दृढ़ निश्चय कर रखा था। सहज ही मुझे लगा कि मेरे दिमाग में जो फिल्म थी, उसके किसी दृश्य का निर्माण धान के खेत में हो सकेगा। मैंने सारी हिम्मत बटोर, जड़ों और पेड़-पौधों को पकड़ते हुए और कभी-कभी चौपाया होकर ऊपर चढ़ने का प्रयत्न किया। कई बार गिरते गिरते बचता हुआ मैं आखिर उपर पहुँच ही गया।

वहाँ खड़े होकर मैंने सारे खेत को इत्मिनान से देखा। वह झोंपड़ी भी देखी जिसमें लोग रहते थे और जंगली जानवरों से फसल की रक्षा करते थे। तीनों ओर घने जँगल और सामने लहलहाते पौधे पानी में उठती लहरों की तरह दिखायी दे रहे थे। इस दृश्य ने मुझे इतना प्रभावित किया कि मैं भूल गया कि ज़मीन गीली और रपटीली है, मुझे सँभल-सँभल कर कदम रखना चाहिए। दिमाग में इस दृश्य के बारे में सोचते-सोचते आगे की ओर चलने लगा, अचानक इस तरह फिसला कि मेरे दाहिने हाथ का अँगूठा ज़ख्मी हो गया। फिर मैं उठा, सावधानी से कदम उठाता हुआ खेत के चारों तरफ घूम गया। परंतु गिरने के कारण मैं पावों को ठीक से नहीं सँभाल पा रहा था। दर्द बढ़ने लगा, पता चला कि अँगूठा बहुत ज़ख्मी हो चुका था।

किनारे पर जहाँ हमारी डोंगी बंधी थी, पहुँचने पर पता चला कि चढ़ने की बजाय उतरना कितना मुश्किल था। गिरने के बाद मेरा सारा शरीर कांपने लगा था। मुझे यकीन था कि मैं वापिस नहीं उतर पाऊँगा, मैंने सालेह से कहा। यद्यपि वह मलय भाषा के मेरे शब्दों को नहीं समझ पाया फिर भी वह मेरा

आशय ज़रूर समझ गया। वह मुस्कराया और जंगल से कुछ लताएँ लाया जो आदमी का भार आसानी से सहन कर सकती थीं उन्हें गूँथकर एक सीढ़ी बनायी, जिसके सहारे मैं आसानी से नीचे उतर आया।

उसी दोपहर को हमने पेंघुलू कुलेह और उसके साथियों से विदा ली। जल्दी ही दुबारा आने के लिए कहकर हम टामयस की ओर बढ़े, अब हमारा अगला सफर आरम्भ हुआ। शाम को रेजाँग नदी पर बने एक-दूसरे मचानघर पर गए। रास्ते में चांग साहब ने मुझे बताया कि एक समय में सेंगाई अमांग की सहायक नदी, जहाँ कुलेह का मचानघर है, अक्सर सूखी रहती थी। उन दिनों यातायात बहुत ही मुश्किल था। नदी चिकने तट पर घुटनों तक पानी को काटते हुए नाव को खींचना पड़ता था। क्योंकि कई जगहों पर पानी ज्यादा गहरा नहीं होता था। कुलेह के मचानघर का स्थान मुझे अच्छा लगा था। परन्तु ऐसी जगह काम करना भविष्य के लिए खतरा मोल लेना है।

चाँग साहब ने मुझे बताया कि अगर मैंने यह मचानघर चुना होता, जहाँ हम अब जा रहे हैं, तो रेजाँग नदी के तट जैसी कोई कठिनाई नहीं आती।

दोपहर को देर से मचानघर पहुँचे। सरदार ताआई रूमाह ने हमारा हार्दिक स्वागत किया। यह तीस परिवारों का छोटा-सा मचानघर था। शाम को वही कार्यक्रम दोहराया गया--पेन्टुंस नृत्य, शराब आदि। सिर्फ एक ही फर्क था—वानर नृत्य। नकल उतारने में इबान बहुत होशियार हैं। बंदर के वेष में एक नर्तक रंगभूमि पर आया और बंदरों की चेष्टाओं का जो अभिनय किया वह सचमुच सराहनीय था। केला खाने का प्रयास करते हुए, लाल-लाल चींटियों द्वारा परेशान बंदर का जो दृश्य उसने हमारे सामने प्रस्तुत किया, उससे दर्शक हंस-हंसकर लोट-पोट हो गए। नर्तक उत्कृष्ट अभिनय के बावजूद भद्देपन पर उतर आया था।

समारोह के बाद हम एक ढकी हुई गैलरी में पहुँचे। मैंने चाँग साहब से उस नर्तक का नाम और पता लिख लेने की विनती की, क्योंकि फिल्म में मैं उसका उपयोग करना चाहता था। बहरहाल इस मचानघर से मैं प्रभावित नहीं हुआ। जंगल में बहुत भीतर बिलकुल अकेले में बसे कुलेह के मचानघर जैसा वातावरण यहाँ नहीं था।

मेरे अंगूठे की हालत बहुत खराब थी। इतने समय के बाद मुझे अहसास हुआ कि दर्द भयँकर हो रहा है। इतना कि शायद मैं सहन नहीं कर सकता। पर सीबु पहुँचने से पहले इसका कोई इलाज नहीं था। मैं बुरी से बुरी घटना की कल्पना करते हुए बिना सोये पड़ा हुआ था। अँगूठा कटवाना पड़ेगा। यह सोचकर मैं काँप गया। दर्द बढ़ता ही जा रहा था। नींद की एक भी झपकी लिए बिना यही सोच रहा था कि अगर अँगूठा कटवाना पड़ेगा तो, मेरा क्या होगा, क्योंकि तब

तक निश्चित मान चुका था कि अँगूठा कटवाना ही पड़ेगा।

अचानक मेरे दिमाग में एक खयाल आया। मैं टाइप कर सकता हूँ। दायें हाथ की जगह बाँयें हाथ के अँगूठे का इस्तेमाल कर मैं सीधे टाइप-रायटर पर लिख सकता हूँ। इस खयाल से मुझे राहत मिली। मैं दर्द भूलकर चन्द मिनटों में ही गहरी नींद में सो गया।

इबान लोगों के बारे में मैंने जितनी ज्यादा हो सके सामग्री एकत्रित की जिससे फिल्म की पटकथा लिखने में मदद मिल सके। लौटते समय हमने सारावाक की राजधानी कुचिंग में एक दिन बिताया। वहाँ जेम्स ब्रूक का महल देखा, जो अब गवर्नर का निवास स्थान है। महल के शिल्प की विशेषता उसकी रूमानियत में निहित है। क्योंकि विक्टोरियन गॉथिक पुनरुत्थान के स्वर्ण काल में दूसरे राजा ने इसे मध्ययुगीन गढ़ की तरह और कुछ आधुनिक उष्णकटिबंधीय भवन की तरह छायादार पेड़ों और भरपूर हरियाली के बीच बनवाया था।

कुचिंग नदी शहर के सीमाँत की ओर महल को छूती है और महल नदी के दूसरे किनारे पर बसा हुआ है। नदी के पास की ज़मीन पर दो खलासी एक सफेद नाव लिए यात्रियों का इंतज़ार करते हैं। नाव में कुल दो आदमियों की जगह ही होती है। जेम्स ब्रूक इस नॉव में सफर करता था। और आज गवर्नर ने भी इसी रिवाज़ को जारी रखा है। बाहरी मोटर वाली नाव से सफर जल्दी तय हो जाता है। परंतु निश्चित ही उसमें राजसी आकर्षण नहीं रहता, इसके विपरीत आधुनिक नाव ज्यादा सुविधाजनक होती है।

कुछ घण्टे मैंने संग्रहालय में बिताये। कुछ घण्टे संग्रहालय के अध्यक्ष के साथ बातें करते हुए बिताये। नदी के तट पर बसे इबान लोगों के बारे में उन्होंने मुझे बहुत सारी लाभदायक जानकारी दी।

जितनी सामग्री मैं इकट्ठा कर सकता था, मैंने की। सिंगापुर लौटा। मैंने शॉ साहब को उस स्थान की सुन्दरता और फिल्म के लिए भरपूर उपलब्ध सामग्री की जानकारी दी। साथ ही सारावाक के अनिश्चत मौसम में काम के दौरान आने वाली कठिनाईयों और रुकावटों के बारे में भी विस्तार से बताया। पहले रंगीन फिल्म बनाने का निश्चिय किया गया था। इस पर मैंने सुझाव दिया कि सादी फिल्म बनाना ज्यादा आसान रहेगा।

जनरेटर साथ ले जाने के बावजूद भी हमें मचानघर को फिल्माने के लिए प्रयाप्त बिजली नहीं मिल पायेगी। परन्तु, शॉ साहब यह बात सुनने को तैयार नहीं थे। उन्होंने कहा कि यह असाधारण फिल्म बनेगी तो रंगीन ही बनेगी। इसके लिए निर्धारित स्थान पर अच्छे मौसम का इंतजार करते हुए अगर निर्माण खर्च बढ़ भी जाय तो कोई एतराज नहीं।

दूसरा खण्ड

पेंघुलू कुलेह का मचान घर

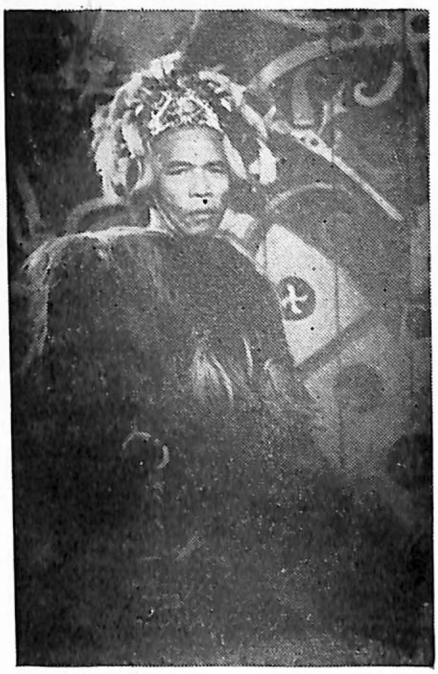

पेंघुलू कुलेह
अपनी परम्परागत पोशाक में

इवान नौजवान
जिसने संदाई की भूमिका की

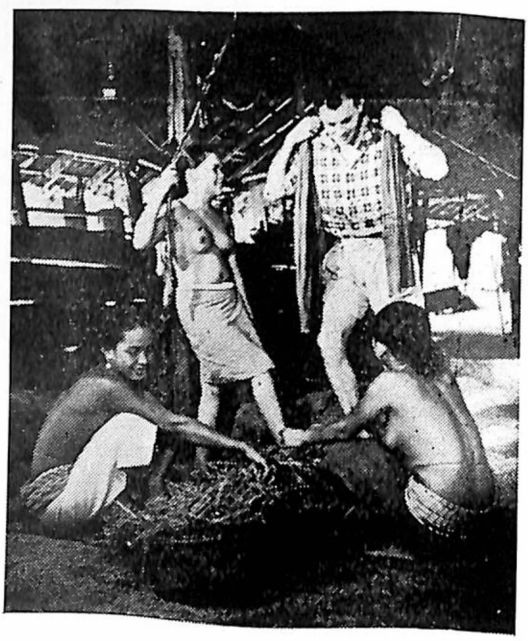

डेविस, लुली (नायिका)
और दो अन्य लड़कियाँ

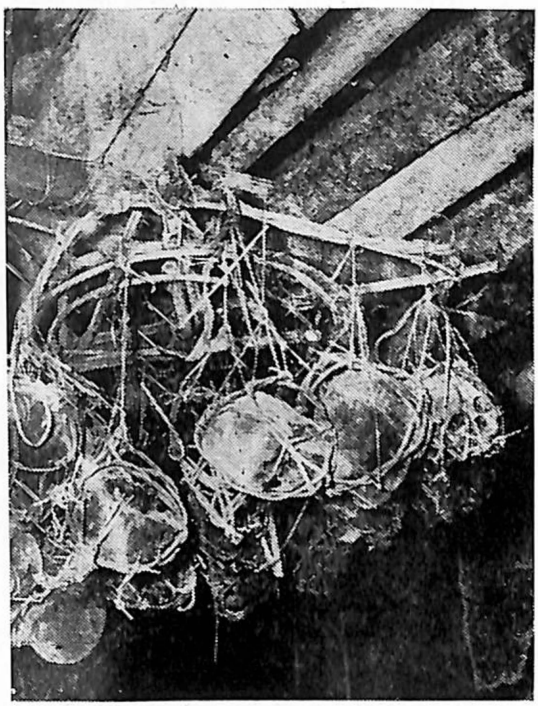

भूने गये नरमुंड
बेंत की टोकरियों में

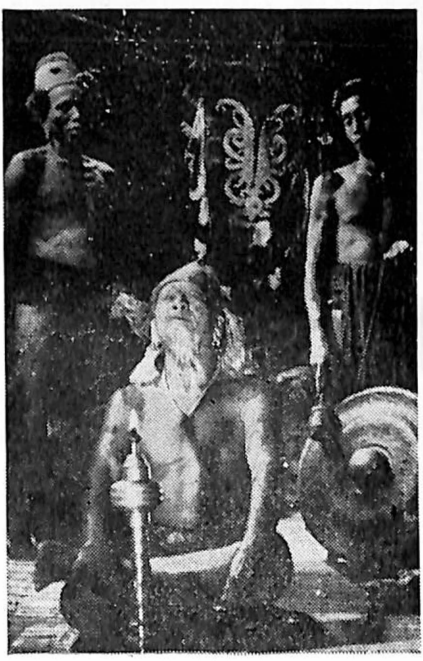

ध्यानामग्न ओझा

दो इवान लड़कियाँ

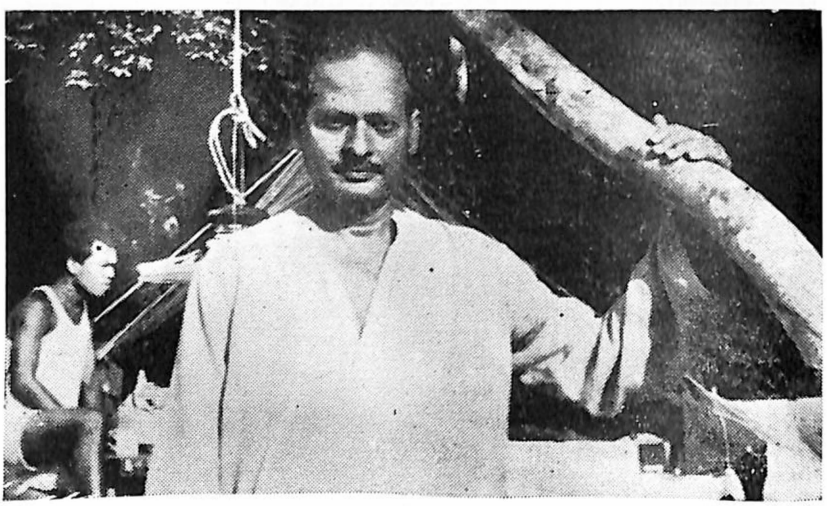

फणि मजूमदार अपने तम्बू के सामने

मैंने फिल्म की पटकथा पर काम शुरू कर दिया। एक सप्ताह में रूपरेखा तैयार कर ली गयी। यह रूपरेखा मैंने शॉ साहब को सुनाई तो वे रोमांचित हो उठे। यह एक हल्की-फुलकी प्रेम कहानी थी। इन रंगीन लोगों की ज़िंदगी को उनकी आदतों और रीति-रिवाजों को प्रमुख रूप से चित्रित करने के लिए काफी थी।

सारावाक के संक्षिप्त इतिहास और गोरे राजाओं के शासन को प्रस्तावना के रूप में इस्तेमाल किया गया और फिर कहानी आरम्भ हुई।

जोन्स नाम का एक गोरा अफसर रेजाँग नदी पर बसे हुए इबान लोगों के मचानघरों में पहली बार आता है। उसके साथ एक कर्क है जो उसका मार्ग दर्शक है। जोन्स के माध्यम से मचानघर, सरदार और अन्य मुख्य पात्रों के साथ साथ मेहमानों के स्वागत तथा बेदार को पेश किया जाता है।

दूसरे दिन सुबह, सरदार और मचानघर के अन्य बड़े-बूढ़े लोग एक सभा में बैठे श्री जोन्स के साथ गंभीर चर्चा करते हैं। चर्चा के दौरान इस बात का आश्वासन दिया जाता है, कि सरकार बदलने के बाद भी उनके 'आदतलामा' में कोई दखल नहीं दिया जायेगा।

श्री जोन्स चले गए और उसी रात मचानघर के निवासी। अगली फसल के लिए ज़मीन तय करने इकट्ठे होते हैं। सभी आपस में चर्चा करते हैं, स्त्रियाँ भी चर्चा में भाग लेती हैं। अंत में वे सभी एक खास ज़मीन के टुकड़े पर फसल उगाने को सहमत हो जाते हैं। अब आत्माओं को ज़मीन पंसद है या नहीं, यह जानने के लिए ओझा समाधि लगाता है।

ग्रामवासी इंतज़ार कर रहे थे। फिर ओझा ने समाधि में बोलना प्रारम्भ किया —'आत्माओं को यह ज़मीन मान्य है परन्तु कल सूर्यास्त से पहले मचानघर के सामने एक अंग्रेज़ आदमी बहता हुआ आयेगा। अगर गाँव वाले इस अंग्रेज को बचा लेंगे तो आने वाली फसल भरपूर होगी और अगर इस अंग्रेज के साथ अच्छा व्यवहार नहीं किया तो गाँव का हाल बहुत बुरा होगा।'

ग्रामवासी चिंतित लगने लगे। सरदार ने सांदाई नाम के एक शक्तिशाली युवा पुरुष को बुलाया, एक दल के साथ रात-दिन नदी की चौकसी करने की

हिदायत दी; हमें गोरे आदमी की ज़िंदगी बचानी ही चाहिए।'

आखिर गोरे आदमी की ज़िंदगी बचा ली गयी। एक महत्वाकांक्षी एलेक्स नाम का गोरा खनिज़ों की खोज में निकला था परन्तु नदी के तेज प्रवाह में उसकी नाव बह गयी। वह बेहोश नदी के प्रवाह में बहने लगा।

रात को देर से एलेक्स ने आँखें खोलीं। उसे अपनी आँखों पर विश्वास नहीं हुआ। लुली मच्छरदानी के भीतर बिछौने पर बैठी थी। उसका सुंदर चेहरा, सुगठित शरीर का आधा नग्न हिस्सा दीपक की रोशनी में सुनहरा लग रहा था। और दूसरा आधा शरीर खिड़की से आती रोशनी में चमक रहा था।

एलेक्स सपना तो नहीं देख रहा है, इस बात को जानने के लिए अपने ही शरीर पर चुटकी काटता है। एलेक्स आश्चर्यचकित होकर उसकी ओर देख रहा था, मुस्करा रहा था, लेकिन लुली उसे सुलाने की कोशिश में लगी थी।

सारा गाँव खेती की ज़मीन तैयार करने लग गया। लुली उनके साथ नहीं जा सकी। उसे गोरे की देखभाल के लिए रखा गया था। गाँव वालों को ओझा की भविष्यवाणी याद थी, कि अगर गोरा नाखुश होगा तो गाँव का सत्यनाश हो जायेगा।

एलेक्स अब भी बहुत कमज़ोर था और ज्यादातर समय लुली के साथ बिताता था। अपनी सुविधा के लिए उसने लुली को कुछ अंग्रेज़ी शब्द रटा दिये थे। प्रारंभ में लुली बचकानी हरकतें करती, परंतु जल्दी ही उसने अपने आपको एलेक्स के सामने व्यक्त करने जितना सीख लिया। तबीयत ठीक होने के बाद एलेक्स लुली के साथ बैठने के बजाय उसके साथ खेत में जाने लगा। अपने दोस्ताना और खुश मिज़ाज व्यवहार से उसने मचानघर के युवा स्त्रियों-पुरुषों का दिल जीत लिया। इधर उसके प्रति लुली का बढ़ता झुकाव छिपा न रह सका।

एक दिन गवर्नर के साथ एक ज़रूरी बातचीत के लिए सरदार सीबु गया हुआ था। वापिस लौटते वक्त वह अपने साथ नाव पर लगाने वाली एक मोटर ले आया। दूसरे सरदारों को खरीदते देखा तो उसने भी खरीद ली। खरीदते वक्त चीनी व्यापारी ने मोटर को चलाकर दिखाया था परंतु यहाँ आते-आते सरदार भूल गया। एलेक्स ने उसकी मदद की। जब एलेक्स ने नाव पर मोटर बिठाई तो सारा गाँव नदी पर इकट्ठा था। एलेक्स ने बारी-बारी से सभी ग्रामवासियों को मोटर वाली नाव पर सैर करायी। लुली को एलेक्स पर गर्व हुआ और उसने इसे छिपाने की कोशिश भी नहीं की।

दूसरे दिन जब एलेक्स ने यह बताया कि वह एक दो दिन में वापस चला जायेगा तो लुली को आघात पहुँचा। क्या एलेक्स उनके साथ खुश नहीं था? एलेक्स ने समझाने की कोशिश की कि वह बहुत खुश है, फिर भी उसे अपनी ज़िंदगी में लौटना पड़ेगा, जिसकी उसे आदत हो चुकी थी। यह सच है, लुली ने

उसकी ज़िन्दगी को अपने प्यार और सर्म्पण से भर दिया था, परंतु वह अपनी पूरी उम्र यहाँ नहीं बिता सकता। उसे सभ्य समाज में वापिस जाना ही था।

लुली ने यह जाहिर किया कि एलेक्स जहाँ कहीं भी जायेगा वह उसके साथ जायेगी। लुली उससे प्यार करती थी और इधर एलेक्स उसे समझा नहीं पा रहा था कि उसकी दुनिया से उसका कोई वास्ता नहीं है। वापिस लौट जाने की एलेक्स की बहुत इच्छा हो रही थी, पर लुली के आँसू उसके आड़े आ जाते और अनिश्चितता की स्थिति में यहाँ रहता ही जा रहा था।

मिन्दुम और अजाँग की शादी के कुछ ही दिन पहले साँदाई और उसके मित्र शिकार से एक सूअर मार लाये थे। सारा गाँव शादी में शरीक होने के लिहाज़ से गैलरी में जमा हुआ था। इस समारोह में सरदार ने अपनी बेटी लुली की शादी साँदाई के साथ करने की घोषणा की। लुली को यह जान कर आघात लगा और एलेक्स बड़ी ही उलझन में फँस गया।

उस रात शादी के भोज के बाद साँदाई और उसके दूसरे नौजवान मित्र गैलरी में सोने की तैयारी कर रहे थे। साँदाई के दोस्त उसे लुली के पास जाने के लिए चिढ़ा रहे थे। साँदाई ने अपने बालों को बाँधा और पेड़ के तने की सीढ़ी से ऊपर पहुँचा। लुली बैठी हुई थी। साँदाई को आते देखकर वह अपने आप सिकुड़ गयी। साँदाई उसकी मच्छरदानी के पास आकर झुका। लुली ने दियासलाई से पास ही रखा दीपक जला दिया। यह इस बात का संकेत था कि साँदाई को स्वीकार नहीं किया गया। सौजन्य का तकाज़ा था कि वह बिना कोई बात किये वापिस चला गया। कुछ लड़कियाँ उस पर हँसीं। वह गुस्से में आगबबूला होकर जल्दी जल्दी नीचे चला गया। गैलरी में वापिस पहुँचने के बाद दोस्तों की टिप्पणियों ने उसे पागल कर दिया। लुली से उसकी सगाई हो चुकी थी। वह गाँव का भावी सरदार बनने वाला था। अपनी जवानी में ही उसकी हथेली के पीछे पाँच गोदने के निशान थे। लुली ने ऐसा बरताव करने की हिम्मत कैसे की।

देर रात को जब सभी लोग गहरी नींद में सो रहे थे, साँदाई जा रहा था। एक के बाद एक वह स्थानीय सिगरेट पीता जा रहा था। वह अपमान को गले नहीं उतार सका। अचानक उसने लकड़ी के फर्श पर किसी के पदचाप सुने, बहुत ही सावधानी और हिचकिचाहट भरे हुए। अंधेरे में वह कुछ ठीक से नहीं देख सका परंतु खुली गैलरी में पहुँचने पर उसने लुली को पहचान लिया। साँस रोककर उसने लुली को नीचे उतर कर नदी की ओर जाते हुए देखा। इसी बीच उसे एक और घुंघली आकृति दिखाई दी और फिर दोनों आकृतियाँ आपस में मिल गयीं। साँदाई उछल पड़ा, हाथ में पारंग लेकर उनका पीछा करने लगा। जब तक वह नदी के तट पर पहुँचा आकृतियाँ अदृश्य हो चुकी थीं। उसने इधर उधर सभी जगह ढूँढ़ा, पारंग से वह लुली के प्रेमी का सिर काटना चाहता

था, इसके बदले गुस्से में उसने झटके से एक पेड़ काट डाला।

दूसरे दिन सुबह सरदार को सारी बातें बताई गयीं। सरदार ने शाँति से सब कुछ सुना, फिर बिना एक भी शब्द बोले वह कमरे में गया, जहाँ लुली अपनी टोकरी ठीक कर रही थी। सरदार उसके करीब गया। लुली ने ऊपर देखा। सरदार ने बुरे व्यवहार के लिए लुली को डाँटा। लुली कोई दलील देने की कोशिश करे, इससे पहले ही उसके गाल पर एक चाँटा झाड़ दिया गया। और हिदायत दी कि वह एलेक्स के साथ कोई सम्बन्ध न रखे। इसके बाद सरदार बाहर आ गया और साँदाई से कहा कि वह लुली के साथ खेत चला जावे।

एलेक्स अपने कमरे में बाहर जाने के लिए तैयार बैठा था। उसने लुली को अन्य लड़कियों के साथ नदी की तरफ जाते हुए देखा। वह बाहर आया, और यह देखकर दँग रह गया कि साँदाई लुली और अन्य लड़कियों को नाव में बैठा कर ले जा रहा है। उसने मुड़कर गैलरी की तरफ देखा? सरदार खुली गैलरी से उसे देख रहा है। एलेक्स उसके रवैये का मतलब समझ गया। इस अपमान के लिए, मचानघर में अब तक ठहरे रहने के लिए, वह अपने आपको कोसता हुआ वापिस कमरे में चला गया।

शाम को साँदाई दल बना कर नदी किनारे पहरा देने लगा, जिससे लुली भाग न सके। रात काफी हो चुकी थी और एलेक्स अपने बिछौने पर जाग रहा था। दूसरे दिन, सारा दिन वह सोचता रहा, उसे अनुभव हुआ कि उसे लुली से कितना प्यार है। उसके आँसुओं की उपेक्षा कर, मचानघर छोड़कर जाना उसके लिए संभव नहीं हो रहा था। दूसरी तरफ उसे अब क्या करना चाहिए, उसकी समझ में नहीं आ रहा था। अचानक वह अपने बिछौने पर उठकर बैठ गया। उसने किसी के सावधानी से अपनी ओर आते हुए कदमों की आवाज़ सुनी। एलेक्स देखता रहा, तभी दरवाज़े से लुली की एक सहेली भीतर आयी। उसने एलेक्स को चुप रहने का इशारा किया, क्योंकि वह कुछ कहने जा रहा था। फिर उसने एलेक्स को इशारे से खिड़की के पास बुलाया और पेड़ के नीचे उसकी राह देख रही लुली की ओर संकेत किया। एलेक्स दौड़कर बाहर गया और लुली से मिला। इससे पहले कि एलेक्स मुंह खोले लुली ने बात न करने का इशारा किया। और उसका हाथ पकड़कर मचानघर के पीछे घने जंगलों में अदृश्य हो गयी।

अब यहाँ लुली ने उसे इत्मिनान से समझाया कि अगर हम पाँच दिन के लिए कहीं छिप जावें तो इबान कानून के अनुसार बाद में हम पति-पत्नी स्वीकार कर लिए जायेंगे।

फिर लुली और एलेक्स जंगल के बाहर नदी किनारे आये। जहाँ ठीक सामने दूसरी तरफ मचानघर था। मचानघर के पास कुछ डोंगियाँ बाँधी हुई थीं। लुली ने तैर कर नदी पार की। मचानघर के सामने से एक डोंगी ली, फिर एलेक्स को

पकड़कर उसमें विठाया और अगले पाँच दिन के लिए एलेक्स के साथ कहीं छिपने नदी में तेजी से नाव खेने लगी।

अगले दिन सुवह ही मचानघर के पुरुषों ने अलग अलग टोलियाँ वनाईं और उन भगौड़ों को ढूंढ़ने निकल पड़े। किसी भी हालत में उन दो प्राणियों को ढूंढ़ निकालना जरूरी था।

जँगल के बहुत भीतर लुली द्वारा इकट्ठे किये हुए कुछ फल खाते हुए वे दोनों प्रेमी भविष्य के वारे में सोच रहे थे। एलेक्स ने कहा, उसे मालूम है कि अगर उन्हें पा लिया गया तो उसका सिर काट दिया जायेगा। लुली ने ज़हर की पुड़िया दिखाते हुए कहा, अगर ऐसा हुआ तो वह ज़हर खा लेगी। एलेक्स ने उससे यह वादा लेने की कोशिश की कि चाहे कुछ भी हो वह आत्महत्या नहीं करेगी। परंतु वह असफल रहा और लुली अपनी वात पर अटल रही। लुली इससे प्यार करती थी और विना इसके वह ज़िंदा नहीं रह सकती थी।

उधर खोज ज़ारी थी, और अपनी पराकाष्ठा पर पहुँच चुकी थी। वह पाँचवाँ दिन था। उनको मालूम था कि अगर आज सूर्यास्त से पहले उन्हें ढूँढ़ा न जा सका तो सारा खेल समाप्त हो जायेगा।

लुली ऐसे कठोर जीवन की आदी थी पर एलेक्स के लिए यह एक कठोर परीक्षा थी। वह वहुत थक गया था। लुली ने उसे सांत्वना दी, उसका हौसला बनाए रखने की भरपूर कोशिश की। एक ही तो दिन वाकी है और अगर कोई उन्हें नहीं देख पाया तो सारी मुश्किलें हल हो जायेंगी। जँगल में उसने एक खुली जगह देखी और एलेक्स को थोड़ा आराम के लिए वहाँ ले गयी। इतने में उन्होंने एक नाव की मोटर की आवाज़ सुनी। उनकी घवराहट के बीच वह आवाज़ रुक गयी। लुली को इसका मतलव समझ में आ गया। वह एलेक्स को घसीट कर जँगल के बहुत भीतर ले गयी। साँदाई और उसके साथी इन्हें ढूँढ़ते ही रहे और पाँचवा दिन पूरा हो गया। साँदाई यह जान चुका था कि उसने लुली को सदा सदा के लिए खो दिया।

छठे दिन सुवह थके हारे और पूर्ण निश्चितता के साथ लुली और एलेक्स नदी के किनारे एक चट्टान पर सो रहे थे। साँदाई ने उन्हें ढूंढ़ निकाला और एलेक्स को मारने के इरादे से एक ज़हरीला तीर छोड़ने की तैयारी की इतने में उसके एक साथी अजाँग ने उसे रोक दिया। क्योंकि एलेक्स ने पांच दिन लुली के साथ गुज़ार दिये थे। फिर भी उन्होंने दोनों प्रेमियों को पकड़कर लताओं से बाँध दिया और आखिरी फैसले के लिए मचानघर की तरफ रवाना हुए। साँदाई का यह दावा था कि इस तरह पति-पत्नी मानने का कानून सिर्फ इबान लोगों के लिए है।

सारा मचानघर इस मामले पर विचार विमर्श करने के लिए गैलरी में इकट्ठा

हुआ। एलेक्स और लुली एक कमरे में बंद पड़े थे। उनके हाथ पाँव बाँधे हुए थे। साँदाई और उसके साथियों के शोरगुल के बीच लुली ने ओझा की आवाज़ सुनी। वह सारे मचानघर के लोगों को हिदायत दे रहा था कि अगर गोरे आदमी के साथ कुछ बुरा बरताव किया तो सभी का सत्यानाश हो जायेगा। उन्हें लुली और एलेक्स को पति-पत्नी स्वीकार करना पड़ेगा।

लुली किसी तरह घिसटती हुए एलेक्स के पास जाकर उसे समझाना चाहती थी कि ओझा उनके पक्ष में है। परंतु इतने में उसकी टक्कर से तेल का एक दीपक लुढ़क गया, तेल लकड़ी के फर्श पर गिरा और धीरे-धीरे फर्श ने आग पकड़ ली। लुली और एलेक्स गला फाड़-फाड़कर जान बचाने के लिए चिल्लाने लगे। परंतु वे अपने शोरगुल में इतने व्यस्त थे कि जब आग दीवारों पर पहुँच गयी, तब उनका ध्यान आग की तरफ गया।

कोई मुनासिब कार्रवाई की जा सके इससे पहले आग सारे मचानघर में फैल चुकी थी। सरदार ने लुली और एलेक्स को बाहर निकालने का एक प्रयास किया पर तब तक बहुत देर हो चुकी थी। लोगों की नज़रों के सामने देखते ही देखते लुली और एलेक्स जिसमें बंद थे, वह मचानघर जलकर राख हो गया।

शॉ साहब ने इस कहानी को बहुत पसन्द किया। वे इस योजना का पूरा करने को पूरी तरह तैयार थे। उन्होंने सारावाक सरकार को लिखकर योजना के बारे में सूचित किया। सरकार ने जवाब में इस योजना को छोड़ देने के लिए लिखा। कई कारण बताए जिनमें से एक था—फसल काटने के वक्त के कारण सारावाक के आदिवासी बहुत व्यस्त थे। कुल मिलाकर सारावाक की सरकार ने हमें यह समझाने की कोशिश की कि सारावाक के कठिन हालात में इस फिल्म को पूरा करना असंभव है। उन्होंने इटालियन तथा दूसरी कई फिल्म कम्पनियों का उदाहरण दिया जो हमसे भी पहले यहाँ आये थे। और अपनी योजनाओं को अधूरी छोड़कर वापिस चले गये। खत पढ़कर यह निष्कर्ष निकाला गया कि सारावाक की सरकार इन नरमुण्ड शिकारियों के बारे में, उनकी परिस्थितियों के बारे में दुनिया को कुछ नहीं बताना चाहती थी।

शॉ साहब ने खत मुझे दिया और कहा कि ऐसा कोई कानून नहीं जिसके आधार पर सरकार बोर्नियो में हमें फिल्म बनाने से रोक सके। और अगर सरकार हमें अनुमति न भी दे, तो भी हम इस योजना पर काम आगे बढ़ायेंगे। उन्होंने फिर सरकार को लिखा था कि इस अवस्था में आकर, जब सारी तैयारियाँ हो चुकी हैं, योजना को अधूरी छोड़ देना संभव नहीं है।

फिल्म में काम करने के लिए अब हमें दो अंग्रेज चाहिएँ—एक एलेक्स की

भूमिका के लिए और दूसरा जोन्स की भूमिका के लिए। साथ में एक मलय भी चाहिए जो जोन्स के मार्ग दर्शक के रूप में काम करेगा। कई परीक्षणों के बाद हमने कलाकारों का चुनाव किया। मैंने सुझाव दिया कि हमें मलय सरकार फिल्म यूनिट के वृतचित्र कैमरामैन को नियुक्त करना चाहिए। क्यों कि वे लोग बहुत प्रतिकूल परिस्थितियों में भी काम करने के अभ्यस्त थे। शॉ साहब ने मेरे प्रस्ताव को स्वीकार किया और मलाया सरकार फिल्म यूनिट के एक कैमरामैन की सेवाएँ अर्जित कर लीं।

18 दिसम्बर 1956 को हम बोर्नियो को रवाना होने वाले थे। सारा सामान बाँध लिया गया। टिकटें बुक हो चुकी थीं। तभी एक बाधा आ टपकी। रवाना होने के कोई तीन दिन पहले हमारी यूनिट के कैमरामैन सहायक, बिजली मिस्त्री और प्रोडक्शन स्टाफ ने साथ चलने से मना कर दिया क्योंकि उनके खयाल में वहाँ बहुत खतरा है। शॉ साहब चिंतित हुए। मैंने उन्हें विश्वास दिलाया कि चिंता करने की कोई बात नहीं, सीबु से हमें काम करने वाले स्थानीय लोग मिल जायेंगे। मैंने इस फिल्म को बनाने का निश्चय कर लिया था। और इतनी मेहनत के बाद इसे यूँ ही छोड़ देना नहीं चाहता था।

18 दिसम्बर को हम सिंगापुर से निकले शॉ साहब हमें हवाई अड्डे पर छोड़ने आये थे। उन्होंने सारावाक के गवर्नर अंथोनी एबल से हमारी मुलाकात करवाई जो उसी जहाज़ से सफर कर रहे थे।

उन्होंने हमारी योजना के पक्ष में न होने के बावजूद जरूरी सहायता के लिए हमें आश्वासन दिया था। परंतु उन्होंने हिदायत दी कि शूटिंग के दौरान किसी आग्नेयास्त्र का उपयोग न करें।

सिंगापुर से हमारा सात लोगों का दल चला था। हमने दो कैमरे, बत्तियाँ, कुछ रिफ्लेक्टर, 92 किलोवाट का एक जनरेटर, एक रिवाँईडर, दो टेपरेकॉर्डर, एक स्टील कैमरा, एक टाईप राइटर और पटकथा साथ लिए थे। अब अपने दल के लोगों का परिचय देता हूँ : मोहम्मद ज़ैन (फोटोग्राफी के निर्देशक), अंथोनी एरियल (ऑपरेटिव कैमरामैन), ली मोंगनॉम (निर्माण निरीक्षक), तीन अभिनेता: डेविस बुकानन, रिचर्ड मिकॉन, महमूद शॉम और मैं। कोई सहायक नहीं था, हमारे साथ। कोई वेषभूषा निर्देशक नहीं था। कोई मेकअप मैन नहीं था। कोई ड्रेस मैन नहीं था। कन्टिन्यूटी गर्ल नहीं थी और न ही कोई इंजीनियर था।

18 की दोपहर को हम सीबु पहुँचे। हमारे सामान की नॉव 21 को पहुँचने वाली थी। 19 की सुबह को ली, ज़ैन और मैं चाँग साहब के साथ एक तेज़ गति वाली नाव में बैठ कर कॉपित पहुँचे। मैंने पहले ही तय कर लिया था कि जो मचानघर हम फिल्माएँगे वह सेंगाई अमांग नदी के तट पर बसा कुलेह का मचानघर ही होगा। मैं ली तथा ज़ैन को वह दिखाना चाहता था और साथ ही उन्हें

आने वाली कठिनाईयों के लिए तैयार करना चाहता था। साथ ही हमें मचान-घर के पास डेरे के लिए भी तो व्यवस्था करनी थी।

मैं कॉपित के जिलाधिकारी से मिला। जैसा कि मैंने पहले ही बताया कि वह इवान था। मैंने उसे पटकथा की एक प्रति पढ़ने को दी और कैमरामैन तथा अन्य लोगों के साथ मचानघर की तरफ चल पड़ा।

जैसे ही हमारी नाव मचानघर के सामने रुकी पेंघुलू ने 'तावेह तुआन' कहते हुए हमारा स्वागत किया। मचानघर से अनेक आवाज़ें एक साथ गूँज उठीं 'तावेह तुआन'। रपटीले किनारे पर हमने चलना शुरू किया। ली और जैन दोनों ने मचानघर के चुनाव का अनुमोदन किया। यह मुझे मालूम था, क्योंकि यह जगह अतिसुंदर और रूमानी थी। पेंघुलू कुलेह ने हमें बताया कि इबान लोगों के सर्वोच्च सरदार 'तेमान गाँग जुगा' ने उन्हें बताया कि वे हमारे साथ सहयोग न करें। कुलेह ने हमसे वादा किया कि वे हमें हर प्रकार की मदद करेंगे। उसे मेरे प्रति प्रेम था। और उस वक्त जुगा ने ऐसी कोई बात नहीं कही थी।

मचानघर के सामने डेरे के लिए हमने एक जगह पसंद की। वह जगह बिलकुल नदी के किनारे थी। हमारे डेरे को हम छोटा मचानघर कहते थे। पेंघुलू ने हमसे कहा कि डेरा जमीन से कम से कम 18 फुट ऊँचा होना चाहिए। फर्श और दीवारें बाँस चीर कर बनाई जानी चाहिएँ तथा छत पत्तों का होना चाहिए। आग्रहपूर्वक उन्होंने हमारे छोटे मचानघर को बाँधने की जिम्मेदारी अपने ऊपर ले ली थी।

मचानघर में हमने रात बिताई और सुबह वापिस कॉपित निकल पड़े। जिलाधिकारी नें पटकथा की बहुत प्रशंसा की। एक दो महत्त्वपूर्ण सुझाव भी दिये। उसने हमें तेमाँग गाँग जुगा के बारे में बताया। कहा कि जब भी वह मुझसे मिले मैं बीयर की बोतलें भेंट करूँ। उसकी ज्यादा से ज्यादा प्रशंसा करूँ। अपने बारे में उसने विश्वास दिलाया कि वह हर संभव हमारी मदद करेगा।

हम सीबु वापिस आ गये। सिंगापुर से हमारे सामान की नाव अभी तक नहीं पहुँची थी। ली ने चाँग साहब की मदद से काम के लिए स्थानीय लोगों की भरती शुरू कर दी थी।

मैं ब्रिटिश रेजीडेण्ट श्री व्हाइट से मिला। हमें शूटिंग के लिए सरकारी नौका की जरूरत थी। मैंने उन्हें पटकथा का हिस्सा पढ़कर सुनाया तो आखिरकार उन्होंने एक दिन 27 दिसंबर के लिए नौका देने का वादा किया। मैंने उन्हें यह भी बताया कि अगर धूप तेज नहीं हुई और हम शूटिंग नहीं कर पायें तो असमान

मौसम के तकाज़े को ध्यान में रखकर हमें दो दिन के लिए नौका मिलनी चाहिए। परंतु वह किसी भी शर्त पर नहीं माने। उन्होंने हमें यह समझाने की कोशिश की कि सरकारी नौकाएँ फिल्म यूनिटों के लिए नहीं है और अगर मौसम अनुकूल नहीं होगा तो हमारा दुर्भाग्य होगा।

उन्होंने हमें यह भी चेतावनी दी कि फसल कटाई का मौसम होने के कारण काम करने वाले स्थानीय लोग मिलना मुश्किल है। यह उनकी समझ में नहीं आया कि नरमुण्ड शिकार के बारे में फिल्म क्यों बननी चाहिए और ऐसी फिल्म से दुनिया को क्या लाभ होगा। संक्षिप्त में यह कि उन्होंने मुझे हतोत्साहित करने की कोशिश की। मैंने उन्हें 27 तारीख को नौका देने की मंजूरी के लिए धन्यवाद दिया और चला आया।

हमारे सामान की नाव 24 को पहुँची। सामान की जाँच की गयी। स्थानीय भरती किये गये लोगों को अभ्यास करवाया गया और हम अच्छे मौसम की उम्मीद में 27 तारीख की सुबह का इंतजार करने लगे।

क्रिसमस के दिन डेविस को उसके एक सरकारी मित्र ने आमंत्रित किया था। अगली सुबह उसने हमें बताया कि उसकी अफसर से हुई बातचीत के अनुसार सरकार ने निश्चित किया था कि अगर हमारे विरुद्ध एक भी शिकायत मिली तो वे हमें फिल्म बनाने से रोक देंगे और बोर्नियो के बाहर निकाल फेंकेंगे। और तो और तेमान गाँग जुगा को भी हमारे साथ सहयोग न देने की सलाह दी गयी थी।

इससे मैं बिल्कुल विचलित नहीं हुआ। श्री व्हाइट का टेढ़ा रुख, डेविस द्वारा दी गयी सरकारी सूचना और हवाई अड्डे पर हुई गवर्नर के साथ बातचीत से मेरा निर्णय मजबूत ही बना था।

भाग्य ने हमारा साथ दिया 27 को सुबह चमकते हुए सूरज ने सफेद-सफेद बादलों की सुंदर रचना के साथ हमारा स्वागत किया। सुबह नौ-बजे से हमने शूटिंग आरंभ की और दोपहर एक बजे काम समाप्त कर लिया।

सीबु में इसके अलावा और कोई काम नहीं था। अगली सुबह हमने कॉपित के लिए प्रस्थान करने का निश्चिय किया और एक बड़ी नौका की व्यवस्था करने गये, जिसमें हमारा सारा सामान जनरेटर सहित और हम, कॉपित पहुँच सकें। मैंने श्री व्हाइट को उनके सहयोग के लिए धन्यवाद दिया।

अगली सुबह हम धीरे चलने वाली एक नौका से रवाना हुए और नये वर्ष की पूर्व संध्या को कॉपित पहुँचे। सफर धीमा लेकिन आरामदेह था। पेंघुलू ने बताया कि हमारा छोटा मचानघर तैयार हो गया है। परंतु सामान ढोने में बड़ी दिक्कत होगी क्योंकि सेंगाई अमांग की सहायक नदी सूखी है और जेनरेटर का भार ही कई टन था।

ली ने पेड़ के तने का एक पाटा लिया और जेनरेटर को उस पर बाँधने का

निश्चिय किया ताकि उसे आसानी से ले जाया जा सके।

डेविस और रिचर्ड दोनों को फोर्ट सिल्विया के सरकारी विश्रामगृह में ठहराया गया तथा यूनिट के बाकी लोगों ने नाव में सोने का निश्चय किया। डेविस नया साल मनाना चाहता था। उसने हमें तथा जिलाधिकारी को निमंत्रण दिया था। हमने रात का खाना खाया, थोड़े से जाम पीने के बाद डेविस ने अपनी राष्ट्रीय पोशाक पहनी इसके बाद उसने हमें हाइलैण्ड वालों का नाच दिखाया। जिस समय फोर्ट सिल्विया में नये साल की बंदूक दागी गयी, वह अपना आपा पूरी तरह खो चुका था। हमने एक दूसरे को नये साल की मुबारकबाद दी और रिचर्ड को डेविस की देखभाल के लिए छोड़कर वहाँ से रवाना हो गये।

खूब खाने और शराब पीने के बाद जैन ली और दूसरे लोग सो गये थे परंतु मैं अब भी जागता रहा। सेंगाई अमांग के सूख जाने से कई समस्याएँ खड़ी हो गयी थीं —लोकेशन भी बदलने की नौबत आ सकती है परंतु मानसिक रूप से ऐसा करने को मैं तैयार नहीं था। मैं समझ नहीं पा रहा था कि काम में विलम्ब किये बिना इस समस्या को कैसे हल किया जा सकता है।

मैं बर्थ पर उठ कर बैठ गया और खिड़की से बाहर देखने लगा। कुछ क्षणा तक मैं बाहर देखता रहा लेकिन मुझे कोई खास बात नजर नहीं आयी। अचानक मुझे धक्का लगा तब मैंने देखा कि हमारी नाव बह रही है और पानी का प्रवाह धीरे-धीरे तेज होता जा रहा है। मेरी समझ में आ गया कि क्या कुछ हो सकता है। मैं कप्तान और कर्मचारियों को जगाने नीचे गया तब तक सभी लोग स्वत: ही जाग गये थे। सबने घबराकर देखा कि नाव तेजी से एक चट्टान की तरफ बहती जा रही है। कप्तान ने फुर्ति से इंजिन चालू करने की कोशिश की और ऐन मौके पर उसे चालू कर नाव को टकराने से बचा लिया।

किनारे पर पहुँचे और हमने नाव को घाट पर लगे लोहे के सरकारा खम्बे से बाँध दिया। वहाँ हमने डेविस को शरारत से मुस्कराते हुए देखा। रिचर्ड ने हमें बताया कि डेविस विश्रामगृह से बाहर आया और पीछे पीछे रिचर्ड भी बाहर आ गया ताकि वह कोई गड़बड़ न कर सके। इससे पहले कि वह कुछ समझ सके डेविस ने नाव की जंजीर खोल दी और किसी शरारती बच्चे की तरह तालियाँ पीटने लगा।

रिचर्ड डेविड को वापिस विश्रामगृह में ले गया। और इस तरह हमारे नये साल का शुरूआत हुई। बोर्नियो की यात्रा के दौरान ऐसे क्षण हमारी जिंदगी के हिस्से बन चुके थे। तीव्र तनाव और भय के बहुत से क्षणों में हमें लगा कि हम इनसे भाग नहीं सकते।

हमारा पड़ाव कॉपित में था और हमने दिन में शूटिंग की। हमने मुख्यत: वे शॉट लिए जिनमें जोन्स अपने गाइड के साथ पहली बार यहाँ आता है। हमने

जिलाधिकारी की सरकारी नाव का भी उपयोग किया जिसे उन्होंने हमें मेहरबानी करके दी थी। मौसम काफी अच्छा था। सचमुच हमने कुछ चित्रात्मक शॉट लिए थे। एक मगरमच्छ अपने भीमकाय शरीर को धूप में स्नान करवा रहा था—उसका शॉट हमने जोन्स के कोण से लिया था। इस प्रगति के बावजूद हमें यह चिंता खाई जा रही थी कि मचानघर तक सामान कैसे ले जाया जाय। उसी दौरान बेड़ा तैयार हो गया और हमने जेनरेटर को उस पर रख दिया, परंतु सेंगाई अमांग में पानी का स्तर वैसे ही रहा।

फिर हमने किसी तरह डेरे में जाने का निश्चय किया। बेड़ को खींचकर सेंगाई अमाँग के मुहाने तक लाया गया। हमने एक स्थानीय निवासी को बेड़े पर तैनात कर दिया ताकि वह जेनरेटर की रखवाली कर सके। बाकी सामान छोटी और बड़ी कई नावों में लादा गया। जहाँ भी नदी की गहराई कम होती तो पचास आदमी उस नाव को खींचते हुए आगे बढ़ते, इस तरह दोपहर तक हम डेरे पहुँच ही गये।

मचानघर के लोगों ने शोर मचाकर हमारा स्वागत किया। सामान उतारने तक सारी भीड़ किनारे पर खड़ी रही। जैन कैमरे में रील भरने के लिए एक कमरे को डार्करूम बनाने में व्यस्त हो गये। और बाकी लोग अपने-अपने काम में लग गये। शाम को डार्करूम से अंथोनी के रोने की आवाज सुनी, हम दौड़कर वहाँ तक पहुँचे। अंथोनी का पाँव बाँस की खपच्चियों के फर्श के बीच फँस गया था। जैन ने पूरी कोशिश कर उसके पाँव को बाहर निकाला परंतु पाँव पर जगह जगह खरोंच और जख्म हो गये थे।

डेरे के लिए जो बावर्ची नियुक्त किया गया था, वह अभी तक नहीं आया था। सीबु से भरती किये लड़कों ने चावल पकाया और हमने खाद्य पदार्थ के कुछ टिन खोले और रात का खाना खत्म किया। थके हुए होने के कारण जल्दी ही सो गये। और डेरे में चारों ओर खामोशी के अलावा छोटी नदी के पानी का कलकल स्वर और जंगली प्राणियों की आवाज़ें आ रही थी। मैं बहुत थक गया था, फिर भी न जाने क्यों सो न सका। डेरे में एक बार स्थिर हो जाने के बाद मैं फिल्म निर्माण की समस्याओं पर सोच रहा था, जिनके बावजूद मैंने इस फिल्म के निर्माण का काम हाथ में लिया। नरमुण्ड शिकारियों में से अभिनय के लिए कुछ स्थानीय कलाकारों का चुनाव करना था—खासतौर पर नायिका उन्हीं में से चुननी थी। जब तक जेनरेटर नहीं आ जाता, मचानघर के भीतर की शूटिंग नहीं हो सकती और भगवान जाने जनरेटर कब आयेगा।

मैं अपने बिछौने पर चिंताओं में डूबा लेटा हुआ था कि अचानक एक चीख सुनाई दी। हम सब टार्च लेकर भागे। देखते क्या हैं—फिल्म का हीरो डेविस फर्श पर पड़ा हुआ था। उसकी नींद अभी पूरी खुली नहीं थी। और उसकी समझ में

नहीं आ रहा था कि क्या हो गया है। हमने देखा कि जिस समय वह गहरी नींद में सो रहा था, उसकी खाट का एक पाया फर्श के भीतर धंस गया था। राहत की सांस लेकर हमने खींचखाँच कर खाट को ठीक किया। परेशान डेविस को वहीं छोड़कर हम लोग वापिस लौट आये।

उस समय से, जब यूनिट के लोगों को उनके काम समझाये जा रहे थे और उन कामों का प्रशिक्षण दिया जा रहा था। मैं मचानघरों में घूम रहा था ताकि स्थानीय निवासियों में से फिल्म के कलाकारों का चुनाव किया जा सके। मैं अपने साथ उपहार ले जाता और स्थानीय रीति-रिवाजों का पालन करते हुए मचानघरों के विभिन्न पर्वों में हिस्सा लेता। इबान लोगों में अभिनय की क्षमता हो ही यह जरूरी नहीं था क्योंकि लुली जो हमारी फिल्म की नायिका थी उसके अलावा बाकी लोगों को तो उसके साथ ही फिल्मा लिया जा सकता था। परंतु लुली को ढूंढ़ना बहुत मुश्किल काम हो गया।

बोर्नियो के जंगलों में कई सुंदर युवतियाँ थी पर हमें अपनी नायिका को चुनने में समय लगा। रेजांग की कई सहायक नदियों में इधर-उधर आने जाने में नाव को बाँस द्वार चलाने और घसीटने में हमने कई दिन बिता दिये। जितनी भी लड़कियाँ हमने देखीं वे या तो कद में इतनी छोटी थीं या इतनी लज्जाशील थीं कि उन्हें इस तरह का काम करने में डर लगता था। थोड़ी बहुत जो इस काम के लिए ठीक लग रही थीं, वे फसल कटाई के काम के कारण नहीं आ सकती थीं, एक आने के लिए तैयार हुई तो इस शर्त पर कि वह अपनी माँ को भी साथ लायेगी। परंतु जब वह आयी तो बहनें, माँ, भाई, पिता, और अन्य रिश्तेदारों के साथ मिलाकर पंद्रह लोग लेकर आयी हम लोगों ने फैसला किया कि वह हमारे लिए उपयोगी नहीं है।

इस बीच सिंगापुर से हमारे लिए बर्फ में बंद कच्ची फिल्म का और कोटा आ गया। हमने उसे कॉपित के एक रेस्तरां में डीजल से चलने वाले एक रेफ्रीजिरेटर में रख दिया। हमने मचानघर के पास शूटिंग आरंभ की लेकिन हम वहाँ जंगली सूअर के शिकार के एक दृश्य की शूटिंग के अलावा और कोई शूटिंग नहीं कर सके। रोज़ाना की बरसात ने सामान के साथ हमारी भी हालत खराब कर रखी थी। कई बार कैमरे को जमाने के लिए झाड़ियों को काट कर साफ करना पड़ा, तो कई बार कैमरे को हाथ में लेकर कमर से ऊपर तक तेज़ी से बहते पानी में रखना पड़ा।

एक हिस्सा समाप्त हुआ। लेकिन अब तक न तो नायिका का चुनाव कर पाये और न ही जेनरेटर को ठीक जगह पर ला सके। इन दोनों के आने से पहले कुछ भी कर पाना संभव नहीं था।

मैं इस बीच में स्थानीय लोगों में काफी घुलमिल चुका था। अन्य आदिवासी

जातियों की तरह इबान लोग भी बाहर के किसी आदमी को शक की निगाह से देखते हैं। उनका विश्वास जीतने के लिए मैं हर शाम मचानघर के अलग अलग परिवार के साथ बातचीत करता। स्त्रियों के साथ बातचीत नहीं कर सकता था, फिर भी पान माँगकर उनका विश्वास जीत लेता। मैंने इस युक्ति का प्रभाव जान लिया और कई बार इसका उपयोग किया।

अजीब बात है कि अगर उनके घर में कोई जवान लड़की हो तो घरवाले चाहेंगे कि हम उसकी तारीफ करें, उसकी ओर विशेष ध्यान दें। अगर मेहमान ऐसा नहीं करता तो उसे अभद्र माना जाता है और लड़की के माँ-बाप उस पर बहुत नाराज़ होते हैं।

मैंने यह सारी जानकारी जिलाधिकारी से प्राप्त की थी, इसलिए इबान लोगों का दिल जीतने में मुझे ज्यादा परेशानी नहीं हुई। इसके अलावा मैं स्थानीय डाक्टर और पादरी भी बन गया था यूनिट के सदस्यों के लिए मैं दवाईयों का पूरा बक्सा लाया था और जब कभी मचानघर में कोई बीमार पड़ता तो उसे उसी बक्से में से दवाई दे देता। इसी प्रकार किसी न किसी परिवार में आत्माओं को खुश करने के लिए मुझे हर दूसरे दिन 'बेदारा' सम्पन्न करने को पादरी की भूमिका अदा करनी पड़ती थी।

मैंने उनका विश्वास तो जीत लिया था, परंतु मेरे सिर की कोई गारंटी नहीं थी। मचानघर में जापानियों की हुकूमत के दौरान एक अंग्रेज को शरण दी गयी थी। तीन साल तक वह जितना आराम से रह सकता था रहा। फिर जब एक दिन सरदार को यह पता चला कि जापानियों को इस बात की खबर मिल चुकी है और वे हम पर हमला कर सकते हैं, तो उसी रात मचानघर के निवसियों की एक सभा हुई। उसमें अंग्रेज को भी शरीक किया गया, और उसे कहा गया कि वे उसका सिर काट लेंगे। वह घबरा गया। सरदार ने उसे समझाया कि जब से उसने यहाँ शरण ली थी। उसके साथ एक दोस्त की तरह सलूक किया गया था। परंतु अब जबकि उसका सिर कटने ही वाला है तो इसका श्रेय जापानी क्यों ले जायें, सिर मचानघर में ही रहना चाहिए जिससे हमेशा उसे याद रखा जा सके। उस अंग्रेज को अच्छा लगा हो या बुरा, जापानियों के आक्रमण से पहले ही स्थानीय निवासियों ने उसका सिर काट लिया।

सूअर के शिकार का हिस्सा खत्म किया और हम बिना कोई शूटिंग किये दो दिन तक नदी में पानी की सतह ऊपर आने की राह देखते रहे। फिर मैंने नदी में तीव्र प्रवाह देखने का तय किया, क्यों कि इस दृश्य को नायक के साथ फिल्माना था।

एक सुबह छोटी नाव में जिस पर मोटर लगी हुई थी, बैठकर निकल पड़े। मैं, जेन डेविस और दो नाविक भी साथ थे। यह तीव्र प्रवाह नदी के ऊपरी हिस्से

में लगभग साठ मील दूर था। रास्ते में मोटर खराब हो गयी। वहाँ जाना संभव न हो सका और हम रास्ते में एक टापू पर पहुँचे। दोनों नाविक वापिस डेरे तक जा सकते थे, परन्तु प्रवाह के विरुद्ध यह भी संभव नहीं हो सका। हमने नाविकों को वापिस लौट जाने के लिए कहा और हम इस उम्मीद में टापू पर रुके रहे कि तीव्र प्रवाह की ओर जाती कोई नाव शायद हमें मिल जाय। इस टापू पर एक भी पेड़ नहीं था। हमने छः घण्टे वहाँ बिताए। इस दौरान बारिश और झुलसा देने वाली तेज सूरज की किरणों में, भीगते और तपते रहे।

अचानक दूर, हमें घड़ियाल की आवाज़ सुनाई दी। जो नदी की तरफ बढ़ती जा रही थी। शासकीय सज़ावट की हुई झण्डियों से सिराकृति सजी हुई तीन लम्बी नावें दिखाई दे रही थीं। उनमें इबान लोग युद्ध की पोशाक में थे। जैसे-जैसे नावें नजदीक आती जातीं मेरे दिमाग में अनेक विचार उठते जाते— 'सेंडर्स आफ दी रिवट' आदि कई दृश्य मेरे दिमाग में घूमने लगे। मेरे साथी आती हुई नावों को भयभीत होकर देखने लगे। परन्तु ये कोई नरमुण्ड शिकारियों का अभियान नहीं था। यह तो एक बारात थी, जो पेंघुलू बाइलाँग के मचानघर से दुल्हन को लाने जा रही थी, ताकि उसे इंतजार कर रहे दूल्हे के पास पहुँचाई जा सके। रेजाँग के ऊपर के मचानघरों में यह रिवाज़ था कि दूसरे मचानघर से दुल्हन लाते समय शक्ति का प्रदर्शन किया जाता है।

हमने पागलों की तरह हाथ ऊपर उठाए, नावें टापू के पास आकर रुक गयीं। हमें बारात में शामिल होने का निमंत्रण दिया गया तथा दुल्हन के मचनाघर पर पहुँचने पर हमारा अच्छा स्वागत किया गया। बारात के सभी लोग नगाड़ा बजाते हुए गैलरी में इधर-उधर आ जा रहे थे। यह सामान्यतः दिखावा था। बहुत सारे उपहार लाये गये जिनमें कड़वी इबान शराब और बीयर भी शामिल थी। एक सुन्दर, सुगठित, सुडोल शरीर वाली युवती अपने शारीरिक सौंदर्य को पूरी तरह दिखा रही थी। कमर के ऊपर उसका बदन नग्न था। वह मेरे सामने बैठी थी और शर्म से जमीन पर नजरें गड़ाए हुए फिर उसने पेन्डुम गाना शुरू किया।

भोज आधी रात तक चलता रहा। लड़की का बाप बेटी की शादी से ज्यादा जरूरी काम के लिए बाहर गया हुआ था। वह सूअर का शिकार करने गया था। हल्की-सी चर्चा के बाद यह तय हुआ कि उत्सव उसके वापिस आने तक जारी रहेगा। हमें भी भोजन का निमन्त्रण दिया गया। हम तो इसके लिए तैयार ही थे। तौक नामक देशी शराब और लायी गयी। खूब गीत गाये गए और ढोल पीटे गये। इसके बाद कलगी वाले टोप लगाए योद्धाओं ने अपनी पारंगों को यहाँ वहाँ घुमाते हुए नृत्य किया।

सारी रात मैं उस लड़की को देखता रहा। जाहिर था कि वह मचानघरों

के युवकों के लिए आकर्षण का बिंदू थी । उसके बाल लम्बे, रंग गोरा था, उसकी आकृति सुन्दर थी । जैन डेविस और मैं—हम तीनों ने नजरें मिलायीं । यही लुली थी । क्या यह काम करने के लिए तैयार होगी ?

सुबह विवाह हो जाने के बाद हमने उस लड़की के बारे में पेंघुलू बाईलाँग से बात की । सब कुछ आसानी से तय हो गया । पेंघुलू कुलेह उस लड़की का दूर का रिश्तेदार था । वह लड़की आसानी से हमारे साथ आने को तैयार हो गयी थी ।

दोपहर को हम तीव्र प्रवाह देखने गए । बाईलाँग के मचानघर से करीब एक मील की दूरी पर नदी का प्रवाह बहुत अशाँत था । तेज प्रवाह में लगातार आने वाले बवंडरों और भंवरों के कारण नदी का प्रवाह अस्तव्यस्त हो जाता था । हमारी नाव इधर-उधर उछलती डोलती चली जा रही थी । कभी एक किनारे से दूसरे किनारे पर धकेल दी जाती तो एक सिरे से दूसरे सिरे तक पूरी तरह हिल जाती थी । हमारा संचालक बहुत सावधान था । पतवार थामे हुए व्यक्ति को वह एक-एक मिनट में इशारे दे रहा था । इन इशारों को पाते ही चालक तुरन्त नाव को मोड़ देता था । अब हमारे सामने ही वे कुख्यात प्लेगोस नाम के तीव्र प्रवाह थे, जिन्होंने कई यात्रियों को डूबो दिया था । हमारी नाव करीब पहुँची, हमने देखा कि लहरों की ऊपरी सतह पर झाग फैला हुआ था, हमारी नाव इधर-उधर झूलती हुई आगे बढ़ रही थी । आगे प्रहार करती हुई लहरों और मचलती हुई भंवरों से मिलकर विकराल जल ताण्डव का निर्माण हो रहा था, लेकिन इसके बाद जो भयानक स्थिति थी, उसके सामने यह स्थिति कुछ भी नहीं थी ।

ऊँची-ऊँची चट्टानों के करीब नदी उछलती हुई कई हिस्सों में बँट गयी थी । अलग-अलग दिशाओं और घुमावदार मोड़ों से जब अचानक एक जगह पानी एकत्रित होता तो कई तरफ प्रवाह और तेज हो जाता था । हर कुछ गजों की दूरी पर नयी भंवर थी जिनकी दूरियाँ अलग अलग थीं । लहराते तीव्र प्रवाह बड़ी निर्ममता से हमारी नाव से टकरा रहे थे । ऐसा लगता था जैसे इन्होंने हमारी नाव को खिलौना बना लिया हो । प्लेगोस नामक तीव्र प्रवाह को पार करते समय आमतौर पर कोई यात्री नाव में नहीं बैठता । यात्री किनारे-किनारे जंगल में वहाँ तक पैदल चलते हैं, जहाँ खतरे को पारकर नाव पहुँच जाती है । कोई भी नाविक एक बार से ज्यादा इस तीव्र प्रवाह को पार करने की हिम्मत नहीं कर सकता ।

दूसरे दिन सुबह हम लुली को साथ लेकर डेरे पर आये। आते ही ली ने डेनहाम प्रयोगशाला, लंदन से आयी हमारे प्रथम कान्साईनमेण्ट में भेजी गयी नेगेटिव और कलर की रिर्पोट हमें दी। उसमें लिखा था—"मचानघर के बारे में भेजी गयी पहली किस्त के नेगेटिव और कलर अच्छी किस्म के हैं। कुल रील 6/8 शॉट 10 और 2/1 शोट 9 में कैमरे की गड़बड़ी के कारण कुछ खराब पिक्चर आये हैं।

ज़ैन अपने सहायक के साथ कैमरे की जाँच में लग गये जिससे अब तक हुई परेशानी आगे न हो। मैं इस बात की योजना बना रहा था कि पानी का स्तर ऊपर आने तक और जेनरेटर के मचानघर तक आने तक, अदंरूनी शूटिंग छोड़-कर बाकी सारी शूटिंग कर ली जाय।

लुली के अलावा हमें कुछ और लड़कियाँ चाहिए थीं। जिन्हें हमने कुलेह के मचानघर से पंसद कर लिया। वे लड़कियाँ एक शर्त पर तैयार हो गयीं कि सभी को नायिका के बराबर पैसे दिये जायें। मैं सहमत हो गया। और सोचने लगा कि यह बात भारत और हॉलीवुड में भी लागू होनी चाहिए। जहाँ नायिका लाखों कमाती है और छोटी-छोटी भूमिका करने वालों को दो वक्त की रोटी मयस्सर नहीं होती।

रात को ली ने एक गंभीर समस्या के बारे में मुझे बताया। सीबु से जो लड़के हमने भरती किये थे, वे इसलिए तुरन्त हमारे साथ आने को तैयार हो गये थे क्योंकि उन्हें विश्वास हो गया था कि वे मचानघर की लड़कियों के साथ मज़े करेंगे। मैंने पहले ही यूनिट के तमाम सदस्यों को जिनमें अभिनेता भी शामिल थे, ये हिदायत दी थी कि सूरज डूबने के बाद कोई मचानघर की तरफ न जाय। परन्तु ली ने उन लड़कों को रात में देर से मचानघर की तरफ जाते हुए देखा था। हम इस समस्या की उपेक्षा नहीं कर सकते थे। क्योंकि अगर हमारे खिलाफ सरकार में एक भी शिकायत कर दी जाती है तो हम बोर्निओ से बाहर निकाल दिये जायेंगे। हमने इस समस्या पर गंभीरता से विचार किया था। और तय किया कि डेरे और मचानघर के बीच एक खुला छप्पर लगाया जाय। सामान्यत: मुझे और ली को देर रात तक काम करना होता था इसलिए सोते-सोते दो तीन

वज ही जाते थे। अब हम उस छप्पर के नीचे बैठ कर काम करते और उन रोमियो लोगों पर नजर भी रखते।

सिर्फ बाहरी शूटिंग पर केन्द्रित रहने पर भी कथा-विषय का फिल्माना गंभीरता से आरम्भ हो गया था। हर रात मुझे अपने इबान अभिनेताओं को रिहर्सल करवाना पड़ता था। उन्हें ये सारी बातें हास्यास्पद लगती थीं और मौका मिलते ही ठठाकर हँसने लगते थे। हर सुबह मैं उनका मेक-अप करता, उनकी वेषभूषा का ख्याल रखता और फिर शूटिंग आरम्भ होती। शूटिंग के दौरान कुदरती प्रकोपों से हमारा संघर्ष हर वक्त जारी रहता। रोज़ की बरसात, धुंधला मौसम, बादलों का छाये रहना, यातायात की तकलीफ, योग्य खाने का अभाव और ऊपर से बीमारियाँ। कॉपित के बाजार में या डाकघर जाने में हमें नदी के किनारे-किनारे मीलों चलना पड़ता था, उसके बाद हम रेजाँग पहुँचते। रेजाँग में साल के बारहों माह नाव चल सकती है। वहाँ से आगे के लिए ज्यादा दिक्कत नहीं होती।

जिला अधिकारी ने मुझे सलाह दी कि भंवर का सीन भारी बरसात के पहले ही फिल्मा लेना चाहिए। तदनुसार बड़ी मोटर वाली एक टेमॉस को किराये पर लिया। जरूरत का सामान (व्यक्तिगत भी) उसमें भरा और शूटिंग के लिए प्लागोस की ओर निकल पड़े। उस शूटिंग के लिए हमें सिर्फ और एक दो नाविकों की आवश्यकता थी। लुली को हमारी गैर हाजरी में कोई काम नहीं था इसलिए हमने उसे घर छोड़ दिया, जिससे वह अपने घरवालों के साथ अच्छी तरह छुट्टियाँ मना सके।

तीव्र प्रवाह के पास नदी में हमने एक टापू चुना, वह पानी की सतह से सिर्फ 10 फिट ऊँचा था। उस टापू पर किसी प्रकार की वनस्पति नहीं थी। हमने अपना तम्बू वहीं गाढ़ दिया और चारपाईयां फैला दीं। जिस हिस्से को हमें फिल्माना था, वह जोखिम से भरा हुआ था। वह वही दृश्य था जिसमें एलेक्स की नाव तीव्र प्रवाह में डूब जाती है। डेविस और तकनीशियन दोनों के लिए खतरा बहुत ज्यादा था। परन्तु वह स्थान इतना सजीव और प्रभावशाली था कि हम उसका उपयोग करने के प्रलोभन को नहीं रोक सके।

जब रात में सारी यूनिट आराम कर रही थी तो मैं साँदाई के मचानघर जाने लिए निकल पड़ा। जिला-अधिकारी ने मुझे बताया कि उसके पास एक खास डोंगी और कुशल नाविक भी हैं। जो तीव्र प्रवाह में भी नाव चला सकते हैं। और कुछ शॉटों के लिए मुझे डुप्लीकेट भी चाहिए था।

साँदाई ने मेरा हार्दिक स्वागत किया। उसके खुश मिज़ाज चेहरे पर उसका विनम्र स्वभाव झलक रहा था। मैंने उससे अपनी जरूरत की बात की तो वह तुरन्त राजी हो गया। उसने आग्रह किया कि मैं रात मचानघर में बिताऊँ और

सुबह नाविकों के साथ रवाना हो जाऊँ क्योंकि रात के समय तीव्र प्रवाह को पार करना असंभव था। मुझे उसकी बात माननी पड़ी। हालाँकि मेरे मन में संदेह था, क्योंकि साँदाई के बारे में बहुत-सी कहानियाँ सुनी थी।

जापानियों की हुकूमत के आखिरी दिनों में छः अंग्रेज सारावाक में हवाई छत्री से उतरे। उनमें से बिल सॉकोन और सार्जेण्ट बेरिए नामक दो व्यक्ति इबान प्रदेश की आखिरी सीमा में छिपे रहे। यह प्रदेश कायनो के इलाके से जुड़ा हुआ है। यहीं पर साँदाई का मचानघर था।

सॉकोन ने सबसे नज़दीक के महत्वपूर्ण इबान सरदार साँदाई से सम्पर्क किया। वे आपस में गुप्त रूप से मिले। सरदार ने अंग्रेज की बात को ध्यान से सुना। जापानियों को निकालने के लिए इबान लोगों को अंग्रेजों का साथ देना चाहिए, इस सुझाव पर वह गंभीरता से सोचने लगा, परंतु अपनी ओर से उसने कोई वादा नहीं किया। उसने कहा कि उसे अपने लोगों की सलाह लेनी पड़ेगी। इस तरह चर्चा समाप्त हुई।

इस समय चौदह जापानी सैनिकों के एक दल ने साँदाई के मचानघर के पास ही पड़ाव डाला था। सरदार आसानी से सॉकोन और बाकी लोगों को धोका देकर अच्छा खासा इनाम प्राप्त कर सकता था। सॉकोन और बारिये इस बात को जानते थे, वे दो दिन तक बड़ी बैचेनी से सांदाई के वापिस आने का इंतजार करते रहे। उन्हें मालूम नहीं था कि जवाब क्या होगा। तीसरी रात जब वे अपने छिपने के स्थान पर सो रहे थे, चप्पू चलने की आवाज़ आयी। वे उठ बैठे, झाड़ियों के बीच से उन्होंने नाव में से उतरकर आते हुए आदमियों की छाया देखी। सबसे पहले किनारे पर उतरने वाला व्यक्ति था साँदाई, जो दोस्त की तरह आ रहा था कि दुश्मन की तरह कुछ पता नहीं चल रहा था। उसके साथ उसके दो साथी एक भारी बोरी उठाये आ रहे थे।

अभिवादन का एक शब्द कहते हुए साँदाई ने बोरी खोलने का आदेश दिया। आदमियों ने बोरी जमीन पर खाली कर दी। अंधेरे में वह नारियल के ढेर की तरह लगता था। सॉकोन और बॉरिये इसका मतलब नहीं समझे और परेशान होकर एक दूसरे की ओर देखने लगे। बाद में सॉकोन को पता चला कि वे उन चौदह जापानियों के मुण्ड थे, जिन्होंने मचानघर के पास पड़ाव डाला था। अंग्रेजों का साथ देने निकले साँदाई और उसके साथियों ने दुश्मनीवश जापानियों पर हमलाकर दिया और सभी सैनिकों को मार डाला। यह साँदाई का उत्तर था और इससे ज्यादा साफ और क्या हो सकता है। अब आप उस समय की मेरी मानसिक स्थिति की कल्पना कीजिये। जब कि मुझे रात वहाँ रुकने को कहा गया था। उस रात मैं साँदाई के कमरे में उसी के पास बेंत की चटाई पर सो रहा था। उसकी तलवार दीवार पर उसकी पहुँच के हद में थी।

हमने प्लागोस नामक तीव्र प्रवाह पर शूटिंग करना प्रारंभ किया। कैमरे को ठीक से जमाने में कभी कभी घण्टों बीत जाते थे। सामान्यतः हम विकराल जल के ऊपर उठी हुई नुकीली चट्टानों पर कैमरा जमाते थे। कभी कभी हम ऐसी चट्टान पर पहुँचते जहाँ चिकनेपन के कारण कैमरा रख भी नहीं सकते थे। एक बार डेविस की नाव एक चट्टान से इतनी जोर से टकराई कि डेविस के बचने की कोई उम्मीद नहीं रही थी। बिना किसी प्राणहानि के हमने यह हिस्सा पूरा फिल्माया। इसका श्रेय साँदाई द्वारा भेजे गये नाविकों को जाता है।

टापू के डेरे में यह हमारी आखरी रात थी। उस रात जश्न मनाने के लिए हमारे लड़कों ने मुर्गियां भूनीं और हम सबने मिलकर बहुत अच्छा खाना खाया। डेविस ने शराब पी और नाच कर हम लोगों का मनोरंजन किया। हम सब खुश थे क्योंकि यह मुश्किल दृश्य बिना किसी दुर्घटना के पूरा हो गया था। हम सोने ही जा रहे थे कि हमारी टेमॉस में आये नाविकों ने आकर सूचना दी कि पानी बढ़ रहा है और अंदाज है कि सुबह होने से पहले यह टापू पानी की सतह के नीचे होगा। कुछ लोगों ने तुरंत मचानघर में जाने का प्रस्ताव रखा और कुछ लोगों ने नाविकों की बातों पर ध्यान नहीं दिया। सभी लोग सो गये परंतु मैं सो नहीं सका। कहीं ऐसा न हो हम गहरी नींद में सो रहे हों और पानी ऊपर आ जाये। मैंने एक कुर्सी ली, तम्बू के बाहर बैठकर निगरानी करने लगा। नाविक ठीक कह रहा था। सुबह तक टापू करीब करीब डूब चुका था। मैंने लड़कों को जगाया। जल्दी जल्दी सामान बाँधा और टेमॉस में डाला, तब तक पानी घुटनों तक आ चुका था।

हम अपनी नायिका को लेने बाइलाँग के मचानघर में गये, परंतु उसने आने से मना कर दिया। हमने उसके साथ पहले कुछ शूटिंग की थी। उसे दुबारा फिल्माने का खर्च नहीं कर सकते थे, इसलिए हमने बाइलाँग से दुबारा बात की कि हमें बहुत नुकसान होगा। बाइलाँग ने उस नायिका से बात की और हमें बताया कि वह मचानघर में नहीं जाना चाहती, क्योंकि वहाँ उसकी कोई सहेली नहीं है। आखिरकार बाइलाँग और उसकी पत्नी ने उसे मना लिया और हम कुलेह के मचानघर की ओर चल पड़े।

उसी शाम हम अपने डेरे में पहुँचे, हमने देखा कि सँगाई अमाँग नदी में पानी बढ़ रहा है। दूसरे दिन ली की योजना के अनुसार जेनरेटर डेरे में आ गया। उस रात हमारे डेरे के हर कमरे में बिजली हो गयी थी। मैं तथा ली सुबह तक खुले छप्पर के नीचे बैठे-बैठे अगले कार्यक्रम की योजना बनाते रहे।

अब हमने पूरी गंभीरता से शूटिंग आरंभ कर दी। ली चार हार्सपावर की एक तेज रफ्तार से चलने वाली नाव खरीद लाए। चूंकि नदी में पानी का स्तर काफी ऊँचा था इसलिए अब हम तेजी से काम कर सकते थे। वहाँ के लोगों की

पारिवारिक जिंदगी और पेंगन समारोह के दृश्य फिल्माने जब हम लॉग हाऊस गये तब कई समस्याओं का सामना करना पड़ा। पहली समस्या तो यह थी कि हमारे पास कुल 12 किलो वाट विद्युत उपकरण था जब कि यहाँ के लिए साधारणतया अस्सी या इससे ज्यादा बिजली की जरूरत होती है। और फिर हमें रात के दृश्य भी फिल्माने थे, जिसमें सौ से ज्यादा लोग शामिल थे। और फिर किसी प्रकार की ट्रौलीशोट की कोई संभावना नहीं थी। जैसे ही कोई उस फर्श पर चलता बत्तियाँ और कैमरा उछलने लगते। कैमरे और बत्तियों को फर्श पर लगाना एक बहुत बड़ी समस्या थी। आप उस समय की हमारी मुसीबतों का अंदाजा लगा सकते हैं, जब हमने गैलरी में जँगली नृत्य को फिल्माया, जिसमें हर क्षण नर्तक कूदता रहता था।

ध्वनि को दो टेपरिकार्डरों पर रिकॉर्ड किया गया था जो बैटरी से चलते थे। तत्कालिक जरूरतों को पूरा करने के लिए हमें निरंतर कोई न कोई नयी पद्धति खोजनी पड़ती थी। इसके साथ ही हम इस तथ्य को भी नजर-अंदाज नहीं कर सकते थे कि हम दुनिया के सबसे ज्यादा खतरनाक नरमुण्ड शिकारियों को फिल्मा रहे हैं। मचानघर की कड़ियों से उन नरमुण्डों की कतारें लटकी हुई थीं, जो धुंए से काले हो गये थे और उनके पुराने रीति-रिवाज़ों की याद दिलवा रहे थे।

हर शाम सारी एक्सपोज्ड फिल्म डिब्बों में बंद कर तेज गात वाला नाव से सीबु भेजी जाती थी। वहाँ से हवाई जहाज द्वारा उसे इंग्लैण्ड भेजा जाता था। उसे डवेलप करने के बाद डेनहाम लेबोरेटरी से हमें एक पाईलट ध्वनि प्रति, हर शॉट के दो रंगीन प्रिंट और एक विस्तृत रिपोर्ट भेजते जो हमारे एक मात्र मार्ग दर्शक थे।

फरवरी के अंत तक असंख्य मुसीबतों को पार करते हुए हमने काम का ज्यादातर हिस्सा पूरा कर लिया था। रिचर्ड और सैम का काम खत्म हो गया था। उन्हें वापिस सिंगापुर भेज दिया गया। कुलेह मचानघर के पास का अब सिर्फ छः दिन का काम बाकी रहा था। इस काम में नायक नायिका के प्रेमप्रसंग और एक वानर नृत्य शामिल थे। एक दिन की शूटिंग के बाद हम कलाकारों और साधन सामग्री के बाद उस स्थल पर पहुँचे तो वहाँ उस लोकेशन का नामो-निशान नहीं था। बड़ी बड़ी चट्टानों के बीच बहता हुआ पानी कहीं भी दिखाई नहीं दे रहा था। रात में पानी बहुत ऊपर आ गया था और हमारे प्रेम प्रसँग का स्थान पानी के दस फिट नीचे दब गया था।

अब इसके अलावा कोई चारा नहीं था कि हम उन दृश्यों को दुबारा फिल्माएं, जिन्हें हम फिल्मा चुके थे। हमने ऐसा ही तय किया। हमने शूटिंग स्थगित की और दूसरे लोकेशन को ढूंढ़ने निकल पड़े। एक वैकल्पिक लोकेशन स्थल खोजने के

बाद हम डेरे पहुँचे। वहाँ हमने देखा कि डेविस पड़ा हुआ है, उसे तेज बुखार है और उसके शरीर में दर्द हो रहा है।

कुछ समय से मचानघर में छोटी माता का प्रकोप था। और इबान-लोग कोई सावधानी नहीं वरत रहे थे। हमने सभी लड़कों को आते ही टीके लगवा दिये थे। जब सबके टीके लगवाये जा रहे थे तब डेविस वहाँ नहीं था। हमने देखा कि उसे छोटी माता निकल आयी है।

हम सब कुछ भी नहीं कर सकते थे। मीलों लम्बा सफर करके हमने उसे एक मिशनरी अस्पताल में भरती करवाया। डॉक्टर ने बताया कि बिल्कुल ठीक होने में लगभग पंद्रह दिन लग जायेंगे।

कुचिंग में हमें तीन दिन का काम था। यह काम हमें डेविस के अस्पताल भरती के दौरान ही करना था। इसके अनुसार मैंने कुचिंग में व्यवस्था करने के लिए अपने मुख्यालय को लिखा। इस काल में बंदर नृत्य के दृश्य को पूरा करने की योजना बनाई थी। मैंने उस नर्तक का पता ढूंढ़ा। हमारे डेरे से कोई साठ मील दूर वह एक मचानघर में रहता था। मैंने एक तेज नाव ली और उसे लाने निकल पड़ा।

रास्ते में मोटर खराब हो गयी। चालक ने सुझाव दिया कि मोटर मरम्मत के लिए दे देनी चाहिए तथा एक सर्विस मोटर ले लेनी चाहिए। हम एक दुकान पर गये जहाँ सिर्फ पैंतीस हार्सपावर की मोटर थी। यह मोटर हमारी नाव के लिए भारी होने के बावजूद किसी अन्य उपाय के अभाव में हमें उसे ही उसे लेना पड़ा क्यों कि मैं काम में विलंब नहीं करना चाहता था।

लगभग चालीस मील दूर जाने पर हमें पता चला कि जल प्रवाह बहुत तेज है और अशांत भी है। उसका एक मात्र कारण था नदी के ऊपरी हिस्से में जोर-दार बरसात हो रही थी। तेज लहरों में हमारी नाव ऐसी लगती थी मानो चारों ओर से उसे बड़ी निर्दयता से पीटा जा रहा हो।

वह नाव स्थानीय रूप से बनी हुई थी। उसके पेंदे में पेचों से ज्यादा तो कीलें ठोंकी हुई थीं। मुझे डर था कि भंवर में फंसकर ये छोटी छोटी कीलें अलग हो जायेंगी और तला निकल जायेगा। दो भवरें मुझे सामने दिखाई दे रही थीं। चालक ने भी भंवरें देखीं। उसने नाव को पहले भंवर से बचाकर निकाला तो दूसरे में फंस गयी। नाव गोल गोल घुमने लगी और यह मैं जानता था कि अभी देखते देखते नाव भँवर के केन्द्र में खींच ले जायेगी। और हम नीचे, बहुत नीचे चले जायेंगे। फिल्म के मोन्ताज की तरह मेरी आँखों के सामने अपने निकट और प्रिय जनों के चेहरे घूम गये। मुझे अपने भीतर एक अजीब सनसनी का अनुभव हो रहा था। घबराहट में चालक ने तीस हार्सपॉवर मोटर की पूरी ताकत का इस्तेमाल किया। इससे हल्की सी नाव, जिस पर सिर्फ दो आदमी बैठे थे,

उछलकर भंवर की हद के बाहर आ गयी। साधारणतया इस तरह अचानक उछलने के कारण नाव उलट जाती है, परंतु ऐसा हुआ नहीं। हमारी जिंदगी इस शक्तिशाली मोटर के कारण बच गयी। अगर इस नाव पर हमारी सात हार्सपॉवर वाली मोटर होती तो शायद आज हम नहीं बच पाते।

चालक ने हथेली के उल्टे हिस्से से प्रवाह पर नज़र रखते हुए सफर जारी रखा। हम नर्तक से मिले। शाम को उसे लेकर वापिस डेरे पर पहुँचे। हमने दो तीन रात काम किया और इस तरह तीसरे दिन हमने नृत्य का प्रसंग फिल्मा लिया।

9

अगले दिन मैं और ली दोनों ही डेविस को देखने अस्पताल गये। उसकी तबीयत सुधर रही थी। हमने उससे प्रार्थना की कि हम कुचिंग जा रहे हैं। वहाँ तीन दिन का काम है। वापिस लौटने तक वह अस्पताल में ही रहे।

कुचिंग में हमें सभी लड़कों की जरूरत नहीं थी। परंतु उन्हें डेरे में छोड़ना भी खतरे से खाली नहीं था। हमारी सारी सावधानी के बावजूद कई अप्रिय घटनाएँ हुई। जब ये लड़के अपना भाग्य आजमाने चुपचाप छिपकर मचानघर जाते रहे थे। हमने फैसला किया कि सारी यूनिट को सीबु ले जाया जाये। स्थानीय लड़कों को वहीं छोड़ दिया जाय और वापिस लौटते समय साथ ले लिया जाये। हमने अपनी जरूरत की सारी सामग्री डेरे में ही रखी क्योंकि इस बात का हमें यकीन था कि यहाँ काफी सुरक्षा है। एक चीज जिससे इबान लोगों को सख्त नफरत थी—वह थी चोरी।

मुझे यह कुबूल करना चाहिए कि इबान लोगों से ज्यादा अनुशासित लोग इस सभ्य संसार के किसी भाग में नहीं होंगे। मचानघर में साठ परिवार रहते थे परन्तु मैंने उन्हें कभी आपस में लड़ते-झगड़ते नहीं देखा। कभी-कभी बच्चों में भी आपसी झगड़े होते रहते थे। परन्तु उनके माँ-बाप ऐसी हल्की वारदातों को वादविवाद का विषय नहीं बनाते थे। हर प्रकार की समस्या के बारे में सरदार को बताया जाता था। वह एक सभा बुलाता और सभा का निर्णय आखरी माना जाता था।

चार मार्च को हम कुचिंग पहुँचे। महल और अन्य महत्वपूर्ण स्थानों को भीतर से फिल्माने की जरूरी इज़ाजत लेने में हमें बहुत सारा समय लग गया। नौ तारीख को हमने अपना काम पूरा कर लिया और सीबु से लड़के लेकर वापिस

डेरे लौट आये।

फ्रेम में गंदगी, खरोचें और दूसरी परेशानियों के कारण डेनहॉम लेबोरेटरी से जिन शॉट्स को दुबारा लेने के लिए कहा गया था। उनको हमने वापिस फिल्मा लिया। जैन की प्रशंसा करनी चाहिए क्योंकि बत्तियों की कमी होने पर, बदलते हुए मौसम और अन्य असंख्य कठिनाईयों के बावजूद नेगेटिव की गुणवत्ता के बारे में कभी कोई शिकायत नहीं हुई।

वापिस डेरे लौटते समय हम डेविस को लेने अस्पताल पहुँचे। डाक्टरों ने बताया कि वह तो दस तारीख को ही यहाँ से चला गया। डाक्टर ने उसे अस्पताल में रोकने की पूरी कोशिश की लेकिन उनका आग्रह उसके अस्पताल छोड़ने के फैसले को बदल नहीं सका। वह यह कहकर चला गया कि अस्पताल में उसे उकताहट हो रही है। हमने अस्पताल का बिल चुकाया और दोपहर बाद चार बजे डेरे पहुँचे।

हमारी वापसी पर मचानघर के निवासी बहुत खुश हुए और उन्होंने हमारा सामान उतारने में मदद की। हम सभी चाय का पहला प्याला पी ही रहे थे कि ली आये और उन्होंने सूचना दी कि डेविस अस्पताल से लौटकर डेरे में आ गया है। उसे मालूम था कि पेंघुलू कुलेह के मचानघर की लड़कियों के साथ वह स्वच्छन्दतापूर्वक आचरण नहीं कर सकता क्योंकि अब तक वे सभी उसे पहचान चुकी हैं। इसके अलावा उसे पर्याप्त तौक पीने को भी नहीं मिला। उसने गुप्त रूप से एक तेज गति वाली नाव ली और एक मचानघर से दूसरे मचानघर के बीच भाग भाग कर मछली की तरह तौक पीता रहा। युवतियाँ उससे आतंकित हो रही थीं। इबान लोग गोरे राजाओं के प्रति वफादार रहे इसीलिए अब भी किसी भी गोरे आदमी के प्रति बहुत ही मेहमाननवाज और कृपालु थे। डेविस इसका भरपूर फायदा उठा रहा था। वह अब भी कमजोर था, डर यह था कि अगर वह फिर से बीमार पड़ गया तो सारा कार्यक्रम अस्तव्यस्त हो जायेगा। हमने मचानघर के एक विश्वसनीय आदमी को उसे ढूँढ़ने के लिए भेजा।

पेंघुलू 'लादान' से वापिस आ गया था और हमें देखकर बहुत खुश हुआ। उसने हमारे साथ सिगरेट पी और मुझे खाने का निमन्त्रण दे गया। मैंने स्वीकृति दे दी क्योंकि इससे पहले चार पाँच बार कोई न कोई बहाना करके टालता रहा था। मैंने बहुत पहले भी उनके यहाँ कई बार खाना खाया था। उनके यहाँ का भोजन दर-असल एक परीक्षा है। उनके भोजन में चावल के साथ उबला हुआ मांस, उबली हुई मछली होती है, हरी भाजियाँ होती हैं और इनमें सिर्फ नमक होता है। फिर भी मैं उस वृद्ध व्यक्ति का दिल दुखाना नहीं चाहता था।

उस रात एनॉय ने मुझे चावल और माँस परोसा। वह किसका माँस था, इसकी ओर मैंने कोई ध्यान नहीं दिया। किसी तरह खाना निगलता गया। इतने

में उसके दामाद ने मुझे बताया कि, यह एक चींटीखोर का माँस था। जिसे उसने उसी दिन दोपहर को मारा था। लम्बी जबान वाले इस बदसूरत जीव को बच्चे उस दिन खींच रहे थे जब हम वहाँ पहुँचे थे। जैसे ही मैंने यह सुना वैसे ही मेरा जी खराब हो गया लेकिन फिर भी मैं किसी तरह खाता रहा क्योंकि मैं उसे अप्रसन्न नहीं करना चाहता था।

रात के खाने के तुरन्त बाद मैंने एनॉय से पान माँगा इस उम्मीद में कि शायद इसके चबाने से माँस का स्वाद मिटाया जा सके। उसी रात कुलेह ने मुझे बताया कि हमारी यूनिट के दो लड़के जिनको हमने कुचिंग जाते समय सीबु में छोड़ा था एक शाम मचानघर वापिस लौट आए। दोनों पीये हुए थे। उन्होंने लड़कियों को छेड़ना शुरू किया। मचानघर के कुछ युवक नाराज हो गये। इस घटना की सूचना पेंघुलू को दी तो उसकी आँखों में खून उतर आया। इन दो मजनूओं को इसलिए बख्श दिया गया क्योंकि एक तो कुलेह तेमांग गांग जुगा की इच्छा के विरूद्ध हमारी मदद कर रहा था और दूसरे उसने महसूस किया कि इन दोनों की जान लेने से मेरे काम में काफी बड़ी बाधा पहुँचेगी। लेकिन फिर भी उन्हें अपनी जिंदगी की सबसे भयंकर मार झेलनी पड़ी और सुबह होते ही बोरिया बिस्तर बाँधकर वहाँ से रवाना कर दिया। पेंघुलू ने मुझे यह सुझाव दिया कि इस घटना की जानकारी की मैं उन्हें कोई सूचना न दूं। उसने मेरी दूर दृष्टि की प्रशंसा की। क्योंकि मुझे इस बात की आशंका पहले से ही थी, इसीलिए मैंने काम की जगह पर एक खुल्ला छप्पर बना लिया था और इन दोनों लड़कों पर नजरें रखे हुए था। मैंने बुजुर्ग का अभार माना क्योंकि अगर उन्होंने आखरी कदम उठाया होता तो मुझे कितनी परेशानी होती, यह मैं अच्छी तरह जानता था।

उस रात मैंने ली से इस बात की चर्चा की और यह तय किया कि शूटिंग खत्म होते ही हम इन्हें यहाँ से वापिस भेज देंगे। परन्तु हमें लेबोरेटरी की रिर्पोट आने तक राह देखनी पड़ेगी हो सकता है कुछ शॉट्स फिर से लेने पड़ जायें। और यह काम बिना इन लड़कों के संभव नहीं था।

दूसरे दिन डेविस आया, बिल्कुल बिजूखे जैसा लग रहा था। उसका चेहरा और शरीर दागों से भरा हुआ था मैंने उसकी गैर जिम्मेदार हरकतों को लेकर उसे डाँटा। वह मुस्कराता रहा मानो यह कह रहा हो कि आपकी गैर हाजरी में, इन दिनों में जो मजा मैंने लूटा, उसके सामने यह डाँट कुछ भी नहीं है।

जैन इस बात से परेशान था कि इन दागों के कारण दृश्यों का सातत्य कैसे बनाए रखेगा ? मैंने एक घण्टे तक उन दागों को छुपाने के लिए खास प्रयत्न किया, तभी जैन ने अचानक कहा, बस आगे वह खुद ठीक कर लेगा।

दोपहर को हम लोकेशन चुनने गये, हम अचानक वहाँ पहुँच गये जहाँ

हमने एक दिन की शूटिंग की थी और जलस्तर ऊपर आ जाने के कारण हमें वह जगह छोड़नी पड़ी थी। इतने में ज़ैन खुशी से चिल्ला उठा क्योंकि वह लोकेशन बिल्कुल वैसा ही था जैसा हमने एक दिन की शूटिंग के वक्त छोड़ा था। मतलब यह हुआ कि जो हिस्सा हमने फिल्माया था उसका उपयोग हो सकता था। सच-मुच वहाँ हमने कुछ मुश्किल शॉटस् लिए परन्तु नतीजा बहुत संतोषजनक आया।

दूसरे दिन हमने जल्दी ही शूटिंग शुरू कर दी थी और धूप रहने तक करते रहे। इससे पहले कि बरसात फिर हमारे साथ कोई मज़ाक करे, हम यह प्रसंग समाप्त कर लेना चाहते थे। दो दिनों में हमने उस प्रसंग को पूरा कर लिया। सत्ताईस दिसम्बर को हमने शूटिंग प्रारम्भ की थी और आखरी शॉट चार मार्च को लिया गया। काम करते समय हालात को देखते हुए यह बहुत बड़ी उपलब्धि थी।

तीन महीनों में हमने शूटिंग पूरी की। स्थानीय काम करने वालों को पैसे देकर वापिस भेज दिया गया। ज़ैन अंथोनी और डेविस को कॉपित के विश्राम गृह में रखा गया। रात दिन सतर्क रहते-रहते मैं थक गया था। विशेषकर डेविस को मचानघर के पास नहीं रहने देना चाहता था। महीनों तक रहे मानसिक तनाव के कारण नसें फटने लगी थीं और मुझे आराम की सख्त जरूरत थी। जो आखरी किस्त हमने लेबोरेटरी भेजी उसकी रिपोर्ट के इंतजार में मैं अकेला डेरे में रहा।

हर सुबह लुली आती और दो कप चाय बना जाती। उसने यह कला हमारे रसोईये से सीखी थी और इससे वह काफी खुश थी। वह एक कप मुझे देती और दूसरा कप लेकर चित्रों के एल्बम के साथ बैठ जाती। वह पन्ने पलटती रहती और फोटो देखती जाती— बार बार उन्हीं चित्रों को देखती और आँसू उसके गालों पर सतत बहते रहते। यह रोज़ की बात हो गयी। उस एल्बम का कोई पन्ना उसके आँसुओं से भीगे बिना नहीं रहा था। यह सारा प्रसंग इतना मार्मिक था कि मैं उसे रोक भी नहीं सकता था।

सुबह शाम मैं एक ही बर्तन में चावल उबालता और मक्खन व नमक मिला कर खा लेता था। कई दिनों तक यही मेरा भोजन रहा। एक दोपहर को जिला अधिकारी का एक बहुत जरूरी संदेश पाकर मैं कॉपित भागा। वहां पहुंचने पर जिलाधिकारी ने बताया कि डेविस कॉपित के पास एक मचानघर में गया और एक विवाहित औरत के साथ रात भर रहा था। अचानक उसका पति आ गया था और उसने इसे देख लिया। डेविस किसी तरह अपनी जान बचाकर भागा परन्तु उस नरमुण्ड शिकारी पति ने उसका सिर काटने की कसम खायी थी। जिलाधिकारी ने पति को चेतावनी भी दी परन्तु वह बहुत ही कठोर और अजीब आदमी था। अगर वह अपने शिकार को पाने में सफल हो जाता तो मैं और जिलाधिकारी दोनों मुसीबत में फंस जाते।

ऐसी परिस्थिति का सामना करने को मैं मानसिक रूप से तैयार नहीं था। इसलिए ठीक से सोचने में मुझे थोड़ा समय लगा। मैं उस औरत के पति सिबात को जानता था। जब मैं जिलाधिकारी से मिलने आया तो मैंने उसे तलवार लिए हुए बाजार में घूमते हुए देखा था। जिलाधिकारी ने मुझे बताया, जैसा मैं जानता था सिबात इतना जिद्दी और कठोर इसलिए था क्योंकि उसे मालूम था कि अगर कुछ हो गया तो जुगा उसकी पूरी मदद करेगा।

जैसा मैंने पहले ही बताया कि डेविस का अब यहाँ कोई काम नहीं था। हम लेबोरेटरी की रिपोर्ट की राह देख रहे थे। इस उम्मीद में उसे रोक रखा था कि अगर कोई शॉट दुबारा फिल्माना पड़ गया तो उसकी जरूरत पड़ेगी। मैंने दिमाग में कुछ हिसाब लगाया और जिलाधिकारी से कहा मैं एक जोखिम उठाना चाहता हूँ। मैं कल सुबह उसे वापिस भेज दूंगा और जिलाधिकारी से विनती की कि वह उसे एक रात के लिए शरण दे दे।

जिलाधिकारी ने सिर हिलाया और कहा कि इबान लोग बहुत चालाक होते हैं। अगर डेविस रात को कॉपित में रहेगा तो चाहे कितना ही बड़ा संरक्षक हो उसे नहीं बचा सकता। उस रात पुलिस चौकी पर सिर्फ छः सिपाही थे। सिबात और उसका दल या तो पुलिस को हरा देगा या सभी को नजरअंदाज कर डेविस का सिर काट लेगा। जिलाधिकारी ने सलाह दी कि मैं उसे एक रात के लिए मचानघर ले जाकर पेंघुलू के कमरे में रखूं।

शाम होने के बाद मैं कॉपित से निकला। रात अंधेरी और कोहरे से भरी थी। अंधेरे में बहुत कम दिखाई देता था और कॉपित से वापिस डेरे जाना बड़े ही साहस का काम था। क्रोधित नरमुण्ड शिकारियों के आक्रमण के भय से सफर की कठिनाई कई बार ज्यादा होती थी। उस वक्त और भी ज्यादा हुई जब हम सेंगाई-अमांग में दाखिल हुए। इबानों का सामान्य तरीका था--पेड़ की डाल पर लेट कर शिकार को ज़हरीला तीर मारना। यह भी डर था कि मोटर की आवाज शिकारी को ठीक समय पर हमला करने का संकेत देगी।

मैं सही सलामत डेरे पहुँचा और पेंघुलू को सारी बातें समझाई। उसने जिलाधिकारी की सलाह अनुसार डेविस को एक रात की शरण दी। थकामाँदा मैं डेरे पर लौटा। सिर्फ इस बेहूदी घटना को भूलने के लिए ग्यारह बजे तक पढ़ता रहा। उस समय मैं जाग ही रहा था कि आती हुई नाव की आवाज़ सुनाई दी। एक छोटी नाव थी और हमारे डेरे के ठीक सामने आकर रुकी। मुझे हमारे छोटे मचानघर की फर्श पर आते हुए दो आदमियों के कदमों की आवाज़ सुनाई दी। वे आये, और मेरे दरवाज़े के सामने रुक गये।

कौन है ? मैंने पूछा !

सिबात। जवाब मिला। एक क्षण के लिए मैं नहीं समझ सका कि मैं क्या

करूँ। दरवाजा तो सिर्फ पत्तों का बना था, जिसे सिवात किसी भी क्षण धक्का देकर खोल सकता है। भागने को और कोई उपाय नहीं था। मुझे इस बात का पश्चात्ताप हुआ कि एनॉय ने मुझे बार बार डेरे में अकेले न रहने की चेतावनी दी थी। मुझे मालूम था कि सिवात बंद दरवाजे के बिल्कुल करीब नंगी तलवार लिए खड़ा है। जैसे ही मैं दरवाजा खोलूंगा वह तलवार का वार कर देगा। अंधेरे में जो भी दरवाजा खोलेगा सिवात उसे खत्म करेगा और उसके बाद डेविस की तलाश करेगा।

सोचने के लिए बिल्कुल समय नहीं था। अचानक मुझे एक उपाय सूझा। सिवात मुझे जानता था और दूसरे इबान लोगों की तरह पसंद करता था। अगर वह मुझे पहचान लेगा तो नहीं मारेगा। मेरे पास शिकार वाली शक्तिशाली टार्च थी। सिवात को यह बताते हुए कि मैं हूँ टार्च को मैंने अपने चेहरे पर केन्द्रित की। दरवाजा खोला जैसा मैंने सोचा सिवात नंगी तलवार लिए खड़ा था। परंतु मेरी युक्ति काम कर गयी। उसने तलवार को म्यान में रखा और डेविस के बारे में पूछा। मैंने उसे बताया कि वह कॉपित में था। परंतु सिवात ने मुझे कहा, किसी ने उसे खबर दी कि उस शाम मैं उसे अपने साथ डेरे ले आया हूँ। डेविस डेरे में नहीं था। यह बात उसे समझाने में मुझे कुछ समय लगा। मैंने उसे सभी कमरे दिखा दिये। उसे तथा साथ आये उसके मित्र को शाँत करने के लिए कुछ सिगरेटें दीं। फिर भी सिवात ने जाने से पहले मुझे कहा अगर डेविस मिल गया तो वह जरूर उसका सिर काट लेगा।

अगले दिन सुबह जिलाधिकारी की दी हुई तेज रफ्तारवाला नाव से मैंने उसे सीबु भेज दिया और साथ में ली को उसके लिए सिंगापुर का टिकिट आरक्षित करवाने के लिए पत्र लिख दिया। अभी तक हमें रिपोर्ट नहीं मिली थी परंतु मैं खतरा उठाना नहीं चाहता था।

पिछले कुछ महीनों से निरंतर मानसिक तनाव, अयोग्य खाना तथा अन्य सुख सुविधाओं के अभाव में, शारीरिक परिश्रम और आखिर में डेविस की इस शरारत के कारण मेरी शक्ति क्षीण हो गयी थी। मैं अस्वस्थ तथा कमजोर हो गया था। डेरे में मैं अकेला था। ली अब भी सीबु में ही थे मैंने ईश्वर से प्रार्थना की कि वह मेरी हालत के और बिगड़ने से पहले ही यहाँ आ जाय।

सारा दिन लुली और मचानघर की अन्य लड़के लड़कियाँ मेरे साथ रहते और लुली मेरे लिए चाय बनाती रहती। शाम को पेंघुलू और अन्य लोग मिलने आये। सरदार ने पूछा कि जरूरत हो तो किसी आदमी को भेजकर ली को बुला लिया जाय। मैंने कहा सुबह तक बताऊँगा। मुझे बुखार था परंतु इससे मैं ज्यादा परेशान नहीं था। मैं इस बात से चिंतित था कि मैं कमजोरी के कारण क्षीण हो गया हूँ।

पेंघुलू और अन्य लोगों के जाने के बाद मुझे कंपकपी शुरू हो गयी। यह कंपन मलेरिया के कारण नहीं, नाड़ियों के अत्यधिक तनाव के कारण था। परंतु मैं इसके लिए कुछ नहीं कर सकता था। मैं इतना काँप रहा था कि प्यास लगने पर एक प्याला पानी उड़ेलने की शक्ति मुझमें नहीं रही। और किसी को मचान-घर से भी बुलाने की शक्ति अब नहीं रही। इस तरह जब मैं असहाय लेटा था तब ही पेंघुलू की पत्नी और बहन मुझे देखने को आयीं। पहली बार कोई स्त्री सूर्यास्त के बाद हमारे डेरे में आयी थी। एनॉय ने मेरे माथे को छूआ और कांपता देखकर कम्बल औढ़ाया। परंतु इससे काँपना कम नहीं हुआ। एनॉय ने अपनी बहन से कुछ बात की और मेरे कम्बल में घुसकर अपने करीब करीब नंगे बदन से मुझे ढक लिया। मुझे पता ही नहीं कि वह कब तक इस हालत में रही। शायद जब तक कि उसके बदन की गर्मी से मेरा काँपना बंद नहीं हुआ। यह एक ऐसा काम था जो मेरी अपनी माँ भी नहीं कर सकती थी। मेरी हालत कुछ सुधरी और वह खड़ी हुई। मेरे लिए पानी का गिलास भरा और डेरे में बिल्कुल अकेले रहने पर मुझे फिर एक बार डांटा। उसके जाने के बाद कुछ ही मिनटों में मचानघर के युवक आये और कमरे में लकड़ी के फर्श पर चटाई बिछायी जाहिर था उन्हें एनॉय ने भेजा था।

मैं बिस्तर पर लेटा-लेटा उस भली औरत के बारे में सोच रहा था। एक इबान स्त्री जो उस किसी आदमी के साथ शादी करने की बात सोच भी नहीं सकती जिसने कुछ नरमुण्ड नहीं काटे हों। उस औरत के दिल में मेरे प्रति इतना प्यार, इतनी सहानुभूति और दया, वाकई बड़े आश्चर्य की बात है। कुछ ही दिनों में मैं हमेशा हमेशा के लिए चला जाने वाला था। और फिर कभी लौटकर आने की संभावना नहीं थी। फिर भी उसने एक माँ का फर्ज अदा किया। वह मुझे अनाक कहकर पुकारती थी। मैं उसे एनॉय कहता था। अपनी भावनाओं को मैं कभी भी उसके सामने व्यक्त नहीं कर सकता और उसका कर्ज कभी भी नहीं चुका सकता। सारी जिंदगी गर्व और हर्ष के साथ मैं उसका ऋणी रहूंगा।

आखिर एक दिन लेबोरेटरी से निर्णायक रिपोर्ट आ गयी। कोई शॉट फिर से फिल्माने की जरूरत नहीं पड़ी। ली सीबु से लौट आये और हमने अपना सामान बाँधना प्रारंभ कर दिया। परंतु जल्दी ही हमने महसूस किया कि दिन में सामान बाँधना असंभव था। हर क्षण मचानघर की युवतियाँ युवक, बूढ़े सभी नदी पर आते जाते हमें सामान बाँधते देखते रहते। आँखों से बहते आँसुओं से वे चुप-चाप देखते रहते। यह हमारी सहनशक्ति के बाहर की बात थी। रात जब मचान घर के सभी लोग गहरी नींद में सो रहे होते तो हम सामान बाँधना शुरू करते।

इसलिए दिन में कोई खास काम नहीं रहता था। मचानघर के जिन बच्चों के साथ मेरी दोस्ती थी उन्हीं के साथ ज्यादातर समय बीतता था। उन बच्चों

[illegible] बच्चा [illegible] का ढाई साल का पोता-तेदांग । अगर [illegible] दोनों जो मेरे पास नहीं आता। मेरी अंगुली पकड़ [illegible] ले जाता । उसके पीछे जब मैं उसके कमरे में [illegible] उतारता और मुझे फर्श पर बैठाता । फिर [illegible] के एक दर्जन बच्चों को ले आता और खुद [illegible] । वह अपने दोस्तों को अपनी महत्ता बताना चाहता था कि [illegible] मेहमान हूं ।

[illegible] दिन दोपहर में आठ दस वर्ष की मिन्दुन और उसकी उम्र की अन्य लड़कियों ने मेरे समक्ष प्रस्ताव रखा कि उनके पान्टुस सुनूं । जब कोई खास मेहमान आता तो मचानघर की युवतियों को ऐसा करते इन बच्चियों ने देखा था । परंतु उन्हें कभी भी बाहर के आदमी के सामने गाने का मौका नहीं मिला था । मैंने तुरंत प्रस्ताव स्वीकार कर लिया । स्वागतकक्ष के रूप में पेंघुलू का शयनकक्ष चुना गया । यह भी तय हुआ कि यह कार्यक्रम दोपहर को ही होना चाहिए क्योंकि अन्य समय में युवक युवतियां उनका मजाक उड़ायेंगे ।

मैं अपने कमरे में आया स्नान किया, कपड़े बदले और वापिस स्वागतकक्ष यानी पेंघुलू के शयनकक्ष में चला गया । एनॉय एक कोने में बैठी पान चबा रही थी । प्यार भरी मुस्कान के साथ उन बच्चियों को देख रही थी ।

जब मिन्दुन चाय का प्याला लेकर मेरे सामने बैठी तो मैं आश्चर्य चकित रह गया कि इन बच्चियों को मालूम था, मैं शराब नहीं पीता, इसलिए उन्होंने इस प्रसंग के लिए लुली से चाय बनवाई थी । गौण बातों को भी बिना चूके समारोह बहुत ही संजीदगी से मनाया गया । समारोह ज्यों ही समाप्त हुआ वे मेरी गोद में, बाहों में, कंधों पर, पीठ पर आ गयीं । मेरे आसपास करीब में जगह पाने के लिए उनमें भगदड़ मच गयी । इन बच्चियों के असीम प्यार को देखकर मैं अपने आंसुओं पर काबू नहीं पा सका । और न ही एनॉय ।

फिर हमारे वापिस लौटने का दिन आया । सरदार और मचानघर के तमाम स्त्री-पुरुष मिलाकर कोई सौ लोग हमारे साथ कॉपित तक आये । यहां से हमने बड़ी नाव ली । सारी तकलीफों, परेशानियों, के बावजूद सरदार और उसके लोगों ने अपने दोस्ताना व्यवहार से, अपने आदर भाव से अपनी प्रमाणिकता से और अपने आतिथ्य से मेरे दिल में एक ऐसी छाप छोड़ दी कि मुझे जाते वक्त लग रहा था कि मैं अपना ही गाँव छोड़ कर जा रहा हूँ ।

हमारी नाव ने किनारा छोड़ा और सरदार ने आँसू भरी आँखों से आवाज लगाई –'सलामत जालाई' सफर सलामत हो और उसके पीछे खड़ी इबान लोगों की भीड़ ने अपने भरे हुए गले से इस अभिवादन को दोहराया ।

बहुत ही भावुकता में मैं एक इबान गीत की उन पंक्तियों को, जो हमारी फिल्म की नायिका लुली बार बार गाती थी, याद किया—

''ज़िंदगी में ऐसे भी पल आते हैं,
जो कभी भुलाए नहीं जाते हैं ।''

66552